अंक-32 | वर्ष-2026

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्वतंत्रता दिवस समारोह-2026

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 32 | विक्रम संवत्-2083 | वर्ष -2026

संरक्षक

श्री एच. एस. नारंग

मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक

श्रीमती अमिता सिंह

प्रधान आयुक्त

प्रबंध संपादक

श्री महिपाल सिंह

अपर आयुक्त

संपादक

श्री बाबूलाल मीना

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यकारी संपादक दल

श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री संदीप मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती भावना कुमारी सैन, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	3–4
2.	संरक्षक की कलम से	5
3.	प्रधान सम्पादक की कलम से	6
4.	संदेश	7–14
5.	प्रबंध संपादक की कलम से	15
6.	संपादक की कलम से	16
7.	अधिकार और अहंकार	17–18
8.	धर्म एवं नैतिकता	18–19
9.	स्नेह–प्रेम	20
10.	''अन्त के कगार पर, एक शुरुआत सदा से ही बाकी है।''	21
11.	प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।	22
12.	घर–घर की कहानी	23
13.	बस सोचती ही रह गयी	24
14.	राजभाषा पखवाड़ा	25
15.	सर्तकता जागरूकता सप्ताह	26
16.	संविधान दिवस की प्रस्तावना वाचन	27
17.	स्वच्छ भारत दिवस	28
18.	जीएसटी के नौ गौरवशाली वर्ष	29
19.	एक्यूप्रेशर एवं स्वास्थ्य	30–33
20.	अधूरी	34–35
21.	मनुष्य को कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए	36
22.	लालसा	37
23.	स्वावलंबन	38
24.	पुस्तकालय का लोकार्पण	39
25.	उदयपुर में आयोजित साइक्लोथॉन	40
26.	जीएसटी पखवाड़ा 2025, अलवर	41
27.	अन्तर्राष्ट्रीय लोक दिवस, जयपुर	42
28.	पीड़ा	43–44
29.	देश सेवा : एक प्रयास सभी करें	45–46
30.	तमन्ना हमारी	47
31.	दोस्त	47
32.	हिंदी की वर्तमान दशा तथा दिशा	48–49
33.	एक नोटशीट की आत्मकथा	50–51
34.	स्वीकृति की आकांक्षा	52–53
35.	कर और कर्तव्य	54
36.	जीएसटी दिवस समारोह 2026, जयपुर	55–56
37.	सीमा शुल्क दिवस समारोह 2026	57–58
38.	हां अक्सर लेट हो जाती हूँ मैं	59
39.	मेरा विभाग : एक राष्ट्र, एक परिवार	60–62
40.	अनिश्चितता खूबसूरत है	63
41.	अब मेरी कहानी	64
42.	मंजिल जो मिल न सकी	65
43.	पहलगाम	65
44.	क्यूँ?	66
45.	माँ	67
46.	अगर मैं नहीं होता	68
47.	गणतंत्र दिवस 2026, जोधपुर	69
48.	गणतंत्र दिवस 2026, अलवर	70
49.	योग दिवस 2026, जोधपुर	71
50.	स्वच्छता पखवाड़ा, जयपुर	72
51.	आबू पर्वत : भारत की सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं का जीवित इतिहास	73–74
52.	नश्तर	75
53.	तुम मिले	76
54.	अपना–अपना अफसाना	76
55.	'नौकरी'	77
56.	मेरी सिक्किम यात्रा : प्रकृति की गोद में अविस्मरणीय क्षण	78–79
57.	डिजिटल डिटॉक्स : तकनीक की जीत...	80–81
58.	आइए, आपको राजस्थान की ऐतिहासिक सैर पर ले चलते हैं	82–84
59.	सामान्य कार्यालयीन टिप्पणियाँ (अंग्रेजी–हिन्दी)	85–86
60.	चित्रकारी	87–90
61.	उभरती प्रतिभा	91
62.	विभागीय प्रतिभा	92

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर जयपुर-ज़ोन, जयपुर की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 32वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी विभागीय पत्रिका की निरंतरता उसकी गुणवत्ता, उपयोगिता तथा उसके प्रति संगठन की प्रतिबद्धता का परिचायक होती है। 'राजप्रभा' ने अपने सतत प्रकाशन के माध्यम से विभागीय गतिविधियों, ज्ञान-विनिमय, राजभाषा हिंदी के संवर्धन तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को एक प्रभावी मंच प्रदान किया है। इस प्रकार की पत्रिकाएं ज्ञान के आदान-प्रदान, संस्थागत सीख तथा सकारात्मक कार्य-संस्कृति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादकीय मंडल के सदस्यों के समर्पण एवं परिश्रम की सराहना करता हूँ। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि राजप्रभा भविष्य में भी अपनी समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाते हुए विभागीय उत्कृष्टता तथा राजभाषा हिंदी के संवर्धन की भावना को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाती रहे।

(विवेक चतुर्वेदी)

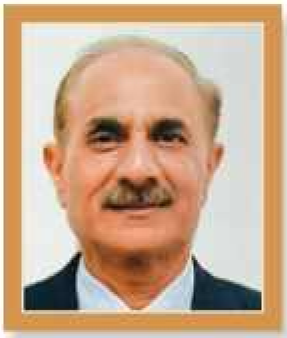

सत्यमेव जयते

सदस्य (जीएसटी)
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मुझे बेहद खुशी है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर–जयपुर की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का नवीन अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का उत्कृष्ट माध्यम है।

भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों एवं परंपराओं का देश है। इस विविधता में हिंदी एक ऐसी भाषा के रूप में स्थापित है जो व्यापक स्तर पर जनसंपर्क, संवाद एवं प्रशासनिक कार्यों को सुगम बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन एवं उसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। कार्यालयी कार्यों में हिंदी का बढ़ता प्रयोग प्रशासनिक दक्षता के साथ–साथ भाषा के विकास में भी योगदान देता है और विभागीय पत्रिकाएं इस दिशा में एक सराहनीय पहल हैं।

मैं 'राजप्रभा' के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल के समर्पण और परिश्रम की सराहना करता हूँ तथा पत्रिका की निरंतर उन्नति एवं सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(संजय मंगल)

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर ज़ोन,
जयपुर

संरक्षक की कलम से

इस ज़ोन की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 32वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। किसी भी संस्था की विभागीय पत्रिका उसके बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक जीवन का सशक्त प्रतिबिंब होती है। यह पत्रिका राजभाषा के संवर्धन, विभागीय ज्ञान के प्रसार तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है।

राजभाषा हिन्दी शासन और प्रशासन को अधिक सरल, सहज एवं जनोन्मुख बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। राजभाषा का प्रभावी प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व का निर्वहन नहीं, बल्कि प्रशासनिक दक्षता, संवाद की सहजता तथा नागरिकों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करने का भी सशक्त साधन है। मुझे प्रसन्नता है कि यह राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उसके व्यवहारिक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए यह ज़ोन निरंतर सार्थक प्रयास कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं उपयोगी सिद्ध होगा। यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने, सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने तथा विभागीय मूल्यों एवं उत्कृष्ट परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल के साथ-साथ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस नए अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(एच.एस. नारंग)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

प्रधान संपादक की कलम से

आपके हाथों में राजप्रभा का 32वाँ अंक सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष, गर्व का अनुभव हो रहा है। तीन दशकों से अधिक समय से निरंतर प्रकाशित हो रही यह विभागीय पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे विभाग की समृद्ध कार्य-संस्कृति, ज्ञान-परंपरा, राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक चेतना का सशक्त दस्तावेज है।

समय के साथ परिस्थितियाँ बदली हैं, कार्य-प्रणालियाँ बदली हैं, तकनीक ने नई गति प्रदान की है और प्रशासनिक दायित्वों का स्वरूप भी व्यापक हुआ है किंतु 'राजप्रभा' ने सदैव अपने मूल उद्देश्य-ज्ञान के आदान-प्रदान, रचनात्मक अभिव्यक्ति और राजभाषा हिंदी के संवर्धन को अक्षुण्ण बनाए रखा है। यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।यह पत्रिका उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सामूहिक सृजनशीलता का परिणाम है, जिन्होंने अपनी व्यस्त प्रशासनिक दिनचर्या के बीच समय निकालकर अपने विचार, अनुभव और रचनाएँ साझा की। उनकी सहभागिता ही 'राजप्रभा' की वास्तविक शक्ति है। हमें विश्वास है कि आने वाले वर्षों में और अधिक अधिकारी एवं कर्मचारी इस ज्ञान-यज्ञ में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।

इस अंक में विभागीय गतिविधियों, राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन, कर प्रशासन के विविध आयामों, समसामयिक विषयों तथा साहित्यिक रचनाओं का संतुलित समावेश किया गया है। आशा है कि यह सामग्री न केवल आपके ज्ञान में वृद्धि करेगी, बल्कि आपको नए विचारों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी प्रेरित करेगी। इस अवसर पर मैं पत्रिका के सभी लेखकों, संपादकीय मंडल के सदस्यों, सहयोगी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उन सभी शुभचिंतकों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग, मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन से 'राजप्रभा' का यह अंक साकार हो सका है।

आइए, हम सभी मिलकर इस गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाएँ और 'राजप्रभा' को ज्ञान, सृजन और राजभाषा हिंदी के सशक्त माध्यम के रूप में निरंतर समृद्ध करते रहें।

आपके सुझाव एवं रचनात्मक सहयोग का सदैव स्वागत रहेगा।

अमिता सिंह
(अमिता सिंह)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जोधपुर

संदेश

विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 32वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं संपादक मंडल तथा समस्त सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

किसी भी विभाग की पत्रिका केवल सूचनाओं का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह संगठन की कार्यसंस्कृति, रचनात्मकता, नवाचार एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि का सशक्त दर्पण भी होती है। राजप्रभा ने अपने पूर्ववर्ती अंकों के माध्यम से हिंदी भाषा के संवर्धन, ज्ञान-विनिमय तथा विभागीय उपलब्धियों के प्रभावी दस्तावेजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित लेख, अनुभव, विचार एवं रचनाएँ पाठकों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उन्हें अपने दायित्वों के प्रति और अधिक प्रेरित करेंगी। यह पत्रिका हिंदी के राजभाषा स्वरूप को सुदृढ़ करने तथा विभाग में सृजनात्मक वातावरण को प्रोत्साहित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, सभी लेखकगण तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करता हूँ और पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(डॉ. जीतेश नागोरी)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
उदयपुर

संदेश

विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' के 32वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि 'राजप्रभा' का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद एवं उपयोगी सिद्ध होगा तथा राजभाषा हिन्दी के प्रभावी प्रयोग को नई दिशा प्रदान करेगा। साथ ही, यह सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विभागीय उत्कृष्टता, नवाचार और रचनात्मक चिंतन के प्रति निरंतर प्रेरित करेगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादकीय मंडल के समर्पण, परिश्रम एवं सृजनशीलता की प्रशंसा करता हूँ तथा राजप्रभा की निरंतर प्रगति, लोकप्रियता एवं सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सादर शुभकामनाओं सहित।

(गौरव सिन्हा)

सत्यमेव जयते

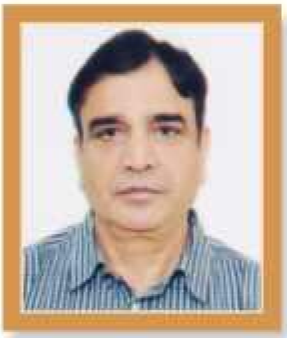

आयुक्त,
सीमा शुल्क (निवारक) **आयुक्तालय**, जोधपुर,
मुख्यालय–जयपुर

संदेश

किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति केवल उसके दायित्वों और उपलब्धियों में ही नहीं, बल्कि उसके लोगों के विचारों, संवेदनाओं और सृजनशीलता में भी निहित होती है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारी विभागीय हिंदी पत्रिका ''राजप्रभा'' का 32वाँ अंक एक बार फिर हम सबके बीच उपस्थित है। 'प्रभा' का अर्थ है प्रकाश–ऐसा प्रकाश जो केवल मार्ग ही नहीं दिखाता, बल्कि नई संभावनाओं को भी आलोकित करता है। ''राजप्रभा'' भी इसी भावना का प्रतीक है। यह केवल लेखों और रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि विचारों, अनुभवों और सृजनशीलता का वह प्रकाश है जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर कहीं विचारों की गंभीरता है, कहीं अनुभवों की परिपक्वता, तो कहीं शब्दों के माध्यम से जीवन को देखने का एक नया दृष्टिकोण।

भाषा का वास्तविक सौंदर्य तभी प्रकट होता है, जब वह औपचारिकता की सीमाओं से बढ़कर लोगों को जोड़ने का माध्यम बन जाए। जब कार्य और सृजन एक–दूसरे के पूरक बन जाते हैं, तब किसी भी संस्था का वातावरण अधिक जीवंत, संवेदनशील और समावेशी बनता है। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे विभाग में यह सकारात्मक परंपरा निरंतर विकसित हो रही है। मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा ''राजप्रभा'' की निरंतर प्रगति और सफलता की कामना करता हूँ।

(आर.के.चंदन)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

संदेश

विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' से जुड़ने का मुझे जो सुखद अवसर मिला है उससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हिंदी भाषा न केवल राष्ट्रीय एकता को संपोषित करती है बल्कि यह विचारों के आदान–प्रदान का भी एक सशक्त माध्यम है।

हिंदी बहुत ही सहज एवं सरल भाषा है तथा विभागीय पत्र–पत्रिकाएं विचारों और अनुभवों के संप्रेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हिंदी भाषा न केवल साहित्य व प्रशासन की भाषा है बल्कि यह विज्ञान, तकनीकी तथा प्रत्येक विषय एवं विधा को अभिव्यक्त तथा व्याख्यायित करने में पूर्ण सक्षम है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका में समाहित किए गए लेख, कहानी, कविताओं आदि से पाठकगण अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हरिनारायण मीना

(हरि नारायण मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय,जयपुर

संदेश

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर की विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' के नवीन अंक के प्रकाशन से जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। राजभाषा हिन्दी हमारे प्रशासनिक कार्यों को अधिक सरल, प्रभावी एवं जनसुलभ बनाने का एक सशक्त माध्यम है।

'राजप्रभा' केवल एक विभागीय पत्रिका नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुभव, नवाचार एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति का ऐसा मंच है, जो अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचार, अनुभव तथा साहित्यिक प्रतिभा को साझा करने का अवसर प्रदान करता है। राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व होने के साथ साथ नैतिक दायित्व भी है और इस दायित्व को पूरा करने में पत्रिका का प्रकाशन करना एक प्रशंसनीय कार्य है।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल, सभी रचनाकारों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई प्रेषित करती हूँ।

(सुजाता प्रियदर्शिनी)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय, जोधपुर

संदेश

'राजप्रभा' पत्रिका विभागीय परिवार की सामूहिक सोच, अनुभव एवं सृजनशीलता को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। पत्रिका का प्रत्येक अंक नए विचारों और प्रेरणादायी सामग्री के साथ पाठकों को जोड़ता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। हिंदी हमारी राजभाषा है तथा सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करना हमारा संवैधानिक कर्त्तव्य एवं दायित्व भी है।

हिंदी में कार्य करने से जहां राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार में अभिवृद्धि होगी वहीं हमारे राष्ट्र का गौरव बढ़ेगा साथ ही राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने में एक बहुत बड़ा योगदान मिलेगा। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम हिंदी को अपने कार्यालयीन कार्य-व्यवहार की प्रमुख भाषा के रूप में अधिकाधिक अपनाएँ तथा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के माध्यम से उसके प्रचार-प्रसार को सुदृढ़ करते हुए हिंदी को अपेक्षित सम्मान एवं प्रतिष्ठा दिलाने में अपना सक्रिय योगदान दें।

'राजप्रभा' पत्रिका के प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल एवं इससे जुड़े समस्त सदस्यों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुरेश मुकेरिया)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय -जयपुर

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि इस विभाग की हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 32वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । विभागीय हिंदी पत्रिकाएं केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, अपितु हमारे राजभाषा दायित्वों, विभागीय उपलब्धियों, नवाचारों एवं अनुभवों को साझा करने का एक सशक्त मंच भी हैं।

यह बहुत अच्छी बात है कि वस्तु एवं सेवा कर विभाग के अधिकारी, कर्मचारी एवं उनके परिवारगण साहित्य, भाषा और सृजनात्मक लेखन के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए हिंदी के संवर्धन में सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका ज्ञान-विनिमय, प्रेरणा और विभागीय संवाद को सुदृढ़ बनाएगी तथा राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को नई दिशा प्रदान करेगी। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(डॉ.रविन्द्र कुमार)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

संदेश

यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है कि मुझे इस ज़ोन की विभागीय हिंदी पत्रिका के साथ जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। किसी भी विभागीय पत्रिका का उद्देश्य केवल सूचनाओं का संकलन नहीं होता, बल्कि यह संस्थान की कार्यसंस्कृति, अनुभवों, उपलब्धियों तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है।

मुझे विश्वास है कि इस अंक में सम्मिलित लेख, विचार एवं रचनाएँ न केवल ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होंगी, बल्कि विभागीय कार्यों में नवाचार एवं उत्कृष्टता को भी प्रोत्साहित करेंगी। साथ ही यह पत्रिका हिंदी भाषा के संवर्धन तथा राजभाषा के प्रभावी प्रयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाएगी।

मैं इस अवसर पर संपादक मंडल, लेखकों एवं सभी सहयोगी अधिकारियों–कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।

आशुतोष

(आशुतोष)

सत्यमेव जयते

अपर आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
जयपुर

प्रबंध संपादक की कलम से

यह हर्ष का विषय है कि विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' का 32वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह केवल एक वार्षिक प्रकाशन नहीं, बल्कि पिछले 32 वर्षों से निरंतर प्रवाहित होती उस ज्ञान-परंपरा का सशक्त प्रतीक है, जिसने विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक, बौद्धिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को एक सार्थक मंच प्रदान किया है।

प्रबंध सम्पादक के रूप में यह अनुभव अत्यंत संतोषप्रद है कि प्रत्येक अंक के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों से उत्साहपूर्वक प्राप्त होने वाली रचनाएँ इस पत्रिका को निरंतर समृद्ध बना रही हैं। यह सहभागिता केवल लेखन तक सीमित नहीं है, बल्कि विभाग में ज्ञान-साझाकरण, सकारात्मक संवाद और रचनात्मक कार्यसंस्कृति को भी सुदृढ़ करती है। इस अंक के माध्यम से विभागीय गतिविधियों, कर प्रशासन के समसामयिक विषयों, राजभाषा संबंधी लेखों, प्रेरक संस्मरणों तथा साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से पाठकों को एक संतुलित और समृद्ध सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

'राजप्रभा' की 32 वर्षों की यह गौरवशाली यात्रा अनेक अधिकारियों, कर्मचारियों, लेखकों और संपादकों के समर्पण, सहयोग तथा सतत प्रयासों का परिणाम है। हम उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिनके योगदान ने इस पत्रिका की गरिमा और निरंतरता को बनाए रखा है। मुझे विश्वास है कि राजप्रभा का यह अंक आपके ज्ञानवर्धन के साथ-साथ आपको अपने अनुभव, विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति को शब्द देने के लिए भी प्रेरित करेगा। आपकी सक्रिय सहभागिता और बहुमूल्य सुझाव ही इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाएँगे।

अंत में, मैं सभी सम्मानित लेखकों, संपादकीय मंडल, सहयोगी अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उन सभी शुभचिंतकों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से यह अंक साकार हो सका। आशा है कि इस पत्रिका को बेहतर और उपयोगी बनाने हेतु आपके बहुमूल्य सुझाव हमें निरंतर प्राप्त होते रहेंगे।

(महिपाल सिंह)

सत्यमेव जयते

सहायक निदेशक (रा. भा.)
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

शब्दों का अपना एक संसार होता है। वे कभी अनुभवों को साझा करते हैं, कभी उपलब्धियों को संजोते हैं और कभी नई सोच को जन्म देते हैं। इसी भावना के साथ राजप्रभा का यह नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका केवल कुछ पृष्ठों का संग्रह नहीं, इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में हमारे विभाग की गतिविधियों, उपलब्धियों, कार्य अनुभवों तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रतिभा और सृजनात्मक सोच की झलक देखने को मिलती है। यह एक ऐसा मंच है, जहाँ हम अपने विचारों, अनुभवों और ज्ञान को एक-दूसरे के साथ साझा कर सकते हैं तथा कार्यक्षेत्र में प्राप्त सीख और उपलब्धियों को सभी तक पहुँचा सकते हैं।

इस अंक को समृद्ध एवं सारगर्भित बनाने में जिन सभी साथियों ने अपने लेखों, रचनाओं, सुझावों एवं सक्रिय सहयोग के माध्यम से योगदान दिया है, उनके प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही, विभाग के सभी वरिष्ठ अधिकारियों के सतत मार्गदर्शन, प्रेरणादायी नेतृत्व एवं प्रोत्साहन के लिए भी मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

हमारा निरंतर प्रयास रहेगा कि यह पत्रिका केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान का माध्यम न रहकर ज्ञानवर्धन, प्रेरणा और आपसी संवाद का एक प्रभावी मंच बने। आपकी सहभागिता, सुझाव और मार्गदर्शन हमें आगे भी बेहतर प्रयास करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे। आप सभी के निरंतर सहयोग, विश्वास, स्नेह एवं शुभकामनाओं की अपेक्षा के साथ, मैं 'राजप्रभा' के इस नवीन अंक के सफल प्रकाशन पर सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह अंक सभी पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा।

आप सभी के सहयोग एवं शुभकामनाओं की अपेक्षा के साथ।

(बाबू लाल मीना)

अधिकार और अहंकार

आर. के. चंदन, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु.-जयपुर

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ''अज्ञेय'' की एक कहानी से प्रेरित हो कर लिखने की चेष्टा कर रहा हूँ। अज्ञेय अपनी कहानी – 'सेव और देव' में एक प्रोफेसर साहब की मनः स्थिति का वर्णन करते हैं। उनके विचारों और आचरण का आकलन करते हैं। प्रोफेसर साहब के उपदेशों और कर्मों का, कथनी और करनी का चित्रण करते हैं।

सेव और देव कहानी का सारांश यह है कि इतिहास के एक प्रोफेसर गजानंन पंडित पुरातत्व में भी गहरी रूचि रखते हैं। एक बार वे कुल्लू-मनाली की पहाड़ियों की सैर करते हुए एक प्राचीन भग्न मन्दिर की पदयात्रा पर थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक बालक सेव के बगीचे से सेव चुरा रहा था। साहब का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुँचा। उसका यह घोर निंदनीय कार्य सम्पूर्ण आर्य सभ्यता, ग्रामीण व पहाड़ी आंचलिक सरलता एवं प्रोफेसर साहब के उच्च विचारों के विपरीत था। एक-दो तमाचे जमाए, बालक से सेव लेकर फेंक दिये जंगल की घास में सड़ने के लिए। सड़े तो सड़े पर एक चोर को फल नहीं फटकार मिलनी चाहिए, सो वह देकर चल दिए आगे।

भग्न प्राचीन मंदिर में प्रवेश के बाद जर्जर हुए मन्दिर में वे देवी की सुंदर मूर्ति देखते हैं जिसकी पूजा पाठ तो वर्षों से नहीं हुई और कीड़ों मकोड़ों को परिक्रमा करते देख उनका मन विचलित हो उठा। विचारों के काफी उतार चढ़ाव और मनोविश्लेषण के बाद वे सुन्दर मूर्ति को अपने साथ ले कर चल पड़ते हैं ताकि उसको यथोचित सम्मान मिल सके।

बालक का दुर्भाग्य, प्रोफेसर साहेब की वापसी में फिर सेव चुराते हुए पकड़ा गया, अब तो उनका गुस्सा सातवें आसमान को भी पार कर गया... डांट डपट, तमाचे वगैरह...... दुष्ट कहीं का फिर 'सेव' चुरा रहा है। अकस्मात बिजली की तरह यह विचार कौंधा कि तुम क्या कर रहे हो...देव' चुरा रहे हो।। चाहे कितने भी तर्क दे दो कि वहां टूटे-जर्जर मंदिर में देवी की पूजा नहीं, सार-संभाल नहीं लेकिन तुम 'देव' तो चुरा ही रहे हो।।

प्रोफेसर साहब को अपनी गलती का अहसास हो जाता है, उल्टे पाँव वापस जाकर मूर्ति उसी भग्न प्राचीन मन्दिर में स्थापित कर संतोष की भावना के साथ वापस लौटते हैं।

जीवन के सफर में हम सब कहीं न कहीं, Professor न हो तो भी Professional तो हैं ही। हम अपने से Junior (सेव और देव का बालक) को देखते रहते हैं कि कहीं वह सेव तो नहीं चुरा रहा है, उसे सेव चुराना भी नहीं चाहिए और चुराते हुए पकड़ा जाए तो उपयुक्त दण्ड भी मिलना चाहिए।

लेकिन, प्रश्न यह है कि क्या हम अपने आप से कभी पूछते भी हैं कि नहीं कि तुम स्वयं कहीं देव तो चुराकर नहीं ले जा रहे?

जाने-अनजाने में यह भाव इतना गहरा हो जाता है कि गलती हमेशा बालक करता है, प्रोफेसर नहीं; छोटा करता है, बड़ा नहीं।

इस अवांछनीय भाव को, अधिकार संग अहंकार को दो अन्य दृष्टांत द्वारा यों व्यक्त किया जा सकता है।

(1)

एक बच्चा होल्डर धारक कलम (जिसमें Ink barrel नहीं होता) निब को दवात में डुबोकर आँगन में बैठा अपना गृह कार्य (Home Work) कर रहा था। पिताश्री कहीं से चले आ रहे थे, उन्होंने स्याही की खुली दवात नहीं देखी। ठोकर से सारी स्याही फर्श पर बिखर गई। छींटे आस-पास पड़े सामान पर लगे, चाँटे बेटे के गाल पर लगे ये कोई पढ़ने लिखने की जगह है? कहीं उपयुक्त जगह पर बैठता तो ये स्याही की दवात क्यों गिरती? नालायक कहीं का। और कुछ दिनों बाद

का दृश्य vice versa था। आँगन में अध्ययन पिता श्री कर रहे थे। बच्चे के पैर से दवात को ठोकर लगी, स्याही बिखर गई। छींटे आस-पास पड़े सामान पर ही लगे, चाँटे भी बच्चे के गाल पर लगे अंधा है क्या? आँखे कहाँ फाड़ रहा था? ढंग से नीचे देखकर चलता तो ये स्याही की दवात क्यों गिरती? नालायक कहीं का।

(2)

एक और घटना पर गौर कीजिए। राय बहादुर साहब का बंगला बन रहा था। एक दिन सुबह-सुबह साहब कार्य प्रगति देखने पहुँच गए। प्रगति ठीक थी, साथ ही एक मजदूर लड़का प्रसन्नचित्त सम्पूर्ण भाव से काम कर रहा था मानो उसी का बंगला बन रहा हो। निर्माण सामग्री... ईंटे वगैरह व्यवस्थित ढंग से रख रहा था, वह मजदूरी के निश्चित समय से पहले आकर काम कर रहा था, जबकि अन्य मजदूर मिस्त्री अभी आने बाकी थे। राय बहादूर साहब ने प्रसन्न होकर पूछा तुतु तुम क. कब से का.... म कर रहे हो...? लड़के ने जवाब दिया सा..ह..ब म... म. मैं तो प.. पहले दिन स... से. ही कर रहा हूँ। साहब तनिक गुस्सा होते हुए .... लेकिन... ऐसे बात क्यों कर..र... रहा है? लड़का-सा... साहब म.म.मै. तो ऐसे ही ब.. आत करता हूँ। अब क्या बचा, एक निरीह मजदूर लड़के की इतनी हिम्मत... राय बहादूर साहब से ऐसे बात करे। लगे बेंत चलने, मारा गया निरीह प्राणी, रोते हुए, हाथ पाँव जोड़ते हुए, सिसकियाँ भरते हुए पुकार कर रहा था.... सा... अहब. बे बेकसूर को...क.. क्यों मार रहे हो? राय बहादुर साहब के वार-प्रहार और तेज होते गए। फिर एक वृद्ध ने आकर रोका हुजूर, आप जैसे हुक्म फरमा रहे हो, ये गरीब भी ऐसे ही अपने बाप को रोता है, छोड़ दीजिए, माफ कर दीजिए। असल में राय बहादुर साहब और मजदूर दोनों बोलते समय हकलाते थे, लेकिन सजा अधिकार विहीन ही को क्यों, बेकसूर को क्यों, बिना कारण जाने क्यों.. सैंकड़ों सवालों का क्या कोई उत्तर है?

सेव और देव तथा उक्त दृष्टांत यह बताते हैं कि प्रायः अधिकार के साथ अहंकार पाया जाता है। गलती/भूल/चूक कोई भी कर सकता है; किसी से भी हो सकती है। प्रताड़ना और दण्ड का मापदण्ड क्रूर क्यों है, इसे बदलना चाहिए। सिर्फ और सिर्फ बेकसूर या कम कसूरवार को सजा इसलिए मिले कि अधिकार किसी और के पास है, चाहे वह ज्यादा कसूरवार ही क्यों न हो क्योंकि उसके अहंकार पर कोई नियंत्रण नहीं है।

मैं समझता हूँ कि प्रोफेसर गजानंन पंडित की तरह हम भी अगर आत्म विवेचन करते रहें कि मैं कहीं देव चुराकर तो नहीं ले जा रहा हूँ और ऐसा आत्म चिन्तन निरंतर हो, सेव चुराने वाले को तमाचे लगाने से पहले हो तो, व्यक्ति एवं समाज दोनों में अच्छा सुधार हो सकता है।

कानून और नैतिक मूल्यों के बारे में क्या फर्क है, यह महान दार्शनिक इमेन्युअल कांट ने इस तरह से बताया है कि कानून में गलत करना अपराध है तो नैतिकता में गलत सोचना मात्र ही अपराध है। अगर हमारी सोच, हमारे विचार सही हो तो दूसरे का दर्द समझ में आएगा। फिर, अधिकार संग अहंकार नहीं रहेगा बल्कि न्याय की परिकल्पना साकार होगी।

धर्म एवं नैतिकता

यह सच्ची घटना मेरे प्रिय मित्र के साथ 1994 में मुंबई कस्टम में घटी थी। अप्रैल, 1992 से एक Export promotional Scheme लागू हुई थी, DEEC Duty Exemption Entitlement Certificate जो Quantity based (QABAL) भी थी तथा Value Based (VABAL) भी थी। मोटे तौर पर, उसमें निर्यात होने वाले भारत में निर्मित finished Goods में लगने वाले inputs को सीमा शुल्क से मुक्ति दी गई थी। जैसे कोई प्लास्टिक के Kitchen Ware Export करता था, तो उसे संबंधित HDPE, LDPE, PP etc... बिना सीमा शुल्क के आयात करने की सुविधा प्राप्त थी।

यदि आयात करने से पहले निर्यात कर दिया जाता तो DEEC को Transferable भी किया जा सकता था। उस DEEC को खुले बाजार में Demand एवं Supply से निर्धारित Premium पर खरीदा-बेचा जाता था।

DEEC का Premium किसी भी माल पर लगने वाले सीमा शुल्क से प्रायः कम ही होता था। अतः Traders लोग DEEC में आयात करना ज्यादा पसंद करते थे। उन दिनों प्लास्टिक के कच्चे माल जैसे LDPE, HDPE, Poly Propylene आदि की अच्छी मांग रहती थी। भारत से मछली का निर्यात सदा से होता रहा है। मछली पकड़ने वाले जाल (Fish Net) प्लास्टिक के बने होते हैं। अतः इस तरह की DEEC में प्लास्टिक के कच्चे माल जैसे HDPE, LDPE, PP... Duty Free clear होते रहते थे जिनमें मछली का निर्यात होता था।

प्लास्टिक के एक आयातक सज्जन पुरुष थे। वे Fish Net वाली DEEC कभी नहीं खरीदते थे, क्योंकि उनका यह मानना था कि मछली के एक्सपोर्ट में जीव हत्या शामिल है। उस जीव हत्या के लिए Fish Net को ही वे सज्जन आयातक मुख्यतः ज़िम्मेदार मानते थे। अतः वे यदा-कदा व्यवसाय में घाटा सहन कर लेते थे लेकिन Fish Net वाली DEEC कभी use नहीं करते थे। कौन कहता है कि धंधे में धर्म का निभना मुश्किल है। वे सज्जन आयातक धंधे में भी धर्म का निर्वाह निर्बाध रूप से करते थे। इसी कारण Custom विभाग में उनका प्रायः सभी लोग विशेष आदर करते थे तथा उनके Clearance के कार्य को वरीयता भी देते थे। ऐसा मेरे मित्र ने बताया था।

फिर एक दिन... वह सज्जन आयातक भी Fish Net वाली DEEC लेकर आ गए। मेरे मित्र को बड़ी निराशा हुई। आखिर धंधे ने धर्म को अपने फंदे में ले ही लिया। खैर जो भी हो... सज्जन आयातक का धार्मिक आचरण ही तो उसे ऐसा करने से रोक रहा था, कानून की तो कोई समस्या थी नहीं। फिर भी, Clearance करने से पहले, मेरे मित्र ने उस सज्जन आयातक से भारी मन से पूछा- ''तो आखिर आप भी हिंसा अहिंसा, धर्म-अधर्म का भेद छोड़ कर Fish Net वाली DEEC ले ही आये।'' उन्होंने धीरे से, पर तुरंत जवाब दिया ''इसमें हिंसा है ही नहीं साहब, पूरा धर्म है। ये DEEC Forged है, इसमें एक्सपोर्ट हुआ ही नहीं है। और कोई मछली मरी भी नहीं है।''

मेरा मित्र अवाक रह गया, सन्न हो गया, इससे पहले वह कुछ बोल पाते, सज्जन आयातक ने फिर बताया- ''साहब चूंकि यह Forged DEEC है, अतः मिल भी काफी सस्ते में गई है। मुनाफा भी खूब होगा।'' मेरा मित्र वह DEEC देखकर व आयातक की बातें सुनकर सिर पकड़ कर बैठ गया। बोला ''जब इसमें एक्सपोर्ट हुआ ही नहीं तब तो यह सीधा-सीधा Fraud है, Illegal है, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?''

सज्जन आयातक ''साहब मैंने Fraud थोड़े ही किया है। मैंने तो यह DEEC Open Market में खरीदी है।''

मेरे मित्र - ''आप तो मछली भी नहीं पकड़ते हो, फिर Genuine DEEC क्यों नहीं ले लेते हो।''

सज्जन आयातक - ''नहीं साहब, उसमें मछली पकड़ी जाती है, पकड़े भले ही कोई, मैं अधर्म का भागीदार नहीं बनूँगा।''

मेरे मित्र - ''तो फिर उस fraud में...''

सज्जन आयातक बात को बीच में ही काटते हुए बोले- ''धर्म में हिंसा तो हुई नहीं, बाजार में सब कमाते हैं, मौका मिला है, थोड़ा मैं भी कमा लेता हूँ।''

मेरे मित्र - ''पर नैतिकता, Morality का कोई मोल नहीं...''

सज्जन आयातक - ''देखो साहब, मैं तो DEEC का Genuine एवं Bonafide purchaser हूँ, मैंने तो fraud किया नहीं और एक्सपोर्ट Bogus है तो मछली भी मरी नहीं... अब इस नैतिकता से हमें क्या लेना देना...''

लाख कोशिशों के बावजूद भी मेरा मित्र उन सज्जन आयातक का नैतिकता से इसलिए परिचय नहीं करा सका, क्योंकि उनके बीच में धर्म ढाल बन कर खड़ा था।

खैर, मित्र जब उस DEEC में Clearance नहीं करके उस DEEC के विरूद्ध Case Register करने लगा तो उन सज्जन आयातक ने तुरंत अपने Licence Broker से बात करके अपने Premium के पैसे वापस ले लिए। इस तरह, धर्म तो पहले ही सुरक्षित था, उन्होंने अपना धंधा भी सुरक्षित कर लिया।

अब अंत में रह गई अकेली बेचारी नैतिकता, जिसे प्रायः न धंधे में साथ मिलता है और न ही धर्म में, क्योंकि धर्म सब का अपना-अपना होता है, हर धर्म का अपना घर भी होता है, चाहे नाम कोई भी हो.... और नैतिकता... इसका कोई पता ठिकाना ही नहीं;

इसका अपना कोई भी तो पूजा घर नहीं... इसीलिए कभी कभार ही मिल पाती है... यों ही आवारगी में... चलते-चलते।

स्नेह-प्रेम

दो बहनों में मासी (यही उच्चारण है माँ की बहिन के लिए हमारे यहाँ) मेरी माँ से लगभग 10-11 वर्ष बड़ी थीं। यह घटना माँ के बचपन की है, जो 1930 के दशक के शुरुआती वर्षों में घटी होगी।

अगर हम आपको उस दौर में ले जाएँ तो पाएँगे कि तब कोई फोटो इत्यादि होना, वह भी छोटे से गाँव उदयरामसर में, अनहोनी बात थी। मेरी मासी की शादी हुई तो उस समय माँ 6-7 वर्ष की रही होगी। जब मासी को ससुराल जाना होता था तो माँ को यह बात अति भावुक व व्याकुल कर देती थी कि अब बाई (बीकानेर व आस-पास के इलाकों में आज भी बड़ी बहिन को बाई कहा जाता है) ससुराल चली जाएगी और कई दिनों महीनों मिलना नहीं होगा। उस विरह काल में अपनी बाई की छवि जो मन में तो अनवरत है, किस प्रतिबिंब से बाहर देखा करेगी।

मेरा ननिहाल यानि उदयरामसर गाँव पूरी तरह रेगिस्तान में है तथा वहाँ के Sand Dunes काफी प्रसिद्ध है गाँवों में उस समय, लगभग घरों के दोनों तरफ, आगे व पीछे, काफी खुली जगह प्रांगण के रूप में होती थी। माँ अपनी सहेलियों के साथ घर के पीछे वाले प्रांगण को एकदम साफ कर लेती, ताकि कोई निशान बचा न रहे। उसके बाद अपनी बाई के पाँवों के निशान उन्हें नंगे पांव चलवाकर, उस साफ-उजली रेत पर ले लेते थे। रेगिस्तान में रेतीली हवाओं के साथ उस रेत पर पावों के निशान मिट न जाएँ, इसलिए उन प्रेम प्रतिबिंबों को पुराने मिट्टी के बर्तन, सूखे मतीरे की खुपरी (Dried hard shell of watermelon) आदि से ढक दिए जाते थे। जब तक बाई वापस ससुराल से आ न जाए, वे प्रतिबिंब बाई से स्नेह-प्रेम का प्रतिनिधित्व करते थे। जब भी जी चाहा, बाई से मिलने का, मिलन उन स्नेह-प्रेम के प्रतिबिंबों के माध्यम से तुरंत हो जाता था। स्नेह प्रेम मन में हो तो प्रतिबिंब रेगिस्तान की ठंडी तपती रेत में भी बने रहेंगे।

अब नए युग में जब व्हाट्स ऐप, फेसबुक, ट्वीटर इत्यादि माध्यमों की जितनी भरमार है, शायद स्नेह-प्रेम उतना ही कम है। दिखावा इतना ज्यादा है कि सच्चे प्रेम प्रतीकों को मिलना मुश्किल है। अपनी ही पत्नी को जब तक फेसबुक, व्हाट्स ऐप ग्रुप आदि में जन्मदिन, सालगिरह आदि की बधाई न दे दी जाए, 'लाइक' न कर दिया जाये, स्नेह-प्रेम की अवहेलना माना जाता है। प्रदर्शन जरूरी है, जब तक कि उसके होने के लिए कोई दर्शन हो, अन्यथा यह एक व्यर्थ व औपचारिक प्रयत्न है।

अब न माँ है, न मासी है, बस उनकी चंद ऐसी यादें बाकी है। एक बार मेरे मौसेरे भाई साहब (श्री अर्जुन मेघवाल माननीय राज्यमंत्री, भारत सरकार) ने कहा था कि मेरी माँ तो स्वयं स्नेह-प्रेम का सम्पूर्ण प्रतीक थी, प्रतिबिंब थी, अब यही सब मैं अपनी मासी के लिए भी कहकर आपसे संदर्भ में विदा लेता हूँ, इस आशा के साथ कि आपके जीवन में भी सच्चे प्रेम-प्रतीक हमेशा बने रहें।

(2)

मेरे चाचा, पिता श्री से लगभग 11-12 वर्ष छोटे है। पिताजी भारतीय रेलवे वर्कशॉप, बीकानेर में काम करते थे तथा चाचाजी घर-खेत का काम देखा करते थे।

यह घटना 1960 के शुरूआती दौर के किसी दिसंबर-जनवरी में घटी होगी। उस दिन पिताजी शाम की शिफ्ट पर थे और घर लौटते-लौटते रात्रि के डेढ़-दो बज गये होंगे। किसी कारणवश उस दिन शाम का टिफिन उन्हें पहुँचा नहीं पाये थे। घर आने के बाद हाथ मुँह धो करके भोजन करने बैठे। बातों में माँ ने बताया कि शाम को किसी काम से चाचा खेत से आए हुए है और वे दूसरी साल (बड़े कमरों को साल कहा जाता है) में सो रहे है। जब यह सुना, उस समय पिताजी कौर थाली से तो उठा चुके थे, पर मुख तक ले जाना बाकी था। जैसे ही सुना कि छोटा भाई घर आया हुआ है, उस कौर को थाली में वापस रखा, सीधे उस कमरे में गए जहाँ चाचाजी सो रहे थे। चूँकि सर्दियाँ थी, उनके चेहरे से रज़ाई हटाई, मुँह पर प्यार का हाथ फेरा, पुनः रज्जाई ओढ़ा कर वापस आ गये। बाकी खाना उसके बाद खाया। न कोई शब्द थे, न कोई देखनेवाला था, बस एक स्नेह-प्यार अनवरत था, जो उस अंधेरे व घनघोर सर्दी से कहीं गहरा था। आज पिता श्री नहीं है, लेकिन वह प्यार और व्यवहार स्मृति-वन में सदा हरा-भरा रहेगा।

"अन्त के कगार पर, एक शुरुआत सदा से ही बाकी है।"

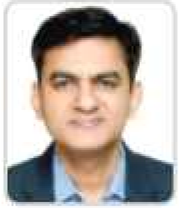

राजेश परनामी, सहायक आयुक्त, का.मु.आ., केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर

बहुत कुछ पढ़ लिया, सुन लिया
लेकिन जाने क्यों ऐसा लगता है कि
कुछ अनकहे, ना लिखे शब्द
अभी भी कहना लिखना
बाकी है।

बहुत लम्बे रास्ते चले,
मीलों सफर किया
लेकिन जाने क्यों ऐसा लगता है कि
कुछ पड़ाव, मंजिलें
अभी भी पगों का चलना
बाकी है।

अन्त के कगार पर
एक शुरुआत सदा से ही बाकी है।

रिश्ते जी लिये,
हँस लिये, रो लिये
लेकिन जाने क्यों ऐसा लगता है कि
कुछ ठहाके, आँसू
अभी भी भावों का कहना
बाकी है।

सत्य को तोला
झूठ को मापा
लेकिन जाने क्यों ऐसा लगता है कि
कुछ यथार्थ, कल्पनाएँ
अभी भी अज्ञात का ज्ञान
बाकी है।

अन्त के कगार पर
एक शुरुआत सदा से ही बाकी है ।

अनुभवों से भरा
स्मृतियों को सहेजा
लेकिन जाने क्यों ऐसा लगता है कि
कुछ देखना, समझना बूझना
अभी भी सदियों को समेटना
बाकी है।

जीवन को जिया
सुख दुख बाँटा
लेकिन जाने क्यों ऐसा लगता है कि
कुछ जीवन्तता, लेखा
अभी भी जीवन के मर्म को समझना
बाकी है।

लगता है कि
जीवन मृत्यु के मध्य
इस छूटे हुए छोटे से स्थान में
अभी भी बहुत कुछ बाकी है ।

अन्त के कगार पर
एक शुरुआत सदा से ही बाकी है।

प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

अनवरत दौड़ते, यंत्रवत बन गए,
इस आदमी को
पहली बारिश, सौंधी महक, मुस्कराते पत्ते,
प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

साँस लेने की फुर्सत नहीं, कहते
इस आदमी को
हवाओं की ताजगी, बूंदों की टिपटिप,
प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

जम्हाई लेते रिश्ते, अंदर अकेले
इस आदमी को
सम्बन्धों की गर्माहट, अंतरंगता
प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

शोर में डूबे, असहज स्वरों
इस आदमी को
उस हल्की सी आहट, पदचाप
प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

बहुतेरे पर संवेदनहीन संवाद,
इस आदमी को
सीधा सरल कुछ मीठा, सहज
प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

फिर कहता हूँ-
कुछ भी कह लो, सुन लो।

पहली बारिश, सौंधी महक, मुस्कराते पत्ते,
हवाओं की ताजगी, बूंदों की टिपटिप,
सम्बन्धों की गर्माहट, अंतरंगता,
उस हल्की सी आहट, पदचाप
सीधा सरल कुछ मीठा, सहज
प्रतीक्षा तो आज भी रहती है।

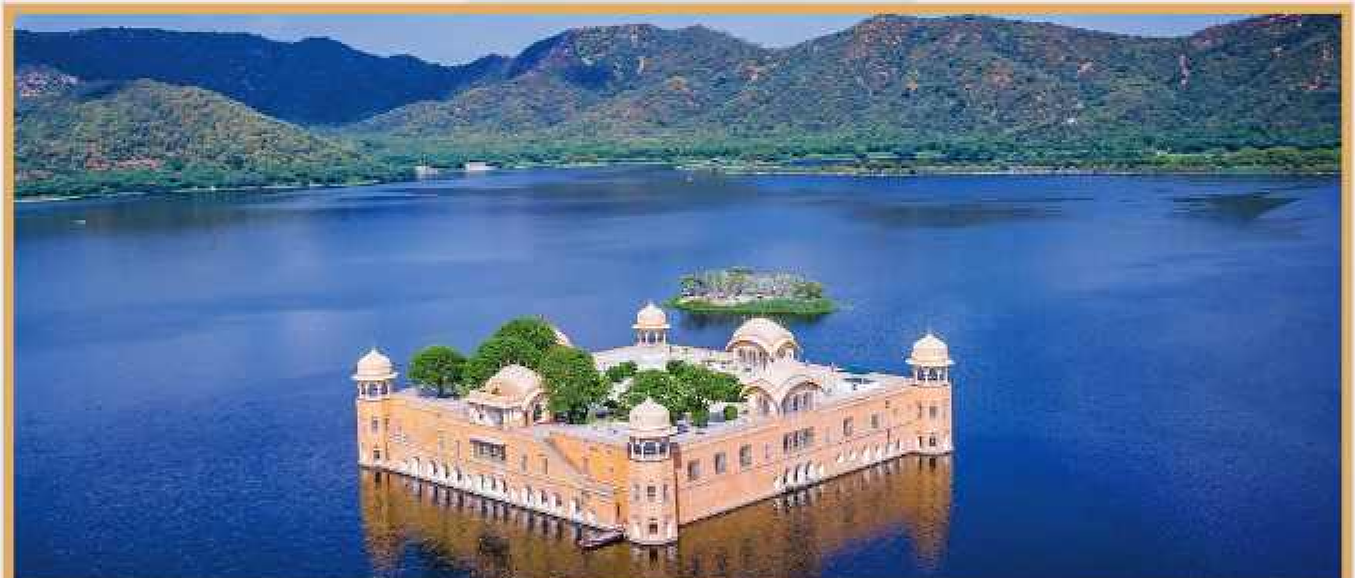

घर-घर की कहानी

शालिनी वर्मा, सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

हर घर की तरह यह कहानी चल रही है। माता पिता ने खूब लगन से अपने चार बच्चों, जिनमें दो बेटे, दो बेटियाँ थी, को पढाया। बड़ी बेटी स्नेहल मेहनती थी, अच्छी नौकरी में आई, उसकी शादी हुई, बच्चे हुए, बहुत ज्यादा व्यस्त हो गयी अपनी नौकरी और घर-बार संभालने में।

दूसरा बेटा वरुण पढने में कमजोर था, किसी तरह शादी एक नौकरी पेशा लड़की से हुई , बच्चे हुए। लेकिन चूँकि बेटे की खुद की कमाई का ठोस आधार नहीं था वो माता पिता के साथ ही रहा।

तीसरे नम्बर पर बेटी स्वाति थी, पढने में अच्छी होने के बावजूद आरामपसंद थी , नौकरी की भी, तो जल्दी छोड़ दी। माँ ने समझाया भी कि नौकरी मत छोड़ो अपने पैरों पर खड़े होने का जमाना है परन्तु वह कह देती, एक ही जीवन मिला है उसे अपने हिसाब से जीने दो। पति बहुत अच्छे सुलझे, और समझदार मिले। पति जैसे अपने माता पिता की देखभाल करते वैसे ही सास ससुर को भी संभालने में पीछे नहीं हटते थे। स्वाति की ससुराल उसी शहर में थी।

चौथे नंबर पर छोटे बेटे अनुज ने व्यवसाय शुरू किया जो कि उसकी मेहनत और व्यावसायिक कुशल बुद्धि होने के कारण काफी अच्छा चल पड़ा और दिन रात बेटा अपने बिज़नेस में जुटा रहता। शहर की नामी गिरामी हस्तियों में उसका नाम शुमार होने लगा पर अपने परिवार के लिए उसके पास वक्त नहीं था। माता पिता को पैसे की कमी नहीं होने देता था परन्तु एक बड़े आलिशान बंगले में अपनी पत्नी बच्चों के साथ अलग रहता था।

माता पिता अक्सर फ़िक्र करते कि पता नहीं वरुण कैसे अपने जीवन की नैया पार लगाएगा, खैर! पिताजी की पेंशन से घर चल रहा था, अनुज भी भाई की मदद करता रहता था। गाहे-बगाहे, स्वाति को भी उलाहना मिल जाता कि अच्छी खासी नौकरी को लात मार के घर पर खाली बैठी रहती है इतना पढने लिखने का क्या फायदा हुआ। माता पिता की नाक तो बड़ी बेटी स्नेहल और छोटे बेटे अनुज ने ऊँची की थी।

समय गुजरता गया , पिताजी चल बसे। माताजी को अकेलेपन ने बीमार कर दिया। निराशा ने उन्हें बुरी तरह जकड लिया, उच्च-रक्तचाप और मधुमेह जैसी बीमारियों की गिरफ्त में आ गयीं। माँ की यह स्थिति स्वाति से न देखी गयी, वह उनके ना-नुकुर करने के बावजूद अपने घर ले आई। माँ की सेवा में कोई कमी नहीं छोडती, उन्हें रोज़ घुमाने ले जाती। धीरे-धीरे माँ की स्थिति में सुधार हुआ, अपने घर जाने की जिद पकड़ ली। स्वाति उन्हें भाई वरुण के पास छोड़ आई लेकिन दो समय फ़ोन कर उनका हाल चाल पूछ लेती, कोई भी छोटी से छोटी, जरूरत की चीज़ फ़ौरन पहुँचा देती, हफ्ते में दो बार अपनी माँ को मिल आती, उन्हें घुमाने ले जाती, डॉक्टर को दिखाती। माँ को स्वाति बेटी ने पूरी तरह संभाल लिया था। बड़ी बेटी स्नेहल और छोटा बेटा अनुज भी हफ्ते दस दिन में मिलने आ जाते। और समय निकला, माँ वयोवृद्ध हो गयी थी , छोटी-छोटी बीमारियाँ जटिल रूप लेकर परेशान करने लगी। यहाँ तक कि माँ ईश्वर से उन्हें जल्दी बुलाने की प्रार्थना करने लगीं। वरुण के डॉक्टरों के चक्कर लगते रहते। उन्हें सदैव एक बच्चे की तरह समझाने और दुलारने का काम वरुण करता।

अब यहाँ उस बूढी माँ के कौन काम आ रहा था? वही असफल बेटा वरुण और नौकरी छोड़ कर बैठी बेटी स्वाति! बड़ी बेटी स्नेहल तो फिर भी कभी छुट्टी वाले रोज़ आकर माँ का दुःख दर्द सुन लेती, छोटा अनुज तो डॉक्टर की फीस भरने के पैसे भेज कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर देता। अब माँ वरुण और स्वाति को लाख लाख दुआएं देती।

क्या भौतिकवादी युग में लायक संतान के बारे में हमारी सोच कुछ अलग नहीं हो जानी चाहिए?

बच्चों को सफल व्यक्ति बनाने की जी-तोड़ कोशिश में, अक्सर हम माँ बाप उन्हें जीवन की वास्तविकता, आपसी रिश्ते और मानव दृष्टिकोण से दो-चार नहीं करा पाते और फिर जमाने को दोष देते हैं। कमोबेश यह हर घर की कहानी है।

बस सोचती ही रह गयी

किशनगढ़ रेंज में पदस्थापन होने के दौरान मुझे अक्सर ट्रेन की यात्रा करनी पड़ती थी। ट्रेन में एक बहुत दुबली पतली युवती अपनी 10-11 वर्ष की बच्ची के साथ रोजाना दिखती। शुरू में तो लगा कोई यात्री होगी, लेकिन फिर उसे पेन और टॉफ़ी बेचते देखा। उसकी बेटी बहुत चंचल और बातूनी थी, सबको नमस्ते अंकल, नमस्ते आंटी कहती। जब मैं उसे चॉकलेट देती तो बड़ी सी मुस्कराहट के साथ थैंक यू कहना नहीं भूलती। उसकी माँ भी पेन खरीदने का निवेदन कर कभी मौसम की बात कर लेती तो कभी मेरी नौकरी के बारे में पूछा करती।

उसने बताया था कि उसका पति जयपुर में राजगीर का कार्य करता है और वह रोज़ ट्रेन में पेन और टॉफ़ी बेच कर कुछ कमा लेती है। उसकी बेटी के स्कूल न जाने के बारे में पूछने पर कोई ख़ास वजह नहीं बताती। कई दफा तो उसकी बेटी की कलाई उसके साड़ी के पल्लू में बंधी होती। उसकी बेटी थी भी शरारती, झट से सबसे ऊपर की सीट पर चढ़ कर बन्दर की तरह लटकती, कभी किसी यात्री के उतारे हुए जूते पहन कर दौड़ लगाती और खिलखिला कर हँसती। उसकी माँ द्वारा अक्सर पिटाई होती फिर वह जोर जोर से रोती।

एक-दो बार मैंने उस युवती को समझाया कि यहाँ बच्ची का भविष्य ख़राब हो रहा है, उसे स्कूल में पढने डालो, पर कोई न कोई बहाना सामने हाज़िर हो जाता था जैसे अभी उसकी यूनिफार्म सिलने दी है, आज उसकी किताबें आने वाली हैं वगैरह-वगैरह। कभी कभी ख्याल आता इन माँ बेटी को अपने घर ले जाऊँ, माँ को सफाई का काम पकड़ा कर बेटी की पढाई का जिम्मा मैं ले लूँ। इस लड़की की अत्यधिक ऊर्जा स्कूल जाकर इसका बेहतर भविष्य निर्माण करेगी। मैं उचित अवसर की तलाश में थी। उस दिन ट्रेन में अधिक भीड़ थी मैं मोबाइल पर कार्य कर रही थी कि उस बच्ची की तीखी आवाज मेरे कानों के पास आई आंटी नमस्ते, कैसी हो?, आप मुझे प्लीज मोबाइल दो न। मैंने आश्चर्य से पूछा क्या करोगी मोबाइल पर? जवाब मिला - गेम खेलूंगी। मैंने उसे मना किया और बताया कि मेरे मोबाइल में गेम नहीं हैं। वह तपाक से बोली आप दीजिये तो, मैं ढूँढ लूंगी। मैं उसके बेबाक रवैये से अवाक रह गयी, मैंने उसे मोबाइल नहीं दिया। वह चली गयी। ट्रेन से उतरते समय देखा, अगले ही डिब्बे में दो युवकों के बीच में बैठकर वह मोबाइल पर तल्लीनता से उंगलियाँ चला रही है। उन युवकों और बच्ची के बैठने का ढंग अच्छा तो न लगा पर उसकी माँ भी वहीं किसी आदमी से हँसती बात करती दिखी। सोचा - मैं ही क्यों पंगा लूँ?

अगली बार फिर वे माँ बेटी किन्ही आवारा जैसे आदमियों के साथ हँसती खिलखिलाती दिखी, बच्ची तो आदमी की गोद में बैठी थी। मेरे मोबाइल देने से मना करने के बाद बच्ची मेरे पास ही नहीं फटकी, मैं मन ही मन सोचती कैसे मैं अकेले में उस औरत से बात करूँ और उसे समझाऊँ कि अपनी बच्ची को गलत राह पर जाने से रोके, कि मैं उसकी मदद करने को तैयार हूँ पर एक दो दिन बाद फिर वे दोनों ट्रेन में या रेलवे स्टेशन पर दिखाई ही न दी। पता नहीं कहाँ गुम हो गयीं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे दोनों सकुशल हों। पर अपने ऊपर बेइंतिहा कोफ़्त होती है कि मैं बस सोचती ही रह गयी और उनके लिए कुछ न कर सकी।

> **जब तक जीवन है, सीखते रहो**
> **क्यूंकि अनुभव ही सबसे श्रेष्ठ शिक्षक है**
>
> - स्वामी विवेकानंद

जयपुर स्थित कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राजभाषा पखवाड़ा – 2025 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर मुख्यालय कार्यालय, जयपुर में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025की झलकियाँ

संविधान दिवस के अवसर पर केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर के अधिकारियों द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक वाचन कर संविधान के आदर्शों, लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता तथा संवैधानिक कर्त्तव्यों के प्रति अपनी निष्ठा और प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।

स्वच्छ भारत दिवस के अवसर पर केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर द्वारा ‘स्वच्छता ही सेवा 2025’ अभियान के दौरान स्वयंसेवकों को उनके समर्पण, उत्कृष्ट सेवा एवं सक्रिय सहभागिता के लिए सम्मानित किया गया।

जीएसटी के नौ गौरवशाली वर्ष

के.आर. कटारा 'नाज', सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

जीएसटी आया, नई दिशा दिखलाई,
कर व्यवस्था में एकता की ज्योति जगाई ।
उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक,
एक राष्ट्र, एक बाजार का सपना साकार किया सबके साथ ।
पहले थे अनेक नियम अनेक प्रकार के कर,
व्यापारी उलझते रहते थे दिन-रात अक्सर।
धीरे-धीरे समय बदला बदली हर चाल,
सरलता की राह पर बढ़ चला देश खुशहाल।
डिजिटल युग का सुंदर यह अभियान,
पारदर्शिता बना इसका सबसे बड़ा सम्मान।
ई इन्वॉयस, रिटर्न और नहीं पहचान,
तकनीक से जुड़कर मजबूत हुआ हिंदुस्तान।
चुनौतियाँ भी आई, कुछ कठिन पड़ाव आये,
व्यापारी, कर्मचारी सबने मिलकर कदम बढ़ायें।
संवाद, सुधार और विश्वास का साथ
इसी से प्रशस्त हुआ विकास का पथ।
नौ वर्षों की है यात्रा देती हमें संदेश,
ईमानदार प्रयासों से आगे बढ़ता देश।
करदाता का सम्मान हो, सेवा बने विचार,
जन जन की प्रगति में ही छिपा है सच्चा उपहार।
आओ मिलकर आज यही संकल्प उठायें,
कर्तव्य की राह पर दृढ़ता से बढ़ते जाएं।
समृद्ध हो भारत, बढ़े विकास की शान,
जीएसटी के नौ साल, राष्ट्रीय निर्माण का गान।

एक्यूप्रेशर एवं स्वास्थ्य

दीपक जेटली, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक), आयुक्तालय,जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर

कोई भी ज्ञान मानव जाति के लिए लाभप्रद तभी हो सकता है जब वह नैतिक मूल्यों पर आधारित हो इसलिए हम इस लेख का श्री गणेश प्रसिद्ध संस्कृत प्रार्थना से करते हैं –

सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु नीरामयः।

सर्वे भद्राणि पश्यंतु, माकश्चिद्दुखःभाग भवेत्।।

इसका अर्थ है – सभी लोग सुखी रहे, सभी लोग स्वस्थ रहें, सभी दूसरों के अच्छे गुणों को देखे, कभी किसी पर दुख ना आए।

एक्यूप्रेशर (Acupressure) एक प्राचीन और प्रभावशाली वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति है, जिसमें शरीर के विशिष्ट बिंदुओं (points) पर दबाव डालकर विभिन्न रोगों का उपचार किया जाता है। यह पद्धति चीन और भारत जैसे देशों में हजारों वर्षों से प्रचलित है।

एक्यूप्रेशर केवल रोगों का इलाज ही नहीं, बल्कि समग्र स्वास्थ्य (Total Wellness) को बनाए रखने का एक प्राकृतिक माध्यम है। शरीर के प्रमुख बिंदुओं को सक्रिय करने से रक्त संचार सुधरता है और प्रतिरक्षा प्रणाली (Immune System) मजबूत होती है।

एक्यूप्रेशर कैसे काम करता है ?

एक्यूप्रेशर के पीछे का मुख्य दर्शन शरीर में ऊर्जा के प्रवाह (Energy) को संतुलित करना है।

- **ऊर्जा का प्रवाह :** चीनी चिकित्सा के अनुसार, शरीर में 'ची' (Qi) नामक एक जीवन ऊर्जा बहती है। जब इसमें कोई रुकावट आती है, तो बीमारियाँ होती हैं।
- **ऊर्जा का स्तर (Energy Levels) :** शरीर में 'ची' (Qi) ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित कर यह थकान दूर करता है और दिनभर सक्रिय रखने में मदद करता है।
- **दबाव बिंदु :** शरीर में विशेष बिंदु होते हैं जो तंत्रिकातंत्र (Nervous System) और आंतरिक अंगों से जुड़े होते हैं। इन पर अंगूठे, उंगलियों या विशेष उपकरणों से दबाव डालने पर मांसपेशियों का तनाव कम होता है और ऊर्जा का प्रवाह सुचारू हो जाता है।
- **एक्यूपंक्चर से अंतर :** एक्यूप्रेशर और एक्यूपंक्चर दोनों एक ही बिंदुओं को लक्षित करते हैं, लेकिन एक्यूपंक्चर में सुइयों का उपयोग होता है, जबकि एक्यूप्रेशर में केवल शारीरिक दबाव का।

प्रमुख लाभ (Benefits)

- **दर्द से राहत :** यह माइग्रेन, पीठ दर्द, घुटने के दर्द और मांसपेशियों के खिंचाव को कम करने में बहुत सहायक है।
- **तनाव और चिंता :** माथे, कलाई और छाती के बिंदुओं को दबाने से मानसिक शांति मिलती है और तनाव दूर होता है।
- **पाचन में सुधार :** नाभि के नीचे और हथेली के कुछ बिंदुओं को दबाने से गैस, कब्ज और एसिडिटी जैसी समस्याओं में आराम मिलता है।
- **नींद और थकान :** यह अनिद्रा (insomnia) को दूर करने और शरीर की थकान मिटाने में मददगार है।

महत्वपूर्ण सावधानियाँ

- **दबाव की अवधि :** किसी भी बिंदु को आमतौर पर 30 सेकंड से 2 मिनट तक दबाया जाना चाहिए।
- **विशेषज्ञ की सलाह :** गर्भवती महिलाओं और गंभीर बीमारियों (जैसे हृदय रोग या हड्डी टूटना) से पीड़ित लोगों को बिना विशेषज्ञ की सलाह के इसे नहीं करना चाहिए।

- **विशेष :** इस पद्धति की विशेष बात यह है कि इसका कोई साइड इफ़ेक्ट नहीं होता है।

आपातकालीन एक्यूप्रेशर उपचार

1. मिर्गी या किसी अन्य कारण से बेहोशी। किसी भी प्रकार की बेहोशी की स्थिति में, उंगली से GV 26 (नाक के नीचे) या K 1 (तलवे पर) या कान के निचले भाग पर जोर से दबाएँ। रोगी की प्रतिक्रिया के आधार पर तीनों बिंदुओं को दबाया जा सकता है। यदि बेहोशी निम्न रक्तचाप के कारण है, तो GV 26 का प्रयोग करें और यदि उच्च रक्तचाप के कारण है, तो K 1 का प्रयोग करें।

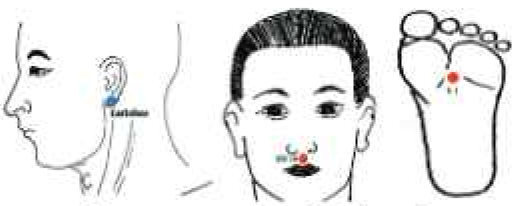

2. लू लगना, पेशाब रुक जाना, डर के मारे बच्चे का जाग जाना। उपरोक्त आपात स्थितियों में K 1 बहुत महत्वपूर्ण बिंदु है। इसे मजबूती से दबाएँ।

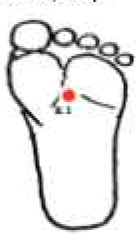

3. कान में पानी/कीड़ा/हवा चले जाने पर या कान से जुड़ी किसी भी आपातकालीन स्थिति में, SI 19 दबाएँ। इस बिंदु का पता लगाने के लिए, मुँह खोलें, यह कान के ट्रैगस के ठीक बगल में एक गड्ढे में मिलेगा। यदि किसी विशेष कान में पानी/कीड़ा/हवा चली गई हो, तो उंगली से उस बिंदु को दबाए रखते हुए, सिर को इस प्रकार झुकाएँ कि कान नीचे की ओर हो जाए।

4. ऑक्सीजन की कमी। भीड़भाड़ वाली और बंद जगह में या उचित वेंटिलेशन की कमी के कारण किसी व्यक्ति को घुटन महसूस हो सकती है और साँस लेने में कठिनाई हो सकती है। Lu 4 को दबाने से व्यक्ति को अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलने लगती है, जिससे उसे राहत मिलती है। इस बिंदु का पता लगाने के लिए, सीधी बांह को नाक की नोक से स्पर्श करें। यह वह बिंदु है जहाँ नाक की नोक बाँह को छूती है।

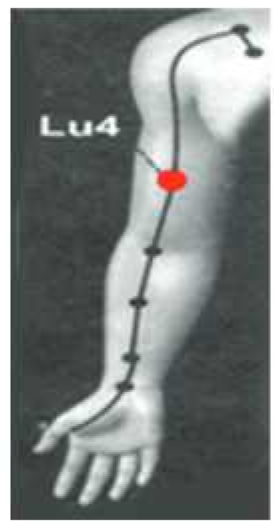

5. कीट का काटना। K 6 दबाएँ और/या उस बिंदु पर काला रंग लगाएँ। यह बिंदु टखने की हड्डी (बड़े पैर के अंगूठे की तरफ) के बाहरी जोड़ के मध्य बिंदु से एक अंगूठे की चौड़ाई (मापने के लिए रोगी के अंगूठे का उपयोग करें) नीचे स्थित गड्ढे में होता है।

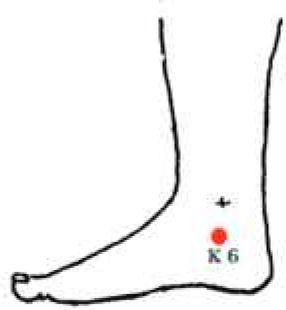

6. दांत दर्द, चेहरे का लकवा, बार-बार पेशाब करने की इच्छा। LU 7 दबाएं। यह बिंदु बाँह के सामने की ओर, हड्डी के उभार के ठीक समीप और कलाई की क्रीज से लगभग डेढ़ अंगूठे की चौड़ाई पहले स्थित है।

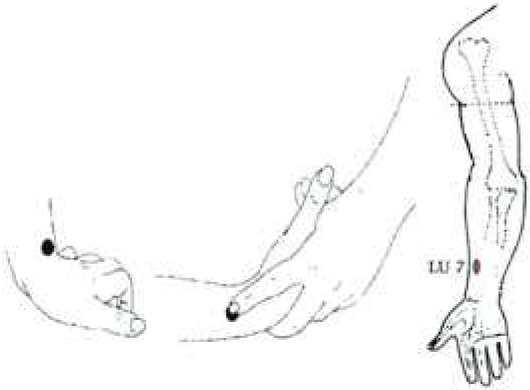

7. साँस छोड़ने में कठिनाई, बोलने में कठिनाई, नाक से खून आना। जाँच उपकरण/जिमी या किसी कुंद वस्तु से Lu 11 को दबाएँ। यह बिंदु अंगूठे के नाखून के बाहरी और समीपस्थ कोने के पास स्थित है।

8. आवाज का अचानक चले जाना। H 4, 5, 6 और 7 बिंदुओं पर मालिश करें। ये बिंदु हाथ के सामने की मध्य भाग पर स्थित हैं, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

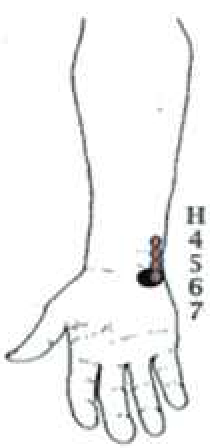

9. भोजन श्वास नली में चला जाता है, साँस लेने में कठिनाई होती है, दिल का दौरा पड़ सकता है। जाँच उपकरण/जिमी या किसी कुंद वस्तु से H 9 को दबाएं। यह बिंदु छोटी उंगली के भीतरी और समीपस्थ कोने के पास स्थित होता है।

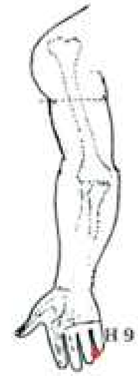

10. यात्रा के दौरान मतली और उल्टी या अन्य समस्याएँ हो सकती हैं। इस समस्या से बचने के लिए P 6 या GB 34 दबाएं। P 6 कलाई की क्रीज से दो अंगूठे की चौड़ाई की दूरी पर, बाँह के सामने के मध्य भाग में स्थित है (मापने के लिए रोगी के अंगूठे का उपयोग करें)। GB 34 पैर की फिबुला हड्डी के शीर्ष के निचले भीतरी कोने पर स्थित है। फिबुला का शीर्ष घुटने के नीचे पैर के बाहरी हिस्से पर महसूस किया जा सकता है।

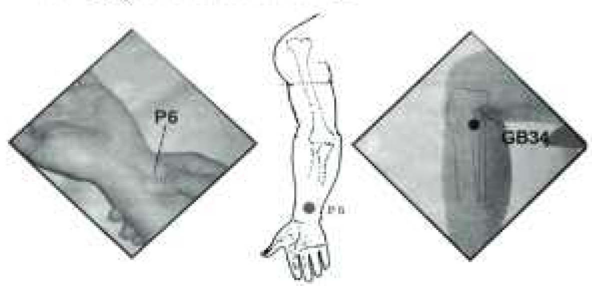

11. उच्च रक्तचाप। बाएँ अंगूठे के नाखून के नीचे नीले रंग का प्रयोग करें।

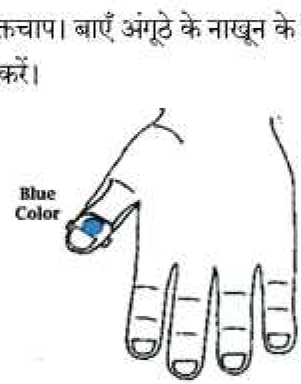

12. निम्न रक्तचाप। बाएँ अंगूठे के नाखून के नीचे लाल रंग लगाएँ।

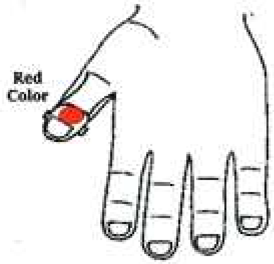

13. स्टेज फोबिया, भीड़ का सामना करने में असमर्थता। बाएँ हाथ की अनामिका उंगली के नाखून के नीचे नारंगी रंग लगाएं।

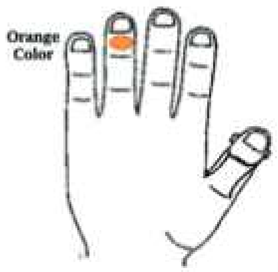

14. मतली और उल्टी। हथेली के उभरे हुए हिस्से के ठीक नीचे (उंगलियों की ओर) हथेली के मध्य अक्ष पर हरे रंग का टीका लगाएँ।

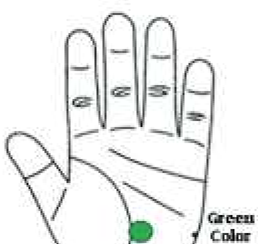

15. हीट स्ट्रोक। बाएँ अंगूठे के नाखून के चारों ओर हरा रंग लगाएँ।

16. सर्दी का हमला। बाएँ अंगूठे के नाखून के चारों ओर हल्का नीला रंग लगाएं।

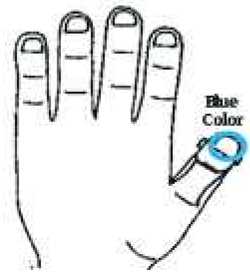

एक्यूप्रेशर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए।

जिस प्रकार हमें शरीर को उर्जा देने के लिए भोजन को आवश्यकता होती है उसी प्रकार उस प्राप्त उर्जा को संतुलित करने के लिए एक्यूप्रेशर को आवश्यकता होती है!

हमें अपने दैनिक जीवन में एक्यूप्रेशर की उपयोगिता को समझना चाहिए और उसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाना चाहिए। एक्यूप्रेशर को समझना बहुत ही सरल है इसके लिए हमें कोई विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं है। साधारण तरीके से भी हम इसका उपयोग कर सकते हैं।

अपने रोजमर्रा के कार्यों के साथ भी हम इसको उपयोग में लेकर अपने जीवन को सरल और रोग मुक्त बना सकते हैं।

ये विधा मैंने अपने परिवार के लिए ही सीखनी शुरू की थी । धीरे धीरे परिवार के साथ साथ आस पडोस के मरीजों को भी लाभ मिलने लगा। कार्यालय में भी काफी साथिओं को इस पद्धति से लाभ मिला है । मेरा आप सबसे अनुरोध है कि आप जब भी किसी बीमारी की दवा लेने जा रहे हैं तो कृपया इस पद्धति का ध्यान करें और गूगल पर इस पद्धति के माध्यम से इलाज ढूँढने का प्रयास करें। इसके बाद भी कोई समस्या हो तो मैं आपकी सेवा के लिए हमेशा तैयार हूँ।

अधूरी

विवेक श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर

क्या फ़र्क पड़ता है,

बच्चे ख़ुश रहने चाहिए।

जीजी ने स्वाति के सुर में सुर मिलाया।

बुआ....कहते हुए श्रुति रुआँसी हो कर जीजी से लिपट गई।

आसान नहीं होता बेटा दूसरी कल्चर में निभाव, राजेश ने लंबी साँस भरते हुए कहा।

निभाव करना किससे होता है अब?

अब वो ज्वाइंट फ़ैमिली की पुंगार तो होती नहीं। सबके एक- एक दो-दो बच्चे होतेहैं, जिनमें भी आधे विदेशों में बसे हैं, स्वाति ने फिर राजेश की बातकाटी।

पुंगार शब्द राजेश को व्यंग्यात्मक लगा।

स्वातिने झल्लाते हुए कहा - हमने झेले हैं बंधन तो ! सिर पर पल्ला रख कर 10-10 लोगों के लिए रोटियाँ ठेकी हैं। अब लड़कियों को खाना न तो बनाना आता है न बनाना पड़ता है।

रीत-रिवाज़ की कहें तो सब ख़त्म, अब कोई ग्यारस पूनम नहीं जानता, अब सुविधा से होता है।

बड़े त्योहार होली-दिवाली सब मनाते हैं।

स्वाति के साथ जीजी का समर्थन राजेश को बोझिल कर रहा था। कहीं कोई बोझ था मन पर। आपराधिक बोध।

जीजी की सूनी माँग उसे और ज़्यादा सूनी लग रही थी।

30 साल पहले का दृश्य उसके ज़ेहन में घूमने लगा। सबसे ज़्यादा विरोध उसी ने किया था।

कैसे होगी और बहन-भाइयों की शादी अगर जीजी की शादी ग़ैर जात में हो गई तो? क्या मुँह दिखाएंगे हम समाज में?

ज़्यादा पढ़ लिख जाने का मतलब ये थोड़े ही है कि समाज की मर्यादाएँ ही तोड़ दी जाएँ। आपके पीछे 5 बहन भाई भी हैं, उनके रिश्ते करने में दिक्कत आएगी।

या तो जीजी की शादी ग़ैर जात में कर दो और बाक़ी सब कुंवारे बैठे रहें !

बस भैया रहने दे। मैं किसी का रिश्ता नहीं रोक रही। पहले तुम सबकी शादी हो जाए मैं तब तक इंतज़ार कर लूंगी। अगर मेरी क़िस्मत में कुमार हुआ तो वो भी तब तक कुंवारा रहेगा।

लेकिन तुम दूसरे लड़के से शादी नहीं करोगी??

बिल्कुल नहीं, जीजी ने दृढ़ता से जवाब दिया। प्रेम में अजीब शक्ति होती है।

रात को तकिया चाहे आँसुओं से भीग जाए, डायरी दर्द भरे शेरों से भर जाए, पर प्यार के विरुद्ध समझौता स्वीकार नहीं होता।

कुमार ने कई बार ज़ोर डाला।

ट्राय टू अंडरस्टैंड, तुम्हारी बायोलॉजिकल क्लॉक तो आगे बढ़ रही है। मैं अकेला लड़का हूँ। मेरे पेरेंट्स बूढ़े हो रहे हैं। वो मुझे गृहस्थी में सैटल्ड देखना चाहते हैं। उनकी इच्छा होती है कि वो मेरी संतान देखें।

छोड़ो ये सब, आर्य समाज से शादी कर लेते हैं। तुम्हारे घर वाले न अपनाएँ तो भी मेरे घर वाले तो तैयार हैं।

नहीं कुमार, मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगी। दूसरे भाई बहनों की शादी तक मैं दूसरी जाति में शादी नहीं कर सकती। वैसे भी 3 साल तो मुझे अभी रुकना ही है। अभी छोटे भाई- बहन पढ़ रहे हैं। मेरी सैलरी से घर का ख़र्चा चलता है। अकेले बाबूजी की तनख़्वाह से घर नहीं चल सकता। मुझे कुछ वक़्त दो। मैं तुम्हारे अलावा किसी से शादी की बात सपने में भी नहीं सोच नहीं सकती।

मैं भी तुम्हें बहुत चाहता हूँ, पर मेरी मजबूरी भी समझो, मैं भी घर वालों को कितना कन्विंस करूँ ।

30 साल की मेरी उमर हो गई है।

माँ पिताजी प्रपोज़ल्स को नकारते हुए थक गए हैं। बिरादरी में बदनामी होने लगी है। लोग समझने लगे हैं कि मुझमें कोई कमी है, इसलिए शादी नहीं कर रहा।

माँ को बहू चाहिए, कल ही मुझसे कह रही थीं कि मैं ख़ुद तेरी उस लेक्चररनी के पास चलती हूँ, या तो वो तुझसे शादी कर ले या तुझे छोड़ दे।

डिपार्टमेंट में भी सब बातें बनाते हैं, स्टूडेंट्स फ़ब्तियाँ कसते हैं। हमारे पीछे हमें लैला-मजनू कहते हैं।

ठीक है तो जैसा तुम उचित समझो। पर मैं लक्ष्मण रेखा नहीं लाँघ सकती। मुझे वक़्त चाहिए।

लेकिन हमें भी तो जीवन में एक दूसरे के साथ वक़्त चाहिए। बूढ़े होकर शादी करेंगे क्या ?

तुम्हारे घर वाले बाद में भी नहीं माने तो ?

एक बात कहूँ , बुरा तो नहीं मानोगी ?

कहो .....

कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारी कमाई का कोई लालच तुम्हारे घर वालों को रोक रहा हो। तुमसे छोटे 3 की तो शादी हो गई, सब अपनी गृहस्थी में मस्त हैं।

कुमार तुम इतना गिरा हुआ कैसे सोच सकते हो ?

अगर तुम्हें लगता है कि तुम इंतज़ार नहीं कर सकते तो तुम मेरी तरफ़ से स्वतंत्र हो, पर मैं तुम्हारे अलावा किसी से शादी नहीं करूँगी।

24 साल की जीजी 6 भाई बहनों की शादी तक 40 साल की हो गईं। पर किसी का फ़ैसला नहीं बदला। सब भाई बहनों की गृहस्थी बस गई, पर जीजी वहीं रह गईं। बाल पकने लगे। चेहरा रुढ़िया गया।

कुमार किसी रिसर्च के लिए अमेरिका चले गए। तब फ़ोन तो थे नहीं कुछ चिट्ठियां आईं शुरू में फिर धीरे-धीरे ये सिलसिला कमज़ोर पड़ता चला गया। कई साल से कोई ख़बर नहीं मिली। आख़िर कब तक इंतज़ार करते। घर बसा लिया होगा।

पर जीजी का जीवन ठहर सा गया था। साथ के सब लोगों के घर बस गए। एक उमर तक बहुत प्रस्ताव भी आए पर आज भी उनके कमरे में कुमार की ही फ़ोटो रखी थी। एक अजीब सा सूनापन और रूखापन उनके स्वभाव और जीवन में घर कर गया था। स्टूडेंट्स भी कतराते थे। सबसे कम नम्बर देने वाले परीक्षक की छवि उनकी बन गई थी। उन्हें सब एक कुंठित व्यक्तित्व समझते थे, किन्तु उस कुंठा की वजह क्या वास्तविक नहीं थी ?

अकेलापन भी किसी सज़ा से कम नहीं होता। गर्मियों में उन्हें खुले आसमान के नीचे सोना अच्छा लगता था, पर अब एक अजीब सा डर उन्हें लगता था। किससे कहतीं ?

अब पैसा तो अथाह था पर कहीं अकेले जाने में संकोच होता था। जीवन अधूरा सा लगता था। शाम को देर से लौटने में अजीब सी झेंप होती थी इसलिए साहित्यिक कार्यक्रमों और गोष्ठियों में जाना भी बंद कर दिया था।

कभी थक जाने पर लगता, कोई अपना होता जो पिंडलियाँ दबा देता। थोड़े से मेकअप में भी उन्हें संकोच होता था। कुमार को उनके माथे की बिंदी बहुत अच्छी लगती थी, पर उसे लगाने में भी अब लज्जा सी होती थी।

समाज सबका दुर्बल बिंदु जानता है, अपने लगने वाले अपने साथियों और परिवार वालों की बात से ही सबसे ज़्यादा मन टूटता है। एक अजीब सी व्यंग्यात्मक मुस्कान परिवार और साथियों के चेहरे पर दिखती, जब भी वो अच्छे से तैयार होतीं।

क्या स्त्री स्वयं में श्रृंगारित नहीं रह सकती ? क्या उसके जीवन में किसी पुरुष का होना अनिवार्य है कि वो उसी के नाम की बिंदी लगाए या श्रृंगार करे ?

कोई ऐसा नहीं था जिससे जीजी अपने मन की बात कह सकें। किताबें कितनी पढ़ें ? मंदिर कितना जाएँ ? लगता था अब उनकी ज़रूरत किसी को नहीं, उन्हें ही दूसरों की कंपनी चाहिए।

बाबूजी और माँ जब तक थे, तब तक घर जुड़ा सा लगता था, पर अब सबकी अपनी-अपनी गृहस्थियाँ थीं। अपने स्वभाव थे।

जीजी की डायरी में लिखी कविताओं में उनका दर्द झलकता था।

आज 30 साल बाद स्थिति वही आई है, आज बात जाति से आगे बढ़ कर धर्म तक बढ़ गई है।

अंतरजातीय विवाह तो आम हो ही गए हैं। दूसरे धर्म में भी विवाह होने लगे हैं, वक़्त कितनी तेज़ी से बदला है।

श्रुति मेरी बेटी है और आज मैं दबे स्वर में ही उसके फ़ैसले का विरोध कर पा रहा हूँ।

जीजी के समय मेरा विरोध कितना मुखर था!!

कितना मुश्किल रहा होगा बाबूजी के लिए भी अपनी बेटी को सामाजिक वर्जनाओं और आर्थिक विवशताओं के चलते अविवाहित रखना।

आज जीजी ख़ुद श्रुति के फ़ैसले के साथ हैं।

जीजी फिर बोलीं, शुक्र कर राजेश कि बच्चे पूछ तो रहे हैं, वरना उन्हें कौन रोक सकता है? नई पीढ़ी कुछ बातों में अच्छी भी है। हमारे बाबूजी भी तो गुरुद्वारे को मानते थे।

इतिहास को दोहराने से रोक ले, मैं जानती हूँ... कहते-कहते जीजी की रुलाई फूट पड़ी। लगा 30 साल का सैलाब एक साथ बह निकला।

श्रुति में मुझे जीजी दिखलाई दी। जीजी नहीं चाहतीं कि फिर एक जीजी इस घर में हो। जो जीवन उन्होंने जिया वो ही जीवन श्रुति भी जीये ।

मेरी आँखों से भी अश्रुधार बह निकली।

लगा जीजी से माफ़ी माँगू।

जीजी ने सामाजिक वर्जनाओं के चलते भाई-बहनों के लिए अपना जीवन रेगिस्तान बना लिया था वरना अधूरी सी जगत जीजी की सूनी माँग में भी सिंदूर होता।

मनुष्य को कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए

देशराज मीणा, निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

पद :- काया को अभिमान करो मत मानो मेरे भाई रे।
देही मानुष की तो भारी मुश्किल पाई रे।।

दोहा :- मानुष तन अनमोल है, है भगवान का उपहार।
सत्कर्मों से करो सार्थक, जीवन हो उजियार।।

चौपाई :- मानुष काया दुर्लभ भाई।
बार-बार यह मिलती नाहीं।।
हाड़, मांस और रक्त बनायो।
ईश्वर ने अनमोल रचायो।।
नैन दिए जग देखन खातिर।
कान दिए सुन सत्य समाहित।।
हाथ दिए भाई सेवा करने।
पांव दिए सत मार्ग चलने।।

दोहा :- जीभ मिली हरिनाम हित, मीठे बोलो बोल।
और कटु वचन टूटते भाई, रिश्ते हैं अनमोल।।

चौपाई :- ह्रदय दया प्रेम से भरज्यों।
दुखियारा को दुख हर लिज्यों।।
माथो ऊँचा कर्मा कारण।
कभी न मन में कपट विचारण।।
पेट दिया पर लोभ न पालो।
अन्न मिलें तो बांटकर खालो।।
तन की शोभा सेवा माहीं।
झूठी शान टिके हत नाहीं।।

दोहा :- क्षण भंगुर यह देह है, तुम राखो इसका मान।
सतसंगत और नेकता है, जीवन की पहचान।।

पद :- राधे-गोविंद गोपाला, ईश्वर का नाम प्यारा।
सुमरण करने से कट जाएगा पाप सारा।।

लालसा

आर. के. चंदन, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु.-जयपुर

वो एक शय बस मुझे,
यूँ ही मुफ्त मिल जाए,
वही शय उसके लिए,
खूब महंगी हो जाए।

सच्चे दिल खुले दरवाज़े हों,
क्यों न मेरी झोली भर जाए,
भर गई झोली मेरी तो फिर,
दमघोंटू कसी-सी तंगी हो जाए,
वो एक शय बस मुझे......।

अमन हो और खुशहाली हो,
जैसे चाहूँ चैन से जी लूँ मैं,
फिर चाहे उसके जीवन में,
हालात ही जंगी हो जाए,
वो एक शय बस मुझे....।

मैं जा बसूँ चाहे कहीं भी,
वसुधा कुटुम्ब ही तो है,
क्या फर्क पड़ता है वह जो,
घर बैठे फिरंगी हो जाए।
वो एक शय बस मुझे.....।

उच्चतर आदर्श मूल्यों से,
जीने की राह सजी रहे,
फिर उसके जीवन पथ में,
क्रूरता चाहे नंगी हो जाए।
वो एक शय बस मुझे......!
नया ज़माना विकसित दुनिया,
मेरी तरक्की सतरंगी हो जाए।
हो गया हासिल मकाम मुझे,
बाकी दुनिया बदरंगी हो जाए।
वो एक शय बस मुझे......।

व्यक्ति, व्यक्तित्व, वस्तु,
द्रव्य, पदार्थ, अधिकारी......आदि।

स्वावलंबन

शालिनी वर्मा, सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

सुबह और शाम दिख जाती हैं,
बस या ऑटो रिक्शा का इंतज़ार करती हुई।
काँधे पर बैग या पर्स लटकाए
महिलाएँ, ड्यूटी पर जाती या लौटती हुई।
अलसुबह उठी होंगीं और घर आँगन को संभाल,
रसोई का काम निपटाया होगा जल्दी-जल्दी।
बच्चों , पति का टिफिन बना अपनी भी
दो रोटियाँ डाली होगीं डिब्बे में जैसे-तैसे।
भागते-भागते पहुँची होगी बस /ऑटो स्टैंड।
इनके लिए घड़ी हो जाती है निर्मम
बहुत तेज़ चलती है सवेरे-सवेरे।
कभी प्रश्न करे कोई जो इनसे कि
क्यों करती हैं यह भागदौड ?
जवाब कुछ भी हो इनका
मजबूरी , आर्थिक सहूलियत या ज्ञान का उपयोग,
पर सच है कि मानसिक और आर्थिक स्वावलंबन
की ताकत देती है हौसला रोज -रोज
इन महिलाओं को घर और बाहर की
तमामकठिन परिस्थितियों से जूझते हुए,
जीवन से तारतम्यबिठाने का।
जैसे चलती है एक नटनी संतुलन साध
झूलते हुए रस्से पर, कदम-कदम जमाते।
सलाम है इनके इस जुझारु, संघर्षशील जज्बे को
जो तदबीर के हुनर से लिखता है
स्वाबलंबी जीवन की नयी कहानी।

मुख्यालय कार्यालय, जयपुर में नवीनीकृत पुस्तकालय का लोकार्पण करते हुए श्री एच.एस. नारंग, मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर जयपुर ज़ोन, जयपुर एवं उपस्थित अन्य अधिकारीगण

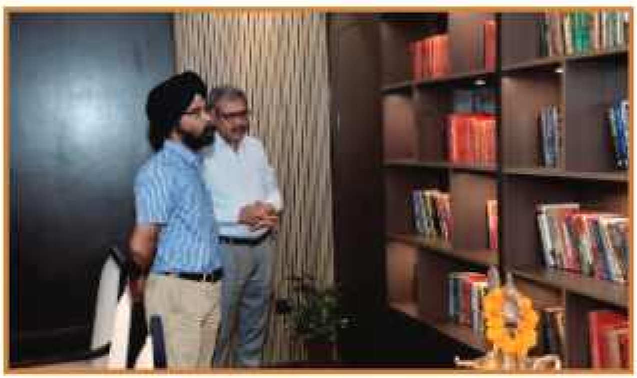

जागरूक करदाता, सशक्त राष्ट्र के संकल्प के साथ दिनांक 27.03.2026 को केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर द्वारा आयोजित साइक्लोथॉन की झलकियाँ

जीएसटी पखवाड़ा – 2026 के दौरान केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर द्वारा आयोजित क्रिकेट मैच की झलकियाँ

मुख्यालय भवन, जयपुर में दिनांक 21 जून, 2025 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

पीड़ा

डी.डी. शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

सोनू आज बहुत परेशान था। पिताजी को अस्पताल मे भर्ती हुए आज पाँच दिन हो गए थे। उन्हें पिछले तीन चार महीनों से सांस की तकलीफ थी। डॉक्टरों ने फेफड़ों में इन्फैक्शन बताया था। पिछले डेढ़ महीने में ही पिताजी तीन बार अस्पतालों में भर्ती रह आए थे। तीन चार दिनों के लिए अस्पताल रहते और फिर घर आ जाते थे। लेकिन इस बार पिताजी की हालत में कुछ विशेष सुधार नजर नहीं आ रहा था। सोनू को लगने लगा था कि अब पिताजी ज़्यादा समय साथ रहने वाले नहीं हैं उम्र जो पा ली थी। अट्ठ्यासी साल थी उम्र उनकी। सोनू को अब लगने लगा था की अब पिताजी को घर ले जाना चाहिए। वो अब जितने समय भी जियें वो अपनों के बीच रहें। उसकी छठी इंद्री कहने लगी थी कि पिताजी की अस्पताल में अब दुर्गति होने वाली है। उसने छोटे भाई से कहा कि अब पिताजी को घर ले चलना चाहिए परंतु उसका विचार अलग था वो चाहता था की पिताजी अस्पताल में ही रहें। उसको लगता था कि पिताजी ठीक हो जाएंगे और अगर उनको घर ले जाते हैं तो ये कार्य उन्हें काल के मुँह में धकेलने जैसा होगा। छोटा भाई पिताजी के साथ ही रहता था सो वो केवल पिताजी के बारे में ही सोच रहा था, अस्पताल में क्या होता है इसके बारे में उसको कुछ दिखाई ही नहीं दिया। सोनू बड़ा असमंजस में था एक तरफ भाई की सोच और दूसरी तरफ अस्पतालों की व्यावसायिक सोच।

आज तो सोनू ने सोच ही लिया था कि वह डॉक्टर से पूरी बात करेगा और डॉक्टर कह देगा तो पिताजी को घर ले जाएगा। इंसान जब साथ होता है तो हम बात नहीं करते हैं लेकिन वो ही इंसान जब जाने को होता है तो ऐसा लगता है न जाने इससे कितनी बातें कर लूँ। सोनू को भी लग रहा था कि पिताजी को घर ले जाऊँ और इनसे दुनिया भर की बातें कर लूँ, कि आपका बचपन कैसे बीता, ज़िंदगी का सफर कैसे बीता, परिवार में सब सक्षम हैं तो आपको कैसा महसूस होता है, आपके मन की कोई बात जो आप हमसे साझा करना चाहें। बहुत सी बातें इंसान के मन में रहती है कुछ को वो अपने अंतिम समय में ही खोलना पसंद करता है। सोनू डॉक्टर के पास गया और पूछा कि डॉक्टर साहब अब पिताजी की तबीयत कैसी है तो डॉक्टर ने बताया कि अभी पिताजी कि हालत ठीक नहीं है। इन्हें सांस लेने मे दिक्कत हो रही है, इन्हें अब वेंटीलेटर पर रखना पड़ेगा। सोनू ने कहा कि डॉक्टर साहब हम पिताजी को घर ले जाना चाहते हैं। हम घर पर ही उनकी सेवा कर लेंगे। घर पर उन्हें अच्छा लगेगा। आजकल ड्रिप तो घर पर ही चढ़ जाती है। डॉक्टर साहब ने अलग ही कहानी शुरू कर दी, बोले लगता है पिताजी से छुटकारा पाना चाहते हो। वेंटीलेटर पर लेना आजकल आम है, पिताजी की तबीयत में इससे आराम आ जाएगा। अभी कुछ समय पहले मेरे पास एक केस आया था जिसमें बेटा-बहू अपने पिताजी को अस्पताल से ले जाना चाहते थे। फिर पता चला कि वो उसकी जायदाद हड़पना चाहते थे कि अगर इसको जल्दी घर ले गए तो ये जल्दी मर जाएगा और सारी जायदाद हमारी हो जाएगी। डॉक्टर की ऐसी बातें सुनकर सोनू खामोश हो गया। उसने डॉक्टर को कहा, सर आप जैसा मुनासिब समझें करें। पिताजी के वेंटिलेटर लगा दिया गया। पहले पिताजी टूटा-फूटा कुछ बोल लेते थे अब वो भी बंद हो गया। बस इशारों में ही बात होती थी। पाँच-सात दिन बाद डॉक्टर ने सुझाव दिया कि पिताजी ठीक से खाना ले नहीं पाते है सो इन्हें लिक्विड डाईट देनी पड़ेगी जो कि गले की बगल मे छेद कर नलकी से दी जाएगी इससे इनके शरीर को पोषक तत्व मिलने लगेंगे और इनकी हालत में सुधार हो जाएगा।

पिताजी से परिवार का कोई न कोई सदस्य हमेशा मिलता रहता था, उनके हाथ पाँव दबा दिया करता था इससे उनको शांति मिलती थी। सोनू ने पिताजी का हाथ पकड़कर धीरे से पूछा, पापा डॉक्टर साहब

कह रहे हैं कि गले की बगल से एक नलकी डालेंगे जिससे आपको खाना ठीक से मिल सके और विटामिन वगैरह भी शरीर में पहुंचाई जा सके। पिताजी ने झटके से हाथ हिला-हिला कर मना कर दिया। सोनू ने डॉक्टर को ये बात बताई तो डॉक्टर कहने लगा आप भी अजीब आदमी हैं, मरीज़ कभी कहेगा क्या के मेरे शरीर में नलकी डाल दें। आपके पिताजी को बिल्कुल दर्द नहीं होगा। इससे वो जल्दी स्वस्थ हो जाएंगे। सोनू ने डॉक्टर को कहा सर इन्हें अस्पताल में भर्ती हुए सत्रह अट्ठारह दिन हो गए हैं आपके कहे अनुसार चलते हुए भी इनकी हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है अब मुझे लगने लगा है कि इन्हें घर ले जाना चाहिए। डॉक्टर ने कहा कि मैं एक डॉक्टर हूँ मेरा काम है ज़िंदगी बचाना। सोनू ने डॉक्टर साहब से इस बार सीधे पूछ लिया कि सर अगर मेरे पिताजी की जगह आपके पिताजी होते तो आप क्या करते। डॉक्टर थोड़ा सकपकाया और संभलते हुए बोला मैं मेरे पिताजी के साथ भी वही करता जो तुम्हें सलाह दे रहा हूँ। सोनू ने अपने भाई बहनों से सलाह की और पिताजी के नलकी डलवा दी। अब पिताजी के मुंह के रास्ते गले में एक पाइप के अलावा गले के बगल से एक छेद कर नलकी भी लग गई। कई दफ़ा तो पिताजी इतने परेशान होने लगे कि मुंह की नलकी को हटाने की कोशिश करते। अब पिताजी के हाथ पाँव भी बैड से बांध दिये गए। अब तो मरीज को देखने पर ऐसा एहसास होने लगा जैसे उसे कोई यातना शिविर में डाल दिया गया है। सोनू को कई बार पिताजी की बगल वाली मरीज ने बताया कि अब पिताजी को ले जाओ और इनकी सेवा करो और इनके सामने भजन कीर्तन चला दो।

अभी मुश्किल से चार दिन बीते होंगे की डॉक्टर ने सोनू को फिर कहा कि, भैया ये जो पिताजी के मुंह मे नलकी डली है उससे गले में जख्म होने का डर है और इससे इनके इन्फ़ैक्शन होने का डर है इसके लिए हमें इनके गले में छेद करके एक नई नलकी डालनी पड़ेगी इससे इनकी नाक से जो ऑक्सिजन दे रहे हैं उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी और इनको सांस लेने में कोई तकलीफ नहीं होगी इस नलकी के माध्यम से ही इन्हे ऑक्सिजन मिलने लग जाएगी।

सोनू से अब रहा नहीं गया और वो डॉक्टर से बोल पड़ा कि डॉक्टर साहब हमें पिताजी को कोई चेतक घोड़ा नहीं बनाना है। इनको पिछले करीब तीन महीनों से रोज एंटीबाओटिक दिया जा रहा है आपको क्या लगता है, ये ठीक हो जाएंगे। अगर आप इनमें कुछ सुधार कर के घर भी भेज दें तो हो सकता है दो दिन बाद ही मुझे फिर वापस आना पड़े कि डॉक्टर साहब अब इनकी किडनी काम नहीं कर रही है या इनका लीवर खराब हो चुका है। ये तो आप इन्हें कृत्रिम सांस दे रहे हो नहीं तो मुझे तो ये पक्का है कि इन्होंने अपना जीवन जी लिया है। डॉक्टर साहब ऐसा क्या हो गया कि इंसान अब अस्पताल में ही मरता है वो घर में क्यों नहीं अपनी आखिरी सांस लेता है। इस पर डॉक्टर बोला, सर हमारा काम है मरीज की रक्षा करना। हम जी तोड़ मेहनत करते हैं किसी भी मरीज को बचाने के लिए। इसके लिए हमें बहुत से त्याग करने पड़ते हैं। हमारा एक ही ध्येय रहता है कि अगर कोई हमारे द्वार आ गया तो उसको हम सही करके ही भेजें। मैंने तो ऐसे-ऐसे मरीजों को ठीक होते देखा है जिसको हमारे नर्सिंग स्टाफ ने ही मरा हुआ मान लिया था, इसीलिए हमें इलाज से मत रोको भगवान ने चाहा तो आपके पिताजी अवश्य ही यहाँ से ठीक होकर जाएंगे।

सोनू एक बार फिर चुप पड़ गया। एक तरफ उसे पिताजी की पीड़ा दिखाई दे रही थी तो दूसरी तरफ डॉक्टर का भावना पोषित अत्याचार। अब पिताजी की नाक पर से कुप्पी हटा ली गयी और गले में छेद करके एक मोटी नलकी डाल दी गई। पाँच दिनो का कष्ट भोगकर पिताजी ने शरीर को छोडना ही उचित समझा और वो भगवान को प्यारे हो गए।

इत्तफाक से दो महीनों के बाद सोनू को किसी कार्यवश उसी अस्पताल में जाना पड़ा तो आज वो क्या देखता है कि वही डॉक्टर साहब एक मरीज के परिजनों से बुरी तरह लड़ रहे थे कि पहले पूरे पैसे जमा कराओ तभी मरीज को भर्ती करेंगे और इसका ऑपरेशन होगा। मरीज के परिजन बार-बार उससे मिन्नत कर रहे थे कि डॉक्टर साहब आज हमारे पास आधे पैसे ही हैं हम जल्द ही बची हुई रकम का भी इंतजाम कर देंगे पर आप मरीज का ऑपरेशन तो करो इसके बहुत दर्द हो रहा है और अगर अभी ऑपरेशन नहीं कर सकते तो इसे भर्ती ही करके दर्द निवारक इंजेक्शन ही दे दें ताकि इसे आराम आ जाए। डॉक्टर साहब भी अड़े रहे इसको कहीं और ले जाओ हमारे पास बेड खाली नहीं है। अब सोनू को समझ नहीं आ रहा था कि डॉक्टर साहब का जिंदगी बचाने वाला वो कथन और वो लक्ष्य कहाँ गया जहाँ पर वो मरीज को ठीक करके ही घर भेजते थे।

देश सेवा : एक प्रयास सभी करें

संजय शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

देश सेवा का नाम सुनते ही हमारे मन में सैनिकों का साहस, स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान और नेताओं का योगदान सामने आता है। परंतु सच्चाई यह है कि देश सेवा केवल सीमा पर युद्ध लड़ने या बड़े पदों पर आसीन होकर निर्णय लेने तक सीमित नहीं है। देश का निर्माण हर नागरिक के छोटे-छोटे, परंतु जिम्मेदार कार्यों से होता है। कार्यालय में ईमानदारी, निष्ठा और परिश्रम के साथ कार्य करना भी राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण आधार है।

1. **देश सेवा का व्यापक अर्थ**

देश सेवा का अर्थ है - अपने कर्तव्यों का पालन इस भावना के साथ करना कि उससे समाज और राष्ट्र को लाभ पहुँचे। जब एक शिक्षक मन लगाकर पढ़ाता है, एक डॉक्टर ईमानदारी से मरीज का इलाज करता है, एक सरकारी कर्मचारी नियमों का पालन करते हुए जनता की सेवा करता है, या एक निजी कंपनी का कर्मचारी पूरी लगन से अपना कार्य करता है-तो ये सभी देश सेवा के ही रूप हैं।

ऑफिस में कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति देश की आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था का हिस्सा होता है। इसलिए उसका ईमानदार व्यवहार राष्ट्र की मजबूती से सीधा जुड़ा होता है।

2. **आर्थिक विकास में योगदान**

किसी भी देश की प्रगति उसकी अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है। जब कर्मचारी समय पर काम पूरा करते हैं, संसाधनों का दुरुपयोग नहीं करते और अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन करते हैं, तो संस्था की उत्पादकता बढ़ती है। इससे कंपनियाँ लाभ कमाती हैं, कर (टैक्स) का भुगतान करती हैं और सरकार को राजस्व प्राप्त होता है।

यह राजस्व देश के विकास कार्यों- जैसे सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और रक्षा-में लगाया जाता है। इस प्रकार एक साधारण कर्मचारी भी अपनी ईमानदारी से देश की आर्थिक प्रगति में योगदान देता है।

3. **भ्रष्टाचार पर नियंत्रण**

भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। जब कर्मचारी रिश्वत लेते हैं, फाइलों को अनावश्यक रूप से रोकते हैं या निजी लाभ के लिए नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो इसका दुष्प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है।

यदि प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले कि वह अपने कार्य में पूर्ण पारदर्शिता और सत्यनिष्ठा रखेगा, तो भ्रष्टाचार स्वतः ही कम होगा। विशेषकर सरकारी कार्यालयों में ईमानदारी जनता के विश्वास को मजबूत बनाती है। जब आम नागरिक को बिना रिश्वत दिए उसका काम समय पर हो जाता है, तो उसकी देश और व्यवस्था के प्रति आस्था बढ़ती है।

4. **नैतिक मूल्यों की स्थापना**

कार्यालय केवल काम करने की जगह नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार सीखने का भी स्थान है। यदि वहाँ ईमानदारी, अनुशासन और जिम्मेदारी का वातावरण होगा, तो यह संदेश समाज में भी फैलेगा।

एक ईमानदार कर्मचारी दूसरों के लिए प्रेरणा बनता है। उसके व्यवहार से सहकर्मी भी प्रभावित होते हैं और धीरे-धीरे पूरी संस्था की कार्य संस्कृति सुधरती है। जब संस्थाएँ नैतिक मूल्यों पर आधारित होंगी, तो राष्ट्र स्वतः ही मजबूत बनेगा।

5. समय और संसाधनों का सम्मान

कार्यालय में समय पर पहुँचना, कार्य समय का सही उपयोग करना, सरकारी या कंपनी की संपत्ति का निजी उपयोग न करना-ये सभी देश सेवा के ही रूप हैं। छोटी-छोटी लापरवाहियाँ जैसे देर से आना, काम को टालना या संसाधनों की बर्बादी करना, धीरे-धीरे बड़े नुकसान का कारण बनती हैं।

जब हर कर्मचारी अपने समय और संसाधनों का सम्मान करता है, तो संस्था की कार्यक्षमता बढ़ती है और देश की प्रगति तेज होती है।

6. जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा

ऑफिस में ईमानदारी केवल पेशेवर गुण नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक की पहचान है। जो व्यक्ति अपने कार्य में सत्यनिष्ठ होता है, वह जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी जिम्मेदार होता है-जैसे कर भुगतान, कानून का पालन और सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन।

इस प्रकार कार्यालय में ईमानदारी व्यक्ति के चरित्र को मजबूत बनाती है और वह राष्ट्र के लिए आदर्श नागरिक बनता है।

7. सकारात्मक कार्य संस्कृति का निर्माण

जब किसी संस्था में सभी कर्मचारी ईमानदारी और सहयोग की भावना से काम करते हैं, तो वहाँ तनाव कम और संतोष अधिक होता है। टीम भावना विकसित होती है, कार्य की गुणवत्ता सुधरती है और नवाचार को बढ़ावा मिलता है। ऐसी संस्थाएँ ही देश को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाती हैं।

निष्कर्ष

अंततः यह स्पष्ट है कि देश सेवा केवल युद्धभूमि तक सीमित नहीं है। अपने कार्यालय में ईमानदारी, निष्ठा और परिश्रम के साथ कार्य करना भी सच्ची देश सेवा है। यदि हर कर्मचारी यह संकल्प ले कि वह अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी से करेगा, तो राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित होगी।

हम सब अपने-अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी अपनाकर देश को सशक्त, समृद्ध और विकसित बना सकते हैं। यही सच्चे अर्थों में राष्ट्रभक्ति और देश सेवा है।

❑❑

अरविन्द कुमार शर्मा, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक), आयुक्तालय, जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर

तमन्ना हमारी

गमें दिल से कुछ सुनाने को दिल चाहता है,
आज बस तुम्हें कुछ बताने को दिल चाहता है।
सुना है जब से कि दूर चले गए हैं मित्र हमारे,
हमें भी बस बार-बार दूर जाने को जी चाहता है।
मुझे उनसे कोई शिकायत तो नहीं थी,
पर बस यूँ ही रूठ जाने को जी चाहता है।
फक्रत सी है यूँ ही मुझे या उनकी नजरों का धोखा है,
कि हमें भी उनके धोखे में आने को जी चाहता है।
दुआ करो कि वह सौ सौ बार हमसे रुठें,
बस हमें तो हर बार उन्हें मनाने को जी चाहता है।
नजर आएँ या ना आएँ वह कभी हमको,
पर उनकी गली से यूं हीं गुजरने को जी चाहता है।
गमें दिल से कुछ कहने को जी चाहता है,
बिखरने को तो लाख बहाने हैं पास हमारे।
पर हमें तो जुड़े रहने को जी चाहता है,
बस हमें तो यूँ ही जीने को जी चाहता है।
गमें दिल से कुछ सुनाने को दिल चाहता है,
आज बस तुम्हें कुछ बताने को दिल चाहता है।

दोस्त

ऐ मेरे दोस्त कभी तो आ जाया करो, मन बहला जाया करो
आपके यहाँ आ जाने से, यह आंगन महक जाता है
एक खुशबू सी हो जाती है, एक मस्ती सी छा जाती है
कभी तो आ जाया करो, मन बहला जाया करो,

साथ-साथ बैठ कर कभी, चाय तो पी जाया करो,
मन की बात जताया करो, कभी मित्रता निभाया करो,
कभी तो आ जाया करो, मन बहला जाया करो

खबर हमारी तो ले जाया करो, खबर अपनी भी दे जाया करो
पुराने दिनों की याद ताजा कर जाया करो
कभी तो आ जाया करो, मन बहला जाया करो,

हम और तुम दूर तो नहीं, यह बात जता जाया करो,
अकेले हम अकेले हो तुम, कुछ सुन और सुना जाया करो,
कभी तो आ जाया करो, मन बहला जाया करो,

और कुछ करो या ना करो, मन हल्का कर जाया करो
कभी तो आ जाया करो, मन बहला जाया करो

हिंदी की वर्तमान दशा तथा दिशा

ओम प्रकाश डूडी, निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

मातृभाषा ! हिंदी जो कभी हर दिल की भाषा थी,
जो कभी भारत की अंतरात्मा थी।

जिसको कबीर, सूर, मीरा, तुलसी ने गाया,
जिसने हमें स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया।

अब वही हमारी मातृभाषा हीन सी है,
अपनों के बीच में दीन सी है।

वही आज बंद गली में सिमट रही है,
अपने ही घर में उपेक्षित सी लग रही है।

आज मुझे एक क्षण ख्याल आया,
माँ हिंदी से मिलकर आऊं, भले ही उन्होंने नहीं बुलाया।

वेदना तो उनको, मुझसे बहुत-सी होगी,
डरते-डरते मैंने उनका द्वार खटखटाया।

मिलने के बाद तो हिंदी ने स्नेह से बिठाया,
संताप अपना कुछ इस तरह सुनाया।

बोलीं, तू साल में केवल एक बार आता है,
कुछ करता भी है या दिखावे को ''हिंदी दिवस'' मनाता है।

माँ हिंदी मेरी ओर देखकर मुस्कुराई,
बयां करते हुए अपनी वेदना की पूरी दासतां सुनाई।

आजकल हिंदी में बात करते हुए हम हिचकिचाते हैं,
हिंदी को पराया-पराया समझ अंग्रेजी को गले लगाते हैं।

हर तरफ अंग्रेजी का शोर है,
आधुनिक जमाने में हर तरफ दिखावे का जोर है।

मैंने कहा, ''हिंदी-दिवस'' तो सब सम्मान से मनाते हैं,
यह ऐसा दिन होता है जहां सभी आपके गुणगान गाते हैं।

एक बनावटी हंसी के साथ देखकर मेरी ओर मुस्कुराई,
अपने घर में अपनी ही दुर्दशा बताकर मुझे खरी-खोटी सुनाई।

कहा, क्या तुम्हें संपूर्ण वर्ष में एक ही दिन मेरे लिए मिलता है,
बाकी दिनों में तो अंग्रेजी के अलावा कुछ नहीं दिखता है।

अरे! यही वो भाषा है जिसको बोलकर तू बड़ा हुआ,
तू बचपन में यही भाषा सीखकर खड़ा हुआ।

दादी-नानी कहानियां इसी भाषा में कहती थीं,
माँ भी तो लोरी इसी भाषा में सुनाती थी।

अपने वतन में ही एक दिन की मेहमान हो गयी हूँ,
धीरे-धीरे अपने ही बच्चों में मेरी पहचान खो गई हूँ।

बात माँ हिंदी की सही थी, लज्जा तो हमें भी नहीं आती,
हर वर्ष हिंदी-दिवस मनाते हैं पर अंग्रेजी वहीं की वहीं रह जाती।

अंग्रेजी का चस्का ऐसा छाया,
उसने ही हमारी हिंदी को बेबस बनाया।

'गुड मॉर्निंग', 'थैंक्यू यू' का बोलबाला है,
'नमस्ते', 'आभार' अब पुराना है।

बच्चे अपनी माँ को 'मॉम' कहने लगे हैं,
पिताजी अब 'डैड' बनने लगे हैं।

शिक्षक भी पाठ अंग्रेजी में पढ़ाते हैं,
हिंदी की 'हिंदी हो गई', ऐसी बात बतलाते हैं।

डिजिटल मंचों तक में हो गये हैं बदलाव,
हिंदी की कहानियों-किस्सों में भी है अंग्रेजी का प्रभाव।

'क्रश', 'डेट', 'लव', और 'किस' जैसे शब्द प्रासंगिक है,
'मोह', 'प्रेम', 'प्रणाम', 'क्षमा' जैस शब्द अप्रासंगिक है।

दफ्तरों में हिंदी का नाम नहीं,
शिक्षा के मंदिरों में हिंदी का स्थान नहीं।

हिंदी-भाषी आज गंवार सा नजर आता है,
वहीं अंग्रेजी-भाषी को सभ्य मानुष माना जाता है।

मंचों पर अंग्रेजी की गूँज है,
हिंदी में अब केवल पिछड़ों की सूझबूझ है।

'मंचों पर 'स्पीच' होती है, 'भाषण' नहीं,
'डिबेट' होती है, पर हिंदी की कोई शरण नहीं।

शहरों की चकाचौंध में हिंदी खो रही है,
अपने ही घर में बेबस हो रही है।

अंग्रेज़ी में लिखा तो 'स्टेटस' है
और हिंदी में लिखा तो 'देशी' है,

हिंदी तो अपने ही देश में 'विदेशी' है। अंग्रेजी के साये
में अपनी भाषा घुट रही है, अपने ही लोगों से लुट रही है।

हो अखबार, टीवी, मंच या हो सभा,
हर ओर है अंग्रेजी का है दबदबा ।

दफ्तरों में बोली जाती है इंग्लिश,
मोबाइल और जबान पर संचलित है हिंग्लिश।

गुरु, योग, कर्म, अवतार जैसे शब्दों ने विदेश में पहचान बनाई है,
लेकिन सुप्रभात, आभार, कृपया जैसे शब्दों ने घर में ही
पहचान गँवाई है।
हिंदी भाषा की आज दशा और दिशा,
ज्यों दिवस संग मिश्रित हो जाए निशा।

क्यों भूल रहे हम अपनी पहचान?
क्यों खो रही है अपनी ही जुबान?

पर क्या सच में यही भविष्य होगा?
क्या हिंदी का अस्तित्व यूँ ही खो जाएगा?

अब भी समय है, जागने का, अब भी वक्त है, संभलने का।
हिंदी को फिर से अपनाना होगा, उसे अपने गौरवपूर्ण स्थान
दिलाना होगा।

माँ का फिर से हाथ थामना होगा,
उन्हें हमारी आत्मा से जोड़ना होगा।

फिर से 'मॉम' को 'माँ' कहना होगा,
और 'डैड' को 'पिता' बनाना होगा।

बच्चे 'गुड मॉर्निंग' नहीं, 'सुप्रभात' कहें,
'थैंक यू' की जगह 'धन्यवाद' कहें।

कॉर्पोरेट की चकाचौंध में भी हिंदी के विचार सूझें,
सम्मेलन के मंचों पर हिंदी ही गूंजें।

सरकारी मंचों पर हिंदी का परचम लहराए,
हर मंच से हिंदी का जयघोष सुनाई दे।

शिक्षा-मंदिरों में हिंदी को मुख्यधारा में लाना होगा,
हमारे वतन में हिंदी का पुनः गौरव जगाना होगा।

हिंदी को फिर से अंतरात्मा में बसाएँ,
हर दिल से उसका गान कराएँ।

तभी तो माँ भारती मुस्कुराएगी,
तभी तो हिंदी की बिंदी चमकेगी।

हिंदी का गौरव फिर लौटेगा, हिंदी का परचम फिर फहरेगा।
आओ मिलकर इसकी शान बचाएँ, हिंदी को फिर से अपना
मान दिलाएँ।

माँ भारती के माथे का श्रृंगार है हिंदी,
भारत के बगिया की बहार है हिंदी।

बदल देंगे भविष्य को, अंग्रेजी तो क्या चीज है,
हिंदी में तो हमारी पीढ़ी के अंकुरण के बीज हैं।

मैंने तभी सोच लिया, मैं राजभाषा को सम्मान दिलाऊंगा,
हिन्दी के संताप को सभी तक पहुंचाऊँगा।

आओ, हम सब मिलकर हिंदी को कंठ में बसाएँ,
मातृभाषा पर गर्व करें, गौरवमान बढ़ाएँ।

अब भी समय है, अपने आप को संभाल लीजिए,
हिंदी की डोर को फिर थाम लीजिए।

संकल्प लें कि हिंदी को चहूँ ओर फैलायेंगे,
पूरे देश में गर्व से हिंदी का परचम लहरायेंगे।

यही विनती मैं आपसे करता हूँ,
हिंदी के जख्मों में मरहम भरता हूँ

हिंदी है मेरे वतन की शान बता रहा हूँ,
हिंदी है सर्वोपरि पुनः समझा रहा हूँ।

एक नोटशीट की आत्मकथा

बाबूलाल मीना, सहायक निदेशक (रा.भा.), केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

''**मैं** केवल कागज़ नहीं किसी की उम्मीद, किसी का समाधान और किसी निर्णय की कहानी हूँ''

नमस्कार!

मैं एक साधारण-सी नोटशीट हूँ।

शायद आपने मुझे कई बार देखा होगा। कभी किसी पुरानी फाइल के बीच दबे हुए, कभी किसी अधिकारी की मेज़ पर विचारों की प्रतीक्षा करते हुए, कभी किसी कर्मचारी के हाथों में उम्मीद बनकर जाते हुए और आजकल कंप्यूटर की स्क्रीन पर ई-ऑफिस के रूप में अपनी नई पहचान बनाते हुए। दिखने में मैं बहुत साधारण हूँ। कुछ पन्ने, कुछ खाली स्थान और कुछ लिखने की जगह। मेरे पास न कोई आवाज़ है, न कोई चेहरा, न कोई पहचान पत्र। फिर भी मेरे छोटे-से अस्तित्व में अनेक बड़ी कहानियाँ छिपी होती हैं। मेरे ऊपर लिखे गए शब्द केवल शब्द नहीं होते। वे किसी की मेहनत का परिणाम होते हैं, किसी की चिंता का समाधान होते हैं, किसी की प्रतीक्षा का अंत होते हैं और कई बार किसी के जीवन में नई उम्मीद की शुरुआत भी होते हैं।

आज मुझे अपनी कहानी कहने का अवसर मिला है, इसलिए मैं आपको अपने उस सफर पर ले चलना चाहती हूँ, जिसे मैंने वर्षों से सरकारी कार्यालयों की शांत गलियों, फाइलों के ढेर और निर्णयों की प्रक्रिया के बीच देखा है। मेरा जन्म किसी उत्सव के साथ नहीं होता। मैं किसी दुकान से कार्यालय तक पहुँचती हूँ और एक दिन अचानक किसी फाइल का हिस्सा बन जाती हूँ। उस समय मैं बिल्कुल खाली होती हूँ-एकदम सफेद, शांत और निःशब्द। लेकिन मेरे इस खालीपन में भी एक प्रतीक्षा छिपी होती है। मुझे इंतजार होता है उस पहले शब्द का, जो मेरे अस्तित्व को उद्देश्य देगा।

जब कोई कर्मचारी किसी विषय को समझकर मेरे ऊपर पहली पंक्ति लिखता है, तो मेरी वास्तविक यात्रा शुरू होती है। फिर धीरे-धीरे मेरे ऊपर तथ्य आते हैं, परिस्थितियाँ दर्ज होती हैं, नियमों का उल्लेख होता है और समाधान खोजे जाते हैं। कोई मेरे ऊपर किसी कर्मचारी की वर्षों पुरानी समस्या लिखता है, कोई किसी नागरिक के आवेदन का विवरण देता है, कोई किसी योजना को आगे बढ़ाने का प्रस्ताव रखता है। धीरे-धीरे मैं केवल कागज़ नहीं रहती, मैं एक कहानी बन जाती हूँ।

मेरी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मैंने कार्यालयों में केवल काम नहीं देखा, मैंने इंसानों को देखा है। मैंने देखा है किसी कर्मचारी को अपनी पदोन्नति के आदेश का इंतजार करते हुए। मैंने देखा है किसी सेवानिवृत्त व्यक्ति की आँखों में अपनी पेंशन स्वीकृति की आशा। मैंने महसूस किया है किसी नागरिक की चिंता, जो अपनी समस्या के समाधान के लिए एक निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा होता है।

जब मेरी यात्रा पूरी होकर किसी सकारात्मक निर्णय तक पहुँचती है, तो मेरे पन्ने भी जैसे मुस्कुरा उठते हैं। क्योंकि मैं जानती हूँ कि मेरे ऊपर लिखी गई एक छोटी-सी टिप्पणी किसी के लिए बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है।

मैंने कार्यालयों को बदलते हुए देखा है। एक समय था जब मेरी दुनिया फाइलों के बीच सीमित थी। हरे कवर वाली फाइलें, रजिस्टरों की कतारें, अलमारियों में सुरक्षित दस्तावेज़ और स्याही से लिखी गई टिप्पणियाँ मेरे जीवन का हिस्सा थीं। उस समय मेरी यात्रा भी एक यात्रा जैसी होती थी। एक मेज़ से दूसरी मेज़ तक जाना, किसी अधिकारी की टिप्पणी की प्रतीक्षा करना, फिर आगे बढ़ना-यही मेरा संसार था।

कभी-कभी मैं जल्दी अपने लक्ष्य तक पहुँच जाती थी, तो कभी किसी मेज़ पर लंबे समय तक ठहर जाती थी।उस प्रतीक्षा के दौरान मैं सोचती थी-मेरे ऊपर लिखा विषय केवल मेरा नहीं है, इसके पीछे किसी व्यक्ति की आशा जुड़ी हुई है।

फिर समय बदला। तकनीक आई और मैंने भी स्वयं को बदला। आज मैं ई-ऑफिस में डिजिटल रूप में मौजूद हूँ। अब मेरी यात्रा तेज हो गई है। न कागज़ खोने का डर है, न फाइलों के स्थान की चिंता। टिप्पणियाँ ऑनलाइन दर्ज होती हैं, डिजिटल हस्ताक्षर होते हैं और मैं कुछ ही क्षणों में एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी तक पहुँच जाती हूँ।मेरा स्वरूप बदल गया, लेकिन मेरा उद्देश्य नहीं बदला। आज भी मैं निर्णयों की वही महत्वपूर्ण कड़ी हूँ।

मुझे भाषा से कभी कोई शिकायत नहीं रही। मैं हिंदी में भी लिखी जाती हूँ और अंग्रेज़ी में भी। हर भाषा ज्ञान और संवाद का माध्यम है। लेकिन जब मेरे ऊपर सरल, स्पष्ट और सहज हिंदी में लिखा जाता है, तो मुझे एक विशेष अपनापन महसूस होता है। क्योंकि सरल भाषा केवल शब्दों को आसान नहीं बनाती, बल्कि विचारों को लोगों तक पहुँचाती है। मैंने देखा है कि कठिन शब्दों का प्रयोग हमेशा गंभीरता का प्रमाण नहीं होता। कई बार एक सरल वाक्य किसी जटिल समस्या को बेहतर ढंग से समझा सकता है। जब कोई अधिकारी या कर्मचारी यह सोचकर लिखता है कि सामने वाला व्यक्ति इसे आसानी से समझ सके, तब मुझे लगता है कि प्रशासन अपने वास्तविक उद्देश्य-जनसेवा-के और करीब पहुँच रहा है।

हर वर्ष सितंबर का महीना मेरे लिए विशेष होता है। कार्यालयों में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ती है। राजभाषा कार्यक्रम आयोजित होते हैं, प्रतियोगिताएँ होती हैं, प्रशिक्षण दिए जाते हैं। उस समय मुझे भी विशेष महत्व मिलता है। लेकिन मेरे मन में एक छोटी-सी इच्छा हमेशा रहती है-मुझे केवल एक दिन या एक महीने का उत्सव न बनाया जाए। मुझे दैनिक कार्य का सहज हिस्सा बनाया जाए। क्योंकि भाषा का सम्मान केवल मंचों पर बोलने से नहीं, बल्कि अपने कार्य व्यवहार में अपनाने से होता है।

आज मेरे आसपास कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल टूल्स और आधुनिक तकनीक मौजूद हैं। वे मेरी भाषा को बेहतर बनाने में सहायता करते हैं, गलतियाँ सुधारते हैं और कार्य को आसान बनाते हैं। मुझे यह परिवर्तन अच्छा लगता है। क्योंकि विकास का अर्थ है समय के साथ आगे बढ़ना। लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि तकनीक केवल साधन है। किसी निर्णय में संवेदना, किसी टिप्पणी में निष्पक्षता और किसी आदेश में मानवीय सोच केवल इंसान ही जोड़ सकता है। एक मशीन शब्दों को व्यवस्थित कर सकती है, लेकिन शब्दों के पीछे छिपी भावनाओं को समझने का कार्य मनुष्य ही कर सकता है।

मेरे जीवन का सबसे सुंदर क्षण वह होता है, जब मेरे माध्यम से किसी की परेशानी दूर होती है। जब किसी जरूरतमंद को सहायता मिलती है, किसी कर्मचारी को न्याय मिलता है, किसी योजना को मंजूरी मिलती है या किसी नागरिक की समस्या का समाधान होता है, तब मुझे लगता है कि मेरा अस्तित्व सफल हो गया।

उस समय मुझे यह एहसास होता है कि मैं केवल कार्यालय की प्रक्रिया नहीं हूँ, मैं सेवा और संवेदना की यात्रा का एक छोटा-सा हिस्सा हूँ।

मैं एक साधारण-सी नोटशीट हूँ। मेरे पास कोई पद नहीं, कोई अधिकार नहीं, कोई पहचान नहीं। लेकिन मेरे ऊपर लिखे गए शब्दों में शक्ति है। मैं किसी की आशा बन सकती हूँ। मैं किसी निर्णय का आधार बन सकती हूँ। मैं किसी बदलाव की शुरुआत बन सकती हूँ।

मैंने सीखा है कि अच्छे प्रशासन की पहचान केवल नियमों में नहीं, बल्कि उन नियमों को लागू करने वाली संवेदनशील सोच में होती है। इसलिए जब अगली बार आप मुझे किसी फाइल में देखें या कंप्यूटर स्क्रीन पर खोलें, तो मुझे केवल एक दस्तावेज़ मत समझिए। मैं किसी की प्रतीक्षा हूँ, किसी का विश्वास हूँ, किसी निर्णय की यात्रा हूँ।

मैं एक नोटशीट हूँ

मैं स्वयं मौन रहती हूँ, लेकिन मेरे शब्द अनेक लोगों की आवाज़ बन जाते हैं।

स्वीकृति की आकांक्षा

रोहित शर्मा, आशुलिपिक, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर

विचारों का भी अपना स्वभाव होता है। कुछ आते हैं और चले जाते हैं, कुछ हमारे भीतर ठहर जाते हैं। वे उत्तर नहीं माँगते, केवल बार-बार सोचने को विवश करते हैं। काफी लंबे समय से एक ऐसा ही विचार मेरे साथ चल रहा है। सभ्यता ने मनुष्य को रहने का ढंग सिखाया, समाज ने व्यवहार करना सिखाया, पर इसी क्रम में एक ऐसी आदत भी जन्म लेती गई जिसने मनुष्य की आंतरिक स्वतंत्रता को सबसे अधिक प्रभावित किया - स्वयं को निरंतर दूसरों की दृष्टि में परखने की आदत। निस्संदेह, स्वीकार किए जाने की आकांक्षा मनुष्य की सहज सामाजिक प्रवृत्ति है। सम्मान, स्नेह और अपनत्व की इच्छा न तो अस्वाभाविक है, न ही त्याज्य। समस्या तब उत्पन्न होती है जब यह आकांक्षा हमारे अस्तित्व का आधार बन जाती है, जब हमारा आत्मबोध दूसरों की स्वीकृति पर और हमारे निर्णय उनकी प्रतिक्रिया पर निर्भर होने लगते हैं और इस स्वीकृति की खोज में मनुष्य अपने स्वाभाविक व्यक्तित्व और अपनी प्रामाणिकता (Authenticity) से दूर होता चला जाता है...

इसी संदर्भ में कभी कभी मेरे मन में ओशो का एक विचार कौंधता रहता है कि समाज समूह (भीड़) के मनोविज्ञान से जीता है... और समस्या ये है कि भीड़ हमेशा गुलाम चाहती है। समाज कहता है तुम हमारी मानकर चलो हम तुम्हें सम्मान देंगे। और लोग मुफ्त में सम्मान नहीं करते वो बदले में कुछ चाहते हैं, ये एक समझौता है समाज का। और ये सम्मान की बेड़िया अहंकार को तृप्ति देती हैं। हमारे समाज के महात्मा कारागृह में बंद कैदियों से भी बड़े कैदी हैं, उनके हाथों में हैं सम्मान की बेड़ियां, हजारों लोगों का सत्कार। अलग-अलग समाजों में अलग-अलग तरह की बातों के सम्मान मिलता है। अफ्रीका के एक देश इथियोपिया की मुर्सी जनजाति में जिन स्त्रियों के होंठ बहुत बड़े एवं चौड़े होते हैं उनको बहुत सुंदर समझा जाता है, इसी तरह चीन में महिलाओं के पैरों को कृत्रिम रूप से छोटा रखने की प्रथा को फुट बाइंडिंग (Foot Binding) या पदबन्धन कहा जाता था, छोटे पैरों को सौंदर्य प्रतीक माना जाता था। और दुनिया में ऐसी कितनी ही प्रथाएं हैं जो अत्यंत कष्टदायी एवं बेहुदी हैं लेकिन लोग करने को तैयार हैं क्योंकि उनसे सम्मान मिलता है। तुम किनकी बातें मान रहे हो? किनके इशारों पर चल रहे हो.. और क्या तुमने कभी सोचा है कि वे तुमसे इतने ही डरे हुए हैं जितने तुम उनसे डरे हुए हो... तुम सोच रहे हो कि वे क्या सोचेंगे और वे सोच रहे हैं कि तुम क्या सोचोगे? और बाहर इतने लोग हैं किस-किस के हिसाब से अपने जीवन को दिशा दोगे... प्रमाणिक जीवन भीतर से जिया जाता है बाहर के अनुकरण से नहीं...क्या सही है और क्या गलत.... उसका निर्णय भी तुम अपनी अंतर्आत्मा को ही करने दो...और कौन निर्णय करेगा कि क्या सही है क्या गलत...बुद्ध ने घर छोड़ा... पिता समझते थे गलत है, पत्नी समझती थी गलत है, परिवार समझता था गलत है, पूरा राज्य समझता था कि गलत है लेकिन आज क्या तुम ये कह सकोगे कि बुद्ध ने गलत किया? सुकरात से समझदार लोगों ने कहा कि तू एथेंस छोड़ दे अगर तू यहां रहा तो फांसी लगना तय है... लेकिन सुकरात ने एथेंस नहीं छोड़ा... उसने कहा मुझे जो कहना है वह एथेंस जैसे सुसंस्कृत समाज में ही कहा जा सकता है।

तुमने वह पुरानी कहानी तो सुनी ही होगी। एक पिता और उसका बेटा अपना गधा बेचने के लिए बाज़ार जा रहे थे। गधा साथ था, पर दोनों पैदल चल रहे थे। रास्ते में कुछ लोग मिले। उन्होंने हँसकर कहा, कैसे मूर्ख लोग हैं! गधा साथ है और खुद पैदल चल रहे हैं। जब सवारी का साधन साथ हो, तो उसका उपयोग क्यों नहीं करते? बात उन्हें भी

उचित लगी। दोनों गधे पर सवार हो गए। थोड़ी दूर आगे बढ़े तो कुछ और लोग मिले। उन्होंने कहा, यह देखो! बेचारा गधा, उस पर दो-दो आदमी बैठे हैं। ज़रा भी दया नहीं आती? यह तो पशु पर अत्याचार है। पिता को लगा, बात में दम है। वे स्वयं उतर गए और बेटे को गधे पर बैठा दिया।

कुछ दूर आगे फिर लोग मिले। इस बार उन्होंने कहा, देखो ज़रा! कैसा पुत्र है। बूढ़ा बाप पैदल चल रहा है और बेटा आराम से गधे पर बैठा है। आजकल के बच्चों में बड़ों के प्रति सम्मान ही नहीं रहा।

यह सुनकर बेटा तुरंत उतर गया और पिता को गधे पर बैठा दिया।

लेकिन यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई थी। थोड़ी ही दूर आगे कुछ और लोग मिले। उन्होंने कहा, वाह! कैसी संवेदनहीनता है। बूढ़े होकर भी इतनी समझ नहीं आई कि छोटा बच्चा पैदल चल रहा है और खुद गधे की सवारी कर रहे हैं! अब पिता-पुत्र दोनों असमंजस में पड़ गए। वे एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगे-आख़िर किया क्या जाए? जो भी करते हैं, किसी-न-किसी को उसमें दोष दिखाई देता है। बहुत विचार करने के बाद उन्हें एक उपाय सूझा। उन्होंने एक मज़बूत लकड़ी ली, गधे के पैर बाँधे, उसे उल्टा लटकाया और दोनों ने लकड़ी अपने कंधों पर रख ली। अब शिकायत की कोई गुंजाइश नहीं बची-न कोई गधे पर बैठा था, न कोई पैदल उसके साथ चल रहा था; अब तो वे स्वयं गधे को ढो रहे थे। जब वे पुल से गुजर रहे थे, तो लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। सब ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। किसी ने कहा, आदमियों को गधों पर बैठे तो बहुत देखा है, पर गधों को आदमियों के कंधों पर पहली बार देख रहे हैं!

शोर-शराबे और भीड़ से घबराकर गधा बुरी तरह छटपटाने लगा। उसने ज़ोर से पैर मारे, रस्सियाँ ढीली हो गईं और वह सीधे नदी में जा गिरा। पिता और बेटा भी संतुलन खो बैठे और नदी में गिर पड़े। किसी तरह तैरकर दोनों किनारे तो आ गए, पर गधा हाथ से चला गया। अंततः वे न गधे को बेच सके, न उसकी सवारी कर सके। केवल एक सीख उनके साथ घर लौटी-जो हर किसी को प्रसन्न करने निकलता है, वह अंत में स्वयं को ही खो बैठता है।

लोग क्या कहेंगे लोग हैं कौन? इनका मूल्य क्या है... इनकी खुद की आत्मवत्ता क्या है... ना जानने वाले लोगों के फूलों के हार भी किसी काम के नहीं। अगर ये नासमझों की भीड़ अगर तुम्हें बुद्धिमान भी समझती है तो इन नासमझों के समझने का कितना मूल्य है... और बदले में तुम्हें इनके अनुसार चलना पड़ता है। समाज का अनुकरण एक औपचारिक सीमा तक ही ठीक है। बाएं रास्ते चलो, कार्यालय में इस ढंग के कपड़े पहनो, या लोगों की भावनाओं का सम्मान करना, (भले ही व्यक्तिगत रूप से असहमति हो), भोजन, बैठने, बोलने और अभिवादन से जुड़े शिष्टाचार का पालन करना वगैरह। लेकिन जहां अपनी आत्मवत्ता को बेचने की बात आए, वहां सब दाव पर लगा देना और अपनी आत्मा का गौरव बचा लेना। तुम जो करना चाहते हो वह करो उसके लिए चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े। मरते वक्त प्राणों में यह असंतोष न रहे कि हमेशा लोगों के हिसाब से ही जिया, जो करना चाहता था वह नहीं किया। इसी संदर्भ में भवानी प्रसाद मिश्र की ये पंक्तियां प्रासंगिक लगती हैं।

तुम बंजर हो जाओगे
यदि इतने व्यवस्थित ढ़ँग से रहोगे
यदि इतने सोच समझकर
बोलोगे चलोगे,
कभी मन की नहीं कहोगे
सच को दबाकर झूठे प्रेम के गाने
गाओगे
तो मैं तुमसे कहता हूँ तुम बंजर हो
जाओगे।

कर और कर्तव्य

गौतम कुमार, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

भारत की उन्नति का आधार हैं हम,
राजस्व और नियम का आकार हैं हम।
करदाता की निष्ठा से खिलती है मुस्कान,
जीएसटी से सँवर रहा है अपना हिंदुस्तान।
यह केवल कर का संग्रह मात्र नहीं है,
देश के स्वाभिमान का पावन चरित्र है।
एक-एक अंश जो राजकोष में आता है,
वह सीमा पर सैनिक का संबल बन जाता है।
गाँव की पगडंडी से लेकर हाइवे के जाल तक,
गरीब की थाली से लेकर शिशु के प्रतिपाल तक।
जो भी विकास की नई इबारत लिखी जा रही,
वह करदाता के पावन संकल्प से आ रही।
ईमानदारी का मार्ग सबसे सुगम और साफ है,
छल-कपट के अंधेरे में समय की बर्बादी बेहिसाब है।
अब डिजिटल की शक्ति से पारदर्शी हुआ विधान है,
तकनीक और नियमों का यह सुंदर तालमेल महान है।
आओ मिलकर एक नया अध्याय शुरू करें,
संदेह के हर एक कुहासे को दूर करें।
अधिकारी और व्यापारी मिलकर हाथ बढ़ाएँ,
आओ देश को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाएँ।
'राजप्रभा' की रश्मियाँ फैलाएँ नव प्रकाश,
सहज, सरल, न्यायप्रिय हो अपना हर प्रयास।
कर्तव्य की राह पर कदम मिलकर बढ़ाएँगे,
हम सब मिलकर देश को परम वैभव पर पहुँचाएँगे।

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर में आयोजित जीएसटी दिवस समारोह–2026 की झलकियाँ

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर में आयोजित जीएसटी दिवस समारोह–2026 की झलकियाँ

सीमा शुल्क दिवस समारोह–2026

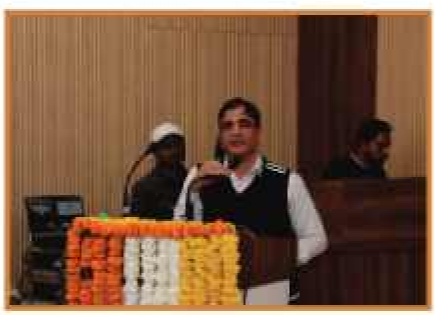

हां अक्सर लेट हो जाती हूँ मैं

ऋतु अग्रवाल, सेवानिवृत्त अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, ज़ोन-जयपुर, जयपुर

हाँ, अक्सर लेट हो जाती हूँ मैं
कभी ऑफिस पहुँचने में
कभी घर पहुँचने में
कभी बच्चे के स्कूल पहुँचने में
कभी बाज़ार जाने में
कभी वापस आने में
कभी रात को सोने में
कभी सुबह उठने में
हाँ, अक्सर लेट हो जाती हूँ मैं

सब नाराज़ रहते हैं मुझसे
किसी को टाइम पर दवा नहीं मिली
तो किसी को चाय टाइम पर नहीं
बच्चों की यूनिफार्म प्रेस नहीं हुई
या जूते पॉलिश नहीं हुए
कभी घर की सफाई ठीक नहीं
तो कभी खाना ठीक नहीं बना
हाँ कभी कुछ ठीक से नहीं कर पाती हूँ मैं
सब नाराज़ रहते हैं मुझसे

अब तो दिमाग भी नाराज़ रहता है मुझसे
कहता है मैं उसका ध्यान ही नहीं रखती
जाने कितनी बातें डाल कर रख देती हूँ उसमें
बहुत कुछ याद रखने को कह देती हूँ उससे
जब कुछ भूल जाता है
बहुत बिगड़ जाती हूँ उस पर
तब अक्सर बूढ़ा कह देती हूँ उसको

दुखती हुई हड्डियाँ भी बहुत कुछ कहती हैं मुझसे
पर अक्सर अनसुना कर देती हूँ मैं
छोड़ देती हूँ उनको यूँ ही दुखने के लिए

आज गई थी खुदा के घर फरियाद लेकर
तब पता चला
वह भी रुठा हुआ है मुझसे
बोला– आज याद आई है तुझे मेरी
कितनी ही बार भूल गई तू मन्नतें मानकर
मैंने भी बच्चा समझ कर छोड़ दिया
आज आई है वह भी फरियाद लेकर
कब से इंतजार था तेरा इतनी देर कहाँ कर दी
मैं क्या कहती ?
बस इतना बोली
हाँ, अक्सर लेट हो जाती हूँ मैं
हाँ अक्सर भूल जाती हूँ मैं

मेरा विभाग : एक राष्ट्र, एक परिवार

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

'राष्ट्र' शब्द सुनते ही मन में एक विशाल भूभाग, उसकी सीमाएँ, संविधान, संस्कृति, प्रशासन और करोड़ों नागरिकों की तस्वीर उभरती है। पर वर्षों की सेवा-यात्रा ने मुझे एक विचार पर बार-बार सोचने के लिए प्रेरित किया है कि क्या राष्ट्र की पहचान केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं से होती है?

यदि किसी व्यवस्था का अपना विधिक आधार हो, अपनी कार्य-संस्कृति हो, विविधताओं से भरा एक विशाल परिवार हो, अपना अनुशासन हो, अपनी आर्थिक भूमिका हो और सबसे बढ़कर ऐसा उद्देश्य हो जो हजारों लोगों को एक सूत्र में बाँध दे, तो क्या वह भी किसी राष्ट्र के स्वरूप का प्रतीक नहीं हो सकता?

इन्हीं अनुभवों से उपजा एक भाव है-मेरा विभाग भी एक राष्ट्र से कम नहीं।

यह केवल एक भावनात्मक कल्पना नहीं, बल्कि वर्षों की सेवा से प्राप्त अनुभूति है। इस दौरान मैंने देखा कि कैसे अलग-अलग प्रदेशों, भाषाओं, संस्कृतियों और जीवन अनुभवों से आए हुए लोग एक साझा उद्देश्य के लिए एक साथ कार्य करते हैं।

कोई राजस्थान की मिट्टी की सादगी लेकर आता है, तो कोई महाराष्ट्र की ऊर्जा, कोई दक्षिण भारत की अनुशासनप्रियता, तो कोई पूर्वोत्तर की सहज आत्मीयता। भाषाएँ अलग हैं, बोलियाँ अलग हैं, पर विभागीय परिवार में प्रवेश करते ही एक नया परिचय जन्म लेता है-हम सब एक ही उद्देश्य के साथी हैं। यही तो भारत की आत्मा है-अनेकता में एकता।

हर वर्ष कुछ नए चेहरे नई ऊर्जा लेकर आते हैं और कुछ अनुभवी साथी अपने अनुभवों की अमूल्य धरोहर सौंपकर आगे बढ़ जाते हैं। चेहरे बदलते रहते हैं, पर परिवार बना रहता है। यही किसी जीवंत संस्था की सबसे सुंदर पहचान होती है।

सरकारी सेवा ने मुझे एक पद दिया, पर इस विभाग ने मुझे एक परिवार दिया। और परिवार जब राष्ट्रहित को अपना धर्म बना ले, तो वह केवल संगठन नहीं रहता-एक जीवंत राष्ट्र बन जाता है।मेरे लिए यह विभाग केवल कार्यालयों और फाइलों का समूह नहीं है। यह एक ऐसा कर्मराष्ट्र है, जिसकी पहचान देशसेवार्थ कर-संचय के संकल्प से होती है।

मैंने अपने विचारों और अनुभवों में पाया कि इस विभाग का एक राष्ट्र के समान व्यापक स्वरूप है।हर राष्ट्र का अपना विधिक आधार होता है; हमारे विभाग का आधार भी मजबूत कानूनों और नियमों पर टिका है। हर राष्ट्र की अपनी प्रशासनिक व्यवस्था होती है; हमारे यहाँ भी जिम्मेदारियों और दायित्वों का स्पष्ट विभाजन है। राष्ट्र की सीमाएँ होती हैं; हमारे लिए वे सीमाएँ समुद्री बंदरगाहों, हवाई अड्डों, व्यापारिक मार्गों और उन सभी स्थानों तक विस्तृत हैं जहाँ से भारत की आर्थिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं।

यदि राष्ट्र को केवल भूगोल से परिभाषित किया जाये तो वह पूर्ण नहीं होगी, राष्ट्र एक भावना है जो असंख्य लोगो को एक पहचान देती है। हमारा विभाग, हमारा संगठन भी कुछ ऐसा ही है - नियमों एवं कर्त्तव्यों से संचालित एवं आत्मीय संबंधों से बंधे एक परिवार की तरह।

हमारे विभाग के पास कई विशाल भवन भी हैं और एक विशाल संगठन भी। किंतु उसकी वास्तविक विशालता उसके उद्देश्य में निहित है। और जब उद्देश्य राष्ट्रहित हो, तो कोई विभाग भी एक राष्ट्र के रूप में परिलक्षित होता है।

अब जब बात भवन की चल ही पड़ी है तो बस, मन की एक छोटी-सी कामना, मैं भी व्यक्त कर दूँ की काश कभी ऐसा ही एक बहुप्रतीक्षित विशाल, गरिमामय भवन हमारी सूर्यनगरी जोधपुर को भी मिले, ताकि यहाँ सेवा करने वाले कर्मयोगियों का गौरव भी उसी भव्यता में प्रतिबिंबित हो सके।

किसी भी जीवंत संगठन की पहचान केवल उसके कार्यों से नहीं, बल्कि उसके उत्सवों और संबंधों से भी होती है। जीएसटी दिवस, सांस्कृतिक आयोजन, खेल प्रतियोगिताएँ, सेवानिवृत्ति समारोह, पदोन्नति की खुशियाँ और नए साथियों का स्वागत, ये सब केवल कार्यक्रम नहीं होते, बल्कि उस आत्मीयता के अवसर होते हैं जो एक कार्यालय को परिवार में बदल देते हैं।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी नए व्यक्ति से मिलने पर अपने शहर, अपनी संस्कृति और अपने अनुभवों की बातें सहज ही साझा करता है, उसी प्रकार इस विभाग रूपी राष्ट्र के नागरिकों के पास भी अनुभवों का अपना एक संसार होता है। कोई अपनी पहली नियुक्ति की स्मृतियाँ सुनाता है, कोई किसी शहर की यादें बाँटता है, कोई वरिष्ठों से मिली सीख आगे बढ़ाता है और कोई साथियों के साथ बिताए अनमोल क्षणों को संजोता है। यही अनुभव एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचकर किसी संगठन को केवल कार्यस्थल नहीं रहने देते, बल्कि उसे एक भावनापूर्ण परिवार और राष्ट्र के स्वरूप में स्थापित करते हैं।

और ऐसे ही उत्सवों के बीच आता है वार्षिक जलसा या स्थानांतरण का मौसम।सरकारी सेवा का यह एक अनोखा अध्याय है। किसी के लिए यह नई संभावना का द्वार होता है, तो किसी के लिए पुरानी यादों को समेटने का अवसर। विदाई की चाय में मुस्कान भी होती है और स्मृतियों की मिठास भी। नए लोग आते हैं, नई ऊर्जा लाते हैं; पुराने साथी अपने अनुभवों की विरासत छोड़ जाते हैं। कोई अपना गृह नगर छोड़ कर उदास होता है जैसे कोई कुम्भ के मेले में बिछड़ गया हो तो कोई गृह नगर लौट कर खुश, जैसे परदेशी सैंयां को घर लौट आने का आशीर्वाद माता राणी से मिल गया हो।

जब मैंने इस राष्ट्र को आँकड़ों की दृष्टि से देखने का प्रयास किया, तो एक नई अनुभूति हुई। हमारे विभाग में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों की संख्या लगभग पचहत्तर से नब्बे हजार के आसपास है। यह केवल एक संख्या नहीं है। विश्व के मानचित्र पर देखें तो यह संख्या अनेक देशों की पूरी आबादी से भी अधिक है। ऐसे कई छोटे राष्ट्र हैं जिनकी जनसंख्या हमारे विभागीय परिवार से कम है।

इतना ही नहीं, इस विभाग की आर्थिक भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वस्तु एवं सेवा कर, सीमा शुल्क तथा अन्य अप्रत्यक्ष करों के माध्यम से प्राप्त राजस्व भारत के विकास की गति को मजबूत आधार प्रदान करता है। हमारा विभाग देश का सबसे ज्यादा राजस्व ग्रहण करने वाला, विभाग है, जो आज के दिन औसतन लगभग 2 लाख करोड़ रूपये मासिक राजस्व एकत्र करता है। यह राशि केवल सरकारी खाते में दर्ज होने वाला आँकड़ा नहीं है। इसके पीछे देश के विकास की अनेक कहानियाँ जुड़ी हैं–सड़कें, रेल, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और जन–कल्याण की अनगिनत योजनाएँ।

जब यह ज्ञात होता है कि हमारे विभाग द्वारा संग्रहित राजस्व, विश्व के अनेक देशों के पूरे वार्षिक बजट से भी अधिक है, तो मन में गर्व की अनुभूति होती है। तब समझ आता है कि हमारा दायित्व केवल कर संग्रह तक सीमित नहीं है; हम राष्ट्र निर्माण की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं।किसी राष्ट्र की महानता केवल उसके क्षेत्रफल या जनसंख्या से नहीं आँकी जाती, बल्कि उसके उद्देश्य और योगदान से होती है और ऐसे योगदान का हिस्सा होना अपने आप में गौरवान्वित करता है।

इस गौरव की सबसे पहली अनुभूति तब हुई थी जब, हर युवा मन की तरह, मेरे जीवन में भी एक सरकारी पद पर सेवा का एक सपना था, बस अंतर सिर्फ इतना था कि इस सपने से जुड़ा था – वर्दी पहनकर राष्ट्रसेवा करने का जूनून।वर्दी का आकर्षण केवल उसके स्वरूप में नहीं, बल्कि उससे जुड़े अनुशासन, सम्मान और कर्त्तव्य भावना में था। प्रयास भी हुए, विभिन्न सैन्य एवं अर्धसैनिक बल में नियुक्ति के रूप में अवसर भी आए, किंतु परिवार की परिस्थितियों और एकमात्र पुत्र होने के कारण माता–पिता के निर्णय ने जीवन की दिशा बदल दी।

किन्तु ईश्वर से सच्चे मन से जो मांगो, मिल जाता है, मुझे मिला ये केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क विभाग में सेवा के अवसर के रूप में, जहाँ वर्दी का गौरव एक नए रूप में प्राप्त हुआ–कर्त्तव्य, कानून और राष्ट्रहित की वर्दी।

निरीक्षक के रूप में मुंबई में नियुक्ति मिली, जो केवल एक शहर नहीं वरन भारत को समझने का एक विद्यालय था। वहाँ विभिन्न प्रदेशों से आए लोगों के साथ कार्य करते हुए महसूस हुआ कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी विविधता में

छिपी है। वहाँ जो मुझे अनुभव मिला उसी की दृष्टि ने बता दिया कि मेरा विभाग वास्तव में भारत का एक प्रतिबिंब है। गृहराज्य राजस्थान लौटने का अवसर मिला, जो केवल स्थान परिवर्तन नहीं था, बल्कि एक नई अनुभूति थी। फिर आया वह क्षण, जब लंबे इंतज़ार के बाद अधीक्षक पद पर पदोन्नति का अवसर मिला। यह केवल पद परिवर्तन नहीं था, बल्कि वर्षों के परिश्रम, धैर्य और विश्वास की सुखद परिणति थी।

उस समय सावन का मौसम था। बाहर हल्की फुहारें थीं। लगा, जैसे प्रकृति भी उस क्षण की साक्षी बनना चाहती हो। बादल बरसकर हल्के हो रहे थे और मन वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मिले संतोष से। कुछ खुशियाँ शोर नहीं करतीं, वे बस भीतर एक शांत उजाला भर देती हैं। ये सब भावनाएँ यहाँ व्यक्त करने का कारण भी यही है कि – ये सिर्फ नौकरी ही नहीं थी, वे क्षण थे जो जीवन और परिवार बनाते हैं।

सेवा यात्रा ने यह सिखाया कि किसी संस्था की वास्तविक शक्ति उसके भवनों और व्यवस्थाओं से आगे बढ़कर उसके लोगों और उद्देश्य में होती है। मेरी कामना है कि हमारा विभाग निरंतर प्रगति करे, और साथ ही अपने कर्मयोगियों के सम्मान, संतोष और विकास के नए आयाम स्थापित करे। जिस दिन प्रत्येक कर्मचारी और अधिकारी यह अनुभव करेगा कि वह केवल नौकरी नहीं कर रहा, बल्कि राष्ट्र निर्माण की यात्रा में सहभागी है, उस दिन इस संगठन की सफलता और भी पूर्ण होगी।

ऐसी सोच के साथ ही, मन में कश्मीर की सुंदरता के लिए प्रसिद्ध वह अमर फ़ारसी उक्ति गूँज उठती है–अगर फ़िरदौस बर रू–ए ज़मीं अस्त, हमीं अस्त–ओ, हमीं अस्त–ओ, हमीं अस्त। अर्थात् यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है। मेरी कामना है कि हमारा विभाग भी अपने कर्मयोगियों के लिए ऐसा ही गौरव और संतोष का स्थान बने क्योंकि कुछ राष्ट्र अपनी सीमाओं से पहचाने जाते हैं, कुछ अपने संबंधों से। जब उन संबंधों का आधार राष्ट्रहित हो, तो कोई विभाग भी एक जीवंत राष्ट्र बन जाता है।

और अंत में यदि कोई पूछे कि इस यात्रा में क्या पाया, तो शायद उत्तर होगा – कुछ राष्ट्र मानचित्र पर बसते हैं, कुछ मन में। सौभाग्य से मुझे जीवन में दोनों की सेवा करने का अवसर मिला।

कभी मेहनत, कभी गौरव, कभी
सीख, कभी अनुराग,
सिर्फ आजीविका नहीं, है मेरा
हमसफ़र और पराग ।
कभी नौकरी, कभी परिवार, कभी
कानून, कभी राग,
मेरा स्वाभिमान, मेरा कर्म–राष्ट्र है
यह विभाग ।।

अनिश्चितता खूबसूरत है

ऋतु अग्रवाल, सेवानिवृत्त अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, ज़ोन-जयपुर, जयपुर

अनिश्चितता बहुत ही खूबसूरत चीज होती है !! शायद आप सहमत नहीं होंगे। मैं बताती हूँ कैसे?

शिकागो से जयपुर आते समय इराक़ इज़राइल युद्ध के चलते मुझे अबुधाबी से जयपुर की फ्लाइट नहीं मिली सभी एयर पोर्ट्स बंद कर दिए गए थे। शुरुआत में 24 घंटे के लिए फिर कभी 12 कभी 24 घंटे एक्सटेंड करते रहे। मिसाइल अटैक लगातार होते रहे कभी दिन में तो कभी रात में धमाकों की आवाजें आती रहीं। अबुधाबी में फँसे हुए सभी यात्रियों को होटल में रुकवा दिया गया था। परन्तु अनिश्चितता सभी पर हावी थी कि कब एयरस्पेस खुलेगा? फिर लगभग दो दिन के बाद कुछ फ्लाइट्स उड़ान भरने लगीं तो लगा हमारी भी कभी भी जा सकती है पर कब?! ये कहना संभव नहीं था, ना हमारे लिए ना एयरलाइंस के लिए, वे भी सरकार के निर्देशानुसार चल रहे थे।

इस अनिश्चितता के चलते मैं अपना सभी सामान लगभग हमेशा पैक करके रखती कि जब भी कहेंगे पाँच मिनिट में निकलने की स्थिति में रहूँ। इस समय मैंने ये सीखा -

1. **(BE AS LIGHT AS POSSIBLE)** ज़िंदगी भी अनिश्चित है फिर हम इस सफ़र पर क्यों ज़्यादा सामान इकट्ठा करते हैं जितना कम सामान उतना आसान सफ़र फिर चाहे वो जीवन यात्रा हो या एक यात्रा ।
2. **(KEEP YOUR LUGGAGE PACKED)** रोज़ के काम रोज़ निपटा कर ऐसे सोना कि कल को हमें किसी और सफ़र पर निकलना पड़े तो कोई काम पीछे ना छूटे।
3. **(NOTHING IS PERPETUAL)** मृत्यु अवश्यंभावी है और दिल से मौत का डर निकाल देना, ये बात इतनी महत्वपूर्ण है कि यदि आप ये कर पाते हैं तो मान कर चलिए आप ज़िंदगी में जीते जी मोक्ष की प्राप्ति कर लेते हैं। फिर आपको किसी चीज का भय नहीं सताता।

ये तीन बातें आत्मसात होने के बाद जब आप ऐसी जगह क़ैद हो जाते हैं जहाँ आपको कोई काम नहीं है, किसी को कोई जवाब नहीं देना तब आपकी सुबह बहुत हल्की हो जाती हैं। अबुधाबी में बिताई हुई ऐसी ही सात सुबहें मेरी ज़िंदगी की सबसे खूबसूरत सुबहें बन गईं । इस तरह मुझे uncertainty से प्यार हो गया।

वो दिन भी होगा जब हम
तेरी ज़ब्त से आज़ाद होंगे,

पर हम तो तेरे पहलू में
उम्रक़ैद चाहते हैं ।

अब मेरी कोशिश रहेगी कि मेरी ज़िंदगी की बची हुई सभी सुबहें इतनी ही खूबसूरत और हल्की हों ।

तो अनिश्चितता बुरी नहीं होती बल्कि उसको समझकर तदनुसार व्यवहार करने वाले को ही यह समझ आएगा कि यह एक बहुत सुंदर चीज है।

अब मेरी कहानी

आपको अपनी ज़िंदगी की ऐसी कितनी बातें याद हैं जो आपकी ज़िंदगी का रोज़मर्रा का हिस्सा हो? जो बिना किसी उतार चढ़ाव के होती रहती है ना कुछ बहुत अच्छा न कुछ बहुत बुरा! शायद बहुत ही कम बातें आपको याद होंगी। हमारा दिमाग़ बहुत कुछ याद रखता है परन्तु फिर भी उसमें stamp उन्हीं बातों की लगती है जो आपकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी से हटकर हों। ज़िंदगी अच्छे से जीने के लिए किक की ज़रूरत होती है वो किक हमें घर बैठे मिलना मुश्किल होती है शायद इसीलिए लोग घूमने जाते हैं वहाँ उन्हें कुछ खट्टे मीठे कड़वे एक्सपीरियंस होते हैं जो हमारी फीकी सी ज़िंदगी में मसालों का काम करते है ।

अब मेरी कहानी

मैं 27 फ़रवरी को Chicago से रवाना हुई और 28 फ़रवरी को दोपहर आबूधाबी मैं land हुई। land होते ही पता चला ईरान ने US बेस कैम्प जो आबूधाबी में हैं पर अटैक कर दिया है और सभी उड़ानें suspend कर दी गई है। Air space बंद कर दिया गया है। उसके बाद जो नज़ारा एयरपोर्ट पर था वो शायद मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी। क्योंकि वो रूटीन से हटकर था हज़ारों लोगों की भीड़ हर जगह लंबी क़तारें! लंबी यानी लगभग आधा kilometre लंबी!!! और 1-2 नहीं चार पाँच अलग अलग क़तारें! इमीग्रेशन की वीज़ा ऑन अराइवल वाली लाइन इन सभी में winner रही। फिर hotel बुकिंग, टैक्सी के लिए लंबी क़तार और फिर hotel check in के लिए भी एक घंटा इंतज़ार। इन सबसे ऊपर अपना सामान खोजना!! हज़ारों सूटकेसेस में अपना सूटकेस ढूँढ लाना सागर में से मोती ढूँढने जैसा था! अपने आप में है एक Unique experience! हर जगह भीड़ परंतु बहुत ही सभ्य भीड़, कोई धक्का मुक्की नहीं कोई हल्ला गुल्ला नहीं!! सभी शांति से लाइनों में लगे हैं और इन सबसे ऊपर जिस तरह है आबूधाबी मैं इसे मैनेज किया गया वो मेरे लिए लाइफटाइम एक्सपीरियंस रहा। बहुत ख़ूबसूरती के साथ इसे मैनेज किया गया आबूधाबी के सभी resources इस परेशानी की घड़ी से उबरने के लिए लगा दिए गए। सभी क़तारों को पार करने में मुझे लगभग 6 घंटे का समय लगा और एयरपोर्ट पर 9 किलोमीटर का सफ़र तय किया। रात को इतना थकने के बाद सुकून से सोना भी एक अच्छा अनुभव रहा। यद्यपि रात को कुछ धमाकों की आवाज़ों से नींद खुली फिर शायद पुलिस/एम्बुलेंस की गाड़ियों की आवाज़ सुनाई दी परंतु नींद इन सब पर हावी रही।

अभी आबूधाबी के एक होटल के कमरे में बंद, ज़िंदगी के कुछ पल चुरा कर बैठी हूँ और ये पोस्ट लिख रही हूँ।

गुनगुना रही हूँ (रात भर आपकी याद आती रही तर्ज़ पर)

रात भर धमाकों की आवाज़ आती रही
रात भर
मैं सोती रही रात भर
ज़िंदगी मेरे पहलू में कुनमुनाती रही
रात भर
और मैं सोती रही रात भर

चारवी शर्मा, पुत्री श्री प्रवीण शर्मा,अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर

मंजिल जो मिल न सकी

एक छोटा सा सवेरा,
एक प्यारी सी सुबह
पर आज...वह पंछी नहीं रहा !
जिसकी उम्मीद तो थी आसमान को छूना ,
पर छू ना पाया उसका एक छोटा सा भी कोना
यहाँ वहाँ भटक रहा था घर की तलाश में, यहाँ वहाँ भटक रहा था घर की तलाश में,
पर आज आसमान से गिरा एक जिंदा लाश में!
करीब से देखा तो दर्द में था ,
वह बेचारा अभी भी किसी के कर्ज में था।
ताकत भले ही नहीं रही पर एक हौसला जरूर था!
उसके पास अपने सपनों का घोंसला जरूर था ।
अभी भी थी हिम्मत उड़ने की चाह थी उसकी आँखों के आगे उसकी मंजिल की राह थी।
उठ तो गया था, पर उड़ नहीं पाया
अपने सपनों का जहाँ वह बुन नहीं पाया !
जिसकी उम्मीद तो थी आसमान को छूना ,
पर छू ना पाया उसका एक छोटा सा भी कोना ।
आखिर में छोड़ गया वह यह प्यारा सा जहाँ, पर बुन न पाया अपना सपना वो यहाँ
आँखें खुली रह गई... निराशा बनी रह गई...
वह मंजिल जो उसकी थी वह वहीं रह गई
शायद वो ही नहीं उसकी मंजिल भी उसे ढूँढती रह गई
उसे ढूँढती रह गई...

पहलगाम

एक तरफ मेंहदी पर,
रंग लाल चढ़ा था
एक तरफ शरीर पर
रंग लाल लगा था
फर्क सिर्फ इतना था कि,
एक रंग प्रेम की दीवानी पर था
और एक,
देश की कुर्बानी पर था।
एक तरफ बच्चे खुश थे
एक तरफ बच्चे रो रहे थे
फर्क सिर्फ इतना था कि,
कुछ घर में थे,
और कुछ, बेघर हो रहे थे।
एक तरफ लड़ियाँ लग रही थी
एक तरफ लकड़ियाँ चढ़ रही थी
फर्क सिर्फ इतना था कि,
एक घर शादी में था, और
दूसरा बर्बादी में था।
एक तरफ भगवान की मेहर थी,
एक तरफ खून की लहर थी-2
इतने फर्क से भी,
किसको फर्क न पड़ा

जब तक उनके खुदके, किसी पर
रंग लाल न चढ़ा।
आज फिर वही युद्ध हुआ है
जहाँ किसीने अपना बेटा
तो किसीने अपना शौहर खोया है।
आज फिर वही युद्ध हुआ है
जहाँ एक शहर लाशे बिछ गई
और एक शहर,
अंदाजा भी न लगा हैं
अभी भी उन आँखों में
आँसू पूरे भरे हैं,
जिंदा होते हुआ भी
लोग अंदर से मरे है।
जिन्नाह ने सही कहा था कि,
करनी होगी तुम्हें अपनी साबित पहचान-2
नहीं तो कर देना अपनी जान कुर्बान!...
आज... हो गई है जाने कुर्बान,
नहीं छुपाई किसीने अपनी पहचान
सलाम है! उन शहीदों को,
जिन्होंने करी है अपनी जाने कुर्बान
सलाम है! उन शहीदों को,
जिन्होंने गर्व से कहा था
हिंदू है मेरी पहचान!

क्यूँ?

क्यूँ? एक स्त्री को अपने ख्वाब छोड़ने पड़ते हैं?
क्यूँ? परिवार के लिए पढ़ाई से रिश्ते तोड़ने पड़ते हैं?
कहते तो हम उसे माँ दुर्गा, माँ सरस्वती है
पर क्या असल में उसको इतनी इज्जत भी मिली है?
लोग कहते हैं, लड़की है क्या ही करेगी?
अरे! एक बार मौका देकर तो देखो
तुमसे दो कदम आगे ही बढ़ेगी...
इस दुनिया की बातों ने उसे इतना रुलाया है
इस दुनिया की बातों ने उसे इतना रुलाया है
कि जितना तो हिमालय ने पानी भी न बहाया है
जब बाहर जाती है तो रोक दिया जाता है,
हर बात पर उसे टोक दिया जाता है
लड़की हो, तेज मत बोलो !
लड़की हो ढंग से बैठो, ज्यादा ना एठो!
इतना सुनकर भी चेहरे पर मुस्कान रखती है
अपने परिवार में अपनी जान रखती है
उसके भी सपने हैं, उसके भी अरमान है
वह भी कुछ करना चाहती है
यह उसकी पहचान है।
कमजोर नहीं बलवान है!
उसका परिवार उसकी पहचान है।
पर एक समय ऐसा भी आता है
जब उसे अपना परिवार छोड़
किसी दूसरे के घर जाना पड़ जाता है
जहाँ वह बिना कुछ बोले ,
बिना कुछ कहे, पूरी जिंदगी बिता देती है।
अपने सपने वह अरमानों को
अपने अंदर ही दफना लेती है!
और फिर आखरी में कहती है...
क्यूँ? क्यूँ? मुझे स्त्री बनाया?
क्यूँ? मुझे ही इतना संघर्ष करवाया?
क्यूँ? मुझसे ही इतना संघर्ष करवाया...?

माँ

शारदा जेटली, माताजी श्री दीपक जेटली, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक),आयुक्तालय,जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर

जीवन में रिश्तों का बड़ा महत्व है, माँ-बेटी का रिश्ता, माँ-बेटे का रिश्ता,
मैं आपको माँ-बेटे के रिश्ते के संबंध में कुछ पंक्तियां लिख रही हूँ:-

बेटा अपनी माँ से कहता है,
माँ, चाहे कितना भी तुम्हें सम्मान दूँ
और परोस कर रख दूँ छप्पन भोग,
अनगिनत पकवान, दुनिया भर के स्वादिष्ट व्यंजन,
लेकिन तेरे पहले कोर का हिसाब नहीं चुका पाऊँगा मैं।,

माँ तेरे हाथों से खाया दाल-भात,
माखन-रोटी खीर और दलिया, दूध से भरी कटोरी-
चम्मच-चम्मच कर, घूँट-घूँट तेरा मेरे मुँह में डालना घंटों,
और मेरा नन्हें हाथों से उसे गिरा देना,
उसका हिसाब, नहीं चुका पाऊंगा मैं।

कितना भी
दूध-छाछ और गुलाब शरबत पिलाऊँ मैं तुझे ला-ला कर,
फिर भी तेरे सीने के अमृत का हिसाब नहीं चुका पाऊँगा मैं।
माँ, मैं तेरे बुढ़ापे की लाठी बनू, सहारा दूँ चाहे कितना भी तुझे,
पर मेरे ठुमक- ठुमक के चलते हुए गिरने से पहले ही मुझे थाम लेना।
उस सहारे का हिसाब नहीं चुका पाऊँगा मैं।

माँ, तू वृद्धा हो गई, मगर आज भी चोटिल में होता हूँ मैं
दृग बिंदु तेरे नैनों से बहते हैं।
तू सदा सुखी रहे यह शब्द हर पल तेरे अधरों पर रहते हैं।

माँ, तू मेरा मान है, सम्मान है,
तू मेरा स्वाभिमान है,
तू मेरी शान है
क्योंकि तू भारत की नारी है,
तेरे ऊपर हजारों जन्म वारी हैं,
तू मेरी माँ जो कभी नहीं हारी है,
तू मुझे सबसे प्यारी है।

अगर मैं नहीं होता

प्रशांत पूनिया, निरीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर

सफेद बाल देखता हूँ जब उसके मैं
सहसा सहम जाता हूँ, खुद को बेकाबू पाता हूँ

बेधड़क चलता होगा कभी, यह भी अपनी मौज में,
रोज संघर्ष करता है आज, मेरे भविष्य की खोज में।

सोचता हूँ कहां से आती होगी, यह जिजीविषा एवं जीवंतता,
रिश्ता जो विश्वास की देन है फिर भी प्रतिबद्ध निरंतरता!

कभी सोचता हूँ एक वायदे के लिए होम दी जवानी यूं ही
मुझे ऐसे ही छोड़ सकता था कितने ही तो पल जाते है यूं ही

फूल देखने की उमर में खरीदता होगा मेरे लिए फल कोई इसकी
अपनी भुला कर, ढूंढता होगा मेरी दुविधा का हल कोई

ज्यादती तो नहीं कर दी पैदा होकर मैंने कोई?
मेरी पैदाईश से ही तो नहीं इसकी किस्मत सोई ?

कैसी होती वो जिंदगी जिस में मैं न होता
न संघर्ष हर दिन का न यह अपना स्वत्व खोता

न दुख तन मन कान मोह न भय जग का
कैसे बिताई है इसने अपनी जिंदगी, कैसी सही है मेरे लिए बंदगी

धूप छांव हेमंत बहार के परे हर मौसम हर पहर में हर उफान
हर लहर में

आज बिताता है जिंदगी अलग थलग उँह तक नहीं करता
किसी कहर में

न होते बाल सफेद कम उमर में न रोज हारता यह
जीवन समर में

न बीमारी जुड़ती कोई हृदय से न रात में नींद खुलती
किसी भय से

शायद घूमता दुनिया देखता इस संसार को
अपने दिल से महसूस करता हर बहार को

फिर सोचता हूँ शायद मैं मुराद हूँ मेरे हंसी में ढूंढते होंगे
उम्मीद अपने कल की
मैं शायद धुरी हूँ इनके जीवन की मुझसे शायद सार्थकता
जुड़ी है इनकी

होने जाना और अचानक आ जाना परे था मेरे सामर्थ्य से
पर ऋण चुकाना कर्म है मेरा देकर प्राण चाहे अर्ध्य में

सोचता हूँ कहाँ क्या होता यह सोचता हूँ क्या पाता क्या
खोता यह
मेरी आँखों में देखे जब वो खुद को साफ छवि दिखे बिना
खोए सुध को

सोचे यही तो बनना था बिना गुम हुए
मैं ना सही पर अच्छी बात है तुम हुए

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस-2026 की झलकियाँ

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस–2026 की झलकियाँ

जोधपुर स्थित कार्यालयों द्वारा आयोजित योग दिवस – 2026 की झलकियाँ

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर द्वारा स्वच्छता दिवस 2025 के अन्तर्गत 22 गोदाम जयपुर स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में साफ-सफाई का कार्यक्रम आयोजित किया गया

आबू पर्वत : भारत की सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं का जीवित इतिहास

उमेश कुमार शर्मा, कर सहायक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

पर्वत केवल चट्टानों का समूह नहीं होते, वे समय के प्रहरी होते हैं। वे उन सभ्यताओं के साक्षी हैं जो जन्मीं, विकसित हुईं और इतिहास बन गईं। यदि भारत में किसी पर्वत ने करोड़ों वर्षों का इतिहास अपने भीतर समेट रखा है, तो उनमें आबू पर्वत का स्थान अत्यंत विशिष्ट है।

राजस्थान का नाम लेते ही प्रायः मरुभूमि, ऊँट और रेत के विशाल विस्तार की छवि उभरती है। किंतु यही राजस्थान एक ऐसे पर्वत को भी अपने आँचल में समेटे हुए है जिसने न केवल इस राज्य की भौगोलिक पहचान को संतुलित किया है, बल्कि भारतीय संस्कृति, धर्म, स्थापत्य, पर्यावरण तथा प्रशासनिक इतिहास को भी गहराई से प्रभावित किया। वह पर्वत है–आबू पर्वत, जिसे प्राचीन ग्रंथों में अर्बुदाचल कहा गया है।

क्या आप जानते हैं ?

जब हिमालय का अस्तित्व भी नहीं था, तब अरावली पर्वतमाला पृथ्वी पर विद्यमान थी। भूवैज्ञानिकों के अनुसार अरावली विश्व की सर्वाधिक प्राचीन पर्वतमालाओं में से एक है, जिसकी आयु लगभग 1.5 से 2 अरब वर्ष आँकी जाती है। इसी प्राचीन पर्वतमाला का सर्वोच्च भाग है आबू पर्वत।

इस दृष्टि से जब कोई व्यक्ति गुरु शिखर पर खड़ा होता है, तो वह केवल एक पहाड़ी पर नहीं, बल्कि पृथ्वी के अत्यंत प्राचीन भूवैज्ञानिक इतिहास के ऊपर खड़ा होता है।

''अर्बुदाचल'' नाम के पीछे की परंपरा

संस्कृत साहित्य, विशेषकर पुराणों में इस क्षेत्र का उल्लेख अर्बुदाचल के रूप में मिलता है। लोक-परम्परा के अनुसार नागराज अर्बुद से इसका संबंध माना जाता है। विद्वानों का मत है कि समय के साथ अर्बुद शब्द बोलचाल में परिवर्तित होकर आबू बन गया।

यह उल्लेखनीय है कि इतिहास और लोककथा दोनों किसी स्थान की सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा होते हैं। आबू पर्वत इसी समृद्ध परंपरा का जीवंत उदाहरण है।

ऋषियों की तपोभूमि

भारतीय परम्परा में आबू पर्वत केवल प्राकृतिक सौन्दर्य का स्थल नहीं, बल्कि ज्ञान और तपस्या की भूमि माना गया है। महर्षि वशिष्ठ से जुड़ी परम्पराएँ, गौमुख, प्राचीन आश्रमों के उल्लेख तथा अनेक धार्मिक स्थलों की उपस्थिति इस क्षेत्र की आध्यात्मिक विरासत को दर्शाती है।

शायद यही कारण है कि आज भी यहाँ पहुँचने वाला व्यक्ति केवल ठंडी हवा ही नहीं, बल्कि एक विशेष प्रकार की मानसिक शांति का अनुभव करता है।

भारत की अद्‌भुत शिल्पकला का शिखर :

यदि किसी एक भवन में भारतीय शिल्पियों की कल्पनाशक्ति, धैर्य और तकनीकी दक्षता को देखना हो, तो दिलवाड़ा जैन मंदिरों से बेहतर उदाहरण शायद ही मिले।

एक रोचक तथ्य यह है कि संगमरमर की कुछ नक्काशियाँ इतनी महीन हैं कि पहली दृष्टि में विश्वास ही नहीं होता कि वे पत्थर पर निर्मित हैं। आधुनिक उपकरणों के अभाव में लगभग एक हजार वर्ष पूर्व ऐसी कला का सृजन मानव प्रतिभा की अद्वितीय उपलब्धि है।

क्या वास्तव में यह केवल पर्यटन स्थल है ?

आबू पर्वत की पहचान प्रायः एक हिल स्टेशन के रूप में की जाती है, परंतु यह उसकी सबसे छोटी पहचान है।

यह एक प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्र है।

यह जैव विविधता का सुरक्षित आश्रय है।

यह दुर्लभ औषधीय वनस्पतियों का निवास है।

यह राजस्थान की सबसे अधिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में सम्मिलित है।

यह अनेक पक्षियों, तितलियों तथा वन्य जीवों का प्राकृतिक आवास है।

वास्तव में, आबू पर्वत राजस्थान के पर्यावरणीय संतुलन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है।

अंग्रेजों ने क्यों चुना आबू?

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश प्रशासन ने आबू पर्वत को केवल उसके मौसम के कारण नहीं अपनाया था।

उस समय यह स्थान राजपूताना एजेंसी का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय बनाया गया। अंग्रेज अधिकारी गर्मियों में यहीं से अनेक प्रशासनिक निर्णय लिया करते थे। आज भी अनेक औपनिवेशिक भवन उस इतिहास की मौन गवाही देते हैं।

यह तथ्य बताता है कि आबू पर्वत का महत्त्व केवल धार्मिक या पर्यटन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्रशासनिक दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

राजस्थान का प्राकृतिक जल बैंक

यदि अरावली पर्वतमाला न हो, तो राजस्थान के अनेक क्षेत्रों की जल व्यवस्था गंभीर रूप से प्रभावित हो सकती है।

आबू पर्वत पर होने वाली वर्षा का एक बड़ा भाग भूमि के भीतर जाकर भूजल का पुनर्भरण करता है। यही कारण है कि आसपास के क्षेत्रों के अनेक जलस्रोत इस पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

आज जब जल संरक्षण राष्ट्रीय प्राथमिकता बन चुका है, तब आबू पर्वत का महत्त्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है।

प्रकृति का मौन विश्वविद्यालय

आबू पर्वत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ प्रकृति स्वयं शिक्षक बन जाती है।

एक वनस्पति वैज्ञानिक को यहाँ जैव विविधता दिखाई देती है।

एक भूवैज्ञानिक को करोड़ों वर्षों का इतिहास दिखाई देता है।

एक इतिहासकार को प्राचीन सभ्यता के प्रमाण दिखाई देते हैं।

एक स्थापत्य विशेषज्ञ को भारतीय शिल्पकला की पराकाष्ठा दिखाई देती है।

एक पर्यावरणविद् को भविष्य का समाधान दिखाई देता है।

और एक सामान्य पर्यटक को केवल सुंदर दृश्य दिखाई देते हैं।

वास्तव में, आबू पर्वत हर व्यक्ति को उसकी दृष्टि के अनुसार अपना परिचय देता है।

भविष्य की चुनौती

आज आबू पर्वत अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। अनियंत्रित पर्यटन, प्लास्टिक प्रदूषण, जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव तथा पर्यावरणीय परिवर्तन इसके प्राकृतिक स्वरूप को प्रभावित कर रहे हैं।

यदि समय रहते संरक्षण के प्रभावी उपाय नहीं किए गए, तो आने वाली पीढ़ियों उस प्राकृतिक सौन्दर्य को केवल पुस्तकों और चित्रों में ही देख पाएँगी, जिसे आज हम प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

जब भी हम आबू पर्वत की ओर देखें, तो उसे केवल एक पर्यटन स्थल के रूप में नहीं, बल्कि करोड़ों वर्षों की प्राकृतिक विरासत, हजारों वर्षों की सांस्कृतिक चेतना और भविष्य की पर्यावरणीय आशा के रूप में देखें। यही दृष्टिकोण आबू पर्वत को वास्तव में समझने की पहली सीढ़ी है।

नश्तर

दीपक पंजाबी, सेवानिवृत्त अधीक्षक, का.मु.आ., केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर

उनके शौक़-ए-गुरूर को एक माक़ूल सा पैगाम दिया जाए
चलो सुबह होने तक कुछ रिश्तों को तमाम किया जाये

मासूमियत की गर्द से ढक डाला अपनी रंगीन तबियत को
अरसे हुए परखे हुए अपनी शौक़ीन कैफ़ियत को

वक़्त आया के अपनी फितरत का चर्चा आम किया जाये
चलो सुबह होने तक कुछ रिश्तों को तमाम किया जाये

नाता-ए-उल्फत ने हमको इस कदर उलझा डाला
हस्ती को अपनी भूल गए ओ वजूद को बहका डाला

आईने में रूबरू अपने तखल्लुस से सलाम लिया जाये
चलो सुबह होने तक कुछ रिश्तों को तमाम किया जाये

बहुत सुनते थे मोहब्बत में बन्दों के बंदगी भूलने के किस्से
अब मलाल नहीं कि वक़्त ने कुछ दर्द ना दिया अपने हिस्से

चंद कागज़ के कतरों पर लिखी इबारत को सुपुर्दे जाम किया जाये
चलो सुबह होने तक कुछ रिश्तों को तमाम किया जाये

जो ये रिश्ते ना रहे तो शायद हम भी ना रहेंगे
लफ़्ज़ों को होठो से सिले और कुछ ना कहेंगे

रंजन हीं जो उनकी यादों के पहलू में जहर का जाम पिया जाये
चलो सुबह होने तक कुछ रिश्तों को तमाम किया जाये

एक दीपक 'जलता सा'

तुम मिले

बेनूर से दिन, बेकस सी रात
बे क़द्र से लोग, बे ढब से खयालात

कुछ इस कदर थी ज़िन्दगी तुम्हारे आने तक
सुबह की मंज़िल थी पहर के डूब जाने तक

दरख्तों से झड़ते से पत्ते, मुरझाते से फूल
स्याह सी राहों में काँटों के शूल

तुम्हारे आने की दस्तक से बहार आयी है
तपती सी रेत पे ज्यों बारिश की फुहार आई है

हर कदम पर जैसे फिजाएँ जगमगा रही
सुनहरी किरणें बादलों की ओट से झिलमिला रही

अब आ गई हो जाने का नाम ना लेना
मेरे सिवा किसी और की मोहब्बत का पैगाम ना लेना

जहाँ से दूर गए हैं, कुछ है अगर अब दिल के पास
तुम्हारी यादें, तुम्हारी बातें, तुम्हारी आवाज़, तुम्हारा अहसास

एक दीपक 'जलता सा'

अपना-अपना अफसाना

वक़्त से वक़्त की दौड़ में
हम कितने नादान हैं

उनके सदियों के वादे
हम लम्हों पर कुर्बान हैं

माना के है वक़्त मुफलिसी का
फिर भी दिल में रईसी अरमान हैं

ज़िन्दगी के फलसफे अब समझ आते हैं हमको
हमें जो अपना कहा करते थे, अब रकीबों के गुलफाम हैं

याद आएंगे हम भी किसी दिन बेकसी में
तब तक देखो, उनको भी कहाँ आराम है

जो समंदर पी जाने का करते थे वादा
वो ओस की बूंदों से हलकान हैं

अब इसे मुकद्दर कहो या इन्साफ ए खुदा
उनके पास घर है और हमारे पास सामान है

एक दीपक 'जलता सा'

'नौकरी'

श्रीफल मीना, कर सहायक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

बड़ी हसीन होगी तू ऐ! नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

सुख-चैन खोकर चटाई पर सोकर
सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं
दिन में तहरी और रात को मैगी
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

अंजान शहर में छोटा सस्ता रुम लेकर
किचन, बेडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप और
दोस्ती से दूर रहते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

राशन की गठरी सिर पे उठाये
अपनी मायूसी और मजबूरियाँ खुद ही
छुपाये खचाखच भरी ट्रेन में बिना
टिकट के रिस्क लेके आज सफ़र करते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

इन्टरनेट, अखबारों में तुझको तलाशते
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते-पढ़ते
बत्तीस साल तक के जवान कुंवारे फिरते हैं
तू कितनी हसीन है ऐ! नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।।

मेरी सिक्किम यात्रा : प्रकृति की गोद में अविस्मरणीय क्षण

नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

यात्राएँ केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का माध्यम नहीं होतीं, बल्कि वे जीवन को नए अनुभवों, नई संवेदनाओं और नई दृष्टि से समृद्ध करती हैं।वर्ष 2022 में मुझे अवकाश यात्रा रियायत (एल.टी.सी.) के अंतर्गत भारत के मनोहारी पर्वतीय राज्य सिक्किम की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लंबे समय से हिमालय की सुरम्य वादियों, बर्फ से आच्छादित पर्वतों और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस प्रदेश को देखने की इच्छा थी। यह मेरे लिए केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं थी, बल्कि हिमालय की गोद में बसे उस अद्भुत प्रदेश को निकट से देखने और प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का साक्षात्कार करने का एक बहुप्रतीक्षित सपना साकार होने जैसा अनुभव था।

सिक्किम की यात्रा का उत्साह अपने चरम पर था। यात्रा की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं और मन हिमालय की मनोरम वादियों में पहुँचने को उत्सुक था। किंतु प्रस्थान से ठीक पहले मौसम ने अप्रत्याशित मोड़ ले लिया। लगातार हो रही वर्षा और खराब मौसम के कारण उड़ानों के रद्द होने की खबरें आने लगीं। हर कुछ मिनट में मोबाइल पर उड़ान की स्थिति देखना मानो दिनचर्या बन गया था। मन में एक ही प्रश्न था–क्या यह बहुप्रतीक्षित यात्रा अधूरी रह जाएगी ?

कुछ समय तक अनिश्चितता बनी रही, लेकिन अंततः मौसम ने करवट ली और यात्रा का मार्ग प्रशस्त हो गया। जैसे ही उड़ान ने आकाश की ओर उड़ान भरी, मन का सारा तनाव दूर हो गया। उस क्षण यह एहसास हुआ कि किसी सुंदर यात्रा का आनंद तभी और बढ़ जाता है, जब उसे पाने के लिए थोड़ी प्रतीक्षा और धैर्य का साथ निभाना पड़े। शायद यही कारण है कि सिक्किम की वह यात्रा केवल एक पर्यटन अनुभव नहीं रही, बल्कि धैर्य, आशा और विश्वास का भी एक अविस्मरणीय अध्याय बन गई।

सिक्किम पहुँचते ही सबसे पहले जिसने मेरा मन मोह लिया, वह था वहाँ का निर्मल वातावरण। चारों ओर फैली हरियाली, ऊँचे-ऊँचे पर्वत, बादलों से घिरी घाटियाँ और कल-कल करती नदियाँ ऐसा प्रतीत कराती थीं मानो प्रकृति ने अपनी समस्त सुंदरता यहीं समेट दी हो। शहरों की भागदौड़ और शोर-शराबे से दूर यह शांत वातावरण मन को अद्भुत सुकून प्रदान कर रहा था। हिमालय की गोद में बसा सिक्किम अपनी प्राकृतिक सुंदरता, स्वच्छ वातावरण, अनुशासित जीवनशैली और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के कारण देश के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में गिना जाता है।

मेरी यात्रा का पहला प्रमुख पड़ाव गंगटोक था। साफ-सुथरी सड़कें, व्यवस्थित यातायात और अनुशासित नागरिकों ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। यहाँ की प्रसिद्ध एम.जी. मार्ग पर टहलना अपने आप में एक सुखद अनुभव था। सड़क के दोनों ओर सजे आकर्षक कैफे, स्थानीय हस्तशिल्प की दुकानें और मुस्कुराते हुए लोग इस स्थान की आत्मीयता को और बढ़ा रहे थे। शाम के समय जगमगाती रोशनी और पर्वतीय हवा ने उस क्षण को और भी यादगार बना दिया।

नाथू ला दर्रे की यात्रा मेरे लिए अत्यंत रोमांचकारी रही। भारत-चीन सीमा के निकट स्थित यह स्थान केवल प्राकृतिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि देश की सुरक्षा में तैनात हमारे वीर सैनिकों के साहस और समर्पण का भी साक्षी है। प्रतिकूल मौसम और कठिन परिस्थितियों में देश की रक्षा करते सैनिकों को देखकर मन गर्व से भर उठा। उस क्षण राष्ट्रप्रेम की भावना और भी प्रबल हो गई।

सिक्किम यात्रा का सबसे रोमांचक और अविस्मरणीय पड़ाव जीरो प्वाइंट था। समुद्र तल से लगभग 15,300 फीट

की ऊँचाई पर स्थित यह स्थान हिमालय की विराटता और प्रकृति की अद्भुत छटा का सजीव उदाहरण है। यहाँ पहुँचते ही ऐसा लगा मानो हम बादलों के संसार में प्रवेश कर गए हों। चारों ओर बर्फ से ढकी पर्वत-श्रृंखलाएँ, बर्फ की सफेद चादर से आच्छादित धरती और दूर-दूर तक फैली नीरवता मन को एक अनोखी शांति से भर देती है। ऊँचाई अधिक होने के कारण हवा अत्यंत शीतल थी। साँस लेते समय हल्की कठिनाई अवश्य महसूस होती थी, किंतु सामने दिखाई देने वाले मनोहारी दृश्य उस असुविधा को पल भर में भुला देते थे। बर्फ के बीच टहलना, हिमाच्छादित चोटियों को निहारना और प्रकृति की उस अलौकिक सुंदरता को अपनी आँखों में समेट लेना जीवन का एक दुर्लभ अनुभव था। ऐसा प्रतीत होता था मानो प्रकृति ने अपनी समस्त कलात्मकता इसी स्थान पर उँडेल दी हो। जीरो प्वाइंट का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इसके आगे सामान्य नागरिकों के लिए सड़क समाप्त हो जाती है और आगे का क्षेत्र भारत-चीन सीमा की ओर जाता है। यहाँ खड़े होकर हिमालय की भव्यता का अनुभव करना शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। तेज़, बर्फीली हवाएँ चेहरे को छूती थीं, लेकिन मन में जो उत्साह और आनंद था, उसके सामने ठंड का कोई महत्व नहीं रह जाता था। सिक्किम की इस यात्रा की अनेक स्मृतियों में जीरो प्वाइंट का अनुपम सौंदर्य आज भी मेरे मन में उसी ताजगी के साथ अंकित है।

सिक्किम की संस्कृति भी उतनी ही आकर्षक है जितनी उसकी प्राकृतिक छटा। यहाँ के बौद्ध मठ, रंग-बिरंगे प्रार्थना ध्वज, शांत वातावरण और लोगों का सरल एवं विनम्र व्यवहार मन को गहराई से प्रभावित करता है। स्थानीय लोगों की ईमानदारी, स्वच्छता के प्रति जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता वास्तव में अनुकरणीय है। प्लास्टिक के सीमित उपयोग और स्वच्छ परिवेश को बनाए रखने के उनके प्रयास यह संदेश देते हैं कि विकास और पर्यावरण संरक्षण साथ-साथ चल सकते हैं।

स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भी इस यात्रा का एक विशेष अनुभव रहा। पारंपरिक भोजन, पहाड़ी मसालों की सुगंध और स्थानीय संस्कृति की झलक प्रत्येक व्यंजन में अनुभव की जा सकती थी। वहाँ की आत्मीय मेहमाननवाज़ी ने इस यात्रा को और भी सुखद बना दिया।

सिक्किम से लौटते समय मेरे साथ केवल सुंदर तस्वीरें ही नहीं थीं, बल्कि अनगिनत मधुर स्मृतियाँ, प्रकृति के प्रति नया सम्मान और पर्यावरण संरक्षण का एक गहरा संदेश भी था। इस यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि जीवन की वास्तविक खुशियाँ प्रकृति के निकट, सादगी में और संतुलित जीवनशैली में छिपी होती हैं।

आज भी जब मैं उन हिमाच्छादित पर्वतों, शांत झीलों, हरी-भरी वादियों और मुस्कुराते लोगों को याद करती हूँ, तो मन पुनः उसी यात्रा पर लौट जाना चाहता है। मेरी सिक्किम यात्रा मेरे जीवन की उन अमूल्य स्मृतियों में से एक है, जिन्हें समय कभी धूमिल नहीं कर सकता।

''सिक्किम केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत संगम है। वहाँ की यात्रा जीवन को नई ऊर्जा, नई प्रेरणा और अनमोल स्मृतियों से भर देती है।''

देखो समझो बात हमारी
हिंदी भाषा है सबसे प्यारी

डिजिटल डिटॉक्स : तकनीक की जीत, रिश्तों की खामोश हार

देवेश शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

थोड़ा ठहरो तो सही, रास्ते भी सांस लेंगे।

भागते पलों में कहीं, हम खुद को ही ना भूल जाएं।

21वीं सदी का मनुष्य तकनीक से घिरा हुआ मनुष्य है। जीवन पहले से तेज हुआ है। काम पहले से आसान हुआ है। दुनिया पहले से छोटीा हर हाथ में है। अवसर हर दिशा में हैं। डिजिटल क्रांति ने हमारे समय को गति दी है और जीवन को सुविधा दी है। लेकिन इस चमकदार बदलाव के साथ एक अनकही थकान भी बढ़ी है। मन की थकान। रिश्तों की दूरी। भीतर की बेचैनी।

आज स्क्रीन केवल एक उपकरण नहीं रही। वह जीवन की लय बन गई है। सुबह उठते ही मोबाइल। रात सोने से पहले मोबाइल। बीच का समय भी नोटिफिकेशन के शोर में बीतता है। हर संदेश तुरंत देखना है। हर खबर तुरंत जाननी है। हर प्रतिक्रिया तुरंत देनी है। यह लगातार सक्रिय रहने का दबाव मनुष्य को भीतर से थका रहा है।

डिजिटल एंजायटी की बढ़ती परछाई

इसी थकान ने एक नए शब्द को जन्म दिया है- डिजिटल एंजायटी। यह वह स्थिति है जब व्यक्ति स्क्रीन से दूर होते ही असहज महसूस करता है। जब ऑनलाइन उपस्थिति सामाजिक पहचान का हिस्सा बन जाती है। जब तुलना और प्रतिक्रिया की संस्कृति आत्मविश्वास को प्रभावित करने लगती है।

दुनियाभर के आंकड़े इस बदलते व्यवहार की पुष्टि करते हैं। वैश्विक स्तर पर सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की संख्या पाँच अरब के करीब पहुंच चुकी है। भारत में भी लगभग 45 से 50 करोड़ लोग डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़े हैं। औसतन एक भारतीय प्रतिदिन ढाई से तीन घंटे स्क्रीन पर बिताता है। युवाओं में यह समय चार से पाँच घंटे तक भी देखा गया है।

यह समय केवल मनोरंजन या संवाद में नहीं जाता। यह मानसिक ऊर्जा का भी उपभोग करता है। मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि लगातार डिजिटल व्यवधान, सूचनाओं की अधिकता और तुलना की संस्कृति से चिंता, अवसाद और ध्यान की कमी जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। फोमो (फियर ऑफ मिसिंग आउट) आज के डिजिटल जीवन का सामान्य अनुभव बन चुका है।

रिश्तों पर डिजिटल असर

सामाजिक स्तर पर भी इसका असर दिखता है। परिवार एक ही छत के नीचे रहते हुए भी अलग-अलग स्क्रीन में बंट गए हैं। संवाद की जगह इमोजी ने ले ली है और हंसी की जगह स्क्रोलिंग ने। कई अध्ययन बताते हैं कि लंबे समय का सामाजिक अलगाव शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए खतरा बन सकता है।

कोविड-19 महामारी ने इस प्रवृत्ति को और तेज किया है। लॉकडाउन के दौरान काम, पढ़ाई और मनोरंजन सब डिजिटल माध्यमों पर निर्भर हो गए। यह समय की जरूरत थी, लेकिन धीरे-धीरे आदत में बदल गया। डिजिटल उपकरण सुविधा के साथ-साथ निर्भरता भी बन गए।

डिजिटल डिटॉक्स क्यों जरूरी

यहीं से डिजिटल डिटॉक्स की अवधारणा ने जोर पकड़ा। डिजिटल डिटॉक्स का अर्थ तकनीक से दूरी बनाना नहीं है। इसका अर्थ है तकनीक के साथ संतुलन बनाना। स्वेच्छा से कुछ समय के लिए स्क्रीन से अलग होकर मन और शरीर को विश्राम देना। यह एक तरह का मानसिक उपवास है।

डिजिटल डिटॉक्स के वैज्ञानिक लाभ भी सामने आने लगे हैं। सबसे पहले असर नींद पर पड़ता है। स्क्रीन की नीली रोशनी लाटोनिन हार्मोन के स्राव को प्रभावित करती है। जब

स्क्रीन टाइम घटता है, तो नींद की गुणवत्ता सुधरती है। शरीर का जैविक चक्र संतुलित होता है।

इसके बाद असर ध्यान और एकाग्रता पर दिखता है। लगातार व्यवधानों से मुक्त होकर मस्तिष्क गहराई से सोच पाता है। रचनात्मकता बढ़ती है। कई कॉर्पोरेट अध्ययनों में पाया गया है कि डिजिटल विचलन कम होने पर उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

संतुलन की ओर छोटे कदम

डिजिटल डिटॉक्स का एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव भी है। जब व्यक्ति स्क्रीन से दूरी बनाता है तो वास्तविक संवाद के अवसर बढ़ते हैं। परिवार के साथ समय बिताना सहज होता है। मित्रों से आमने-सामने मुलाकातें होती हैं। सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ती है। इससे भावनात्मक संतुलन मजबूत होता है।

बच्चों और किशोरों के लिए यह अभ्यास और भी जरूरी है। अत्यधिक स्क्रीन टाइम शारीरिक गतिविधि को कम करता है। सामाजिक कौशल के विकास को प्रभावित करता है। बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ बच्चों के लिए स्पष्ट डिजिटल सीमाएं तय करने की सलाह देते हैं। खेल, पढ़ाई और रचनात्मक गतिविधियों में संतुलन आवश्यक माना जाता है।

डिजिटल डिटॉक्स को अपनाने के लिए बड़े बदलाव जरूरी नहीं। छोटे कदम भी प्रभावी हो सकते हैं। भोजन के समय स्क्रीन-मुक्त वातावरण बनाया जा सकता है। सोने से पहल एक घंटा मोबाइल से दूरी रखी जा सकती है। सप्ताह में एक दिन या कुछ घंटे डिजिटल अवकाश रखा जा सकता है।

प्रकृति में समय बिताना, पुस्तक पढ़ना, खेलकूद करना और मित्रों से मिलना - ये सब साधारण लगने वाले उपाय मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा सकारात्मक असर डालते हैं। धीरे-धीरे व्यक्ति डिजिटल निर्भरता से मुक्त होकर संतुलित जीवन की ओर बढ़ सकता है।

नीतिगत स्तर पर भी इस विषय पर ध्यान देने की जरूरत है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, डिजिटल व्यवहार पर जागरूकता और संतुलित तकनीकी उपयोग को बढ़ावा देना समय की मांग है। तकनीकी कंपनियों को भी उपयोगकर्ता के स्वस्थ अनुभव को प्राथमिकता देनी चाहिए।

डिजिटल डिटॉक्स का उद्देश्य विकास से दूरी बनाना नहीं है। उद्देश्य यह है कि तकनीक मनुष्य के जीवन को नियंत्रित करने के बजाय सहयोग करे। संतुलन ही आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा कौशल बनता जा रहा है।

व्यक्ति यदि आत्मनियंत्रण का अभ्यास करे तो डिजिटल युग में भी सुकून संभव है। जीवन का असली आनंद केवल स्क्रीन पर नहीं मिलता। वह रिश्तों की गर्माहट में है। संवाद की सादगी में है। उस सन्नाटे में भी है जहाँ मन स्वयं से मिल पाता है।

ज़रा ठहर कर चलो, तो मंज़िलें भी मुस्कुराएँगी,

जो खो गया है खुद में, वही दुनिया को पाएगा।

डिजिटल युग में यही ठहराव शायद सबसे बड़ी प्रगति है।

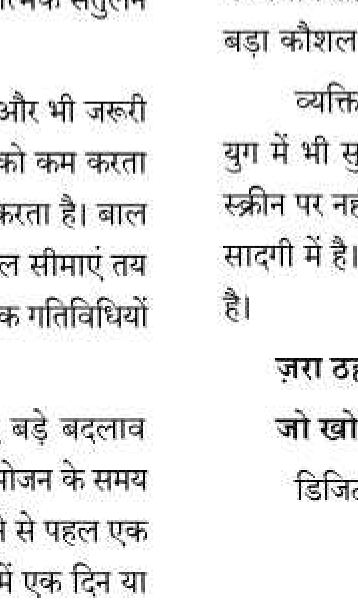

आइए, आपको राजस्थान की ऐतिहासिक सैर पर ले चलते हैं

भावना सैन, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

पधारो म्हारे देस-यह केवल एक स्वागत वाक्य नहीं, बल्कि राजस्थान की आत्मा है।

कल्पना कीजिए कि आप सुबह-सुबह एक लंबी यात्रा पर निकल रहे हैं। सामने खुली सड़क है, दूर तक फैली अरावली की पहाड़ियाँ हैं, कहीं सुनहरे रेगिस्तान की रेत चमक रही है तो कहीं प्राचीन किलों की ऊँची-ऊँची प्राचीरें आसमान से बातें करती दिखाई देती हैं। ऐसा लगता है मानो इतिहास स्वयं हमारे साथ चल रहा हो और हर मोड़ पर कोई नई कहानी हमारा इंतज़ार कर रही हो।

तो आइए, मेरे साथ चलिए राजस्थान की उस यात्रा पर, जहाँ हर शहर अपने भीतर सदियों पुराना इतिहास, शौर्य, कला और संस्कृति समेटे हुए है।

पहला पड़ाव – गुलाबी नगरी जयपुर

हमारी राजस्थान यात्रा की शुरुआत होती है राजधानी जयपुर से। जैसे ही हम इस खूबसूरत शहर में प्रवेश करते हैं, गुलाबी रंग की इमारतें, चौड़ी सड़कें, बड़े-बड़े दरवाज़े और चहल-पहल से भरे बाजार हमारा स्वागत करते हैं। यही खूबसूरती जयपुर को पूरी दुनिया में पिंक सिटी के नाम से पहचान दिलाती है। यहाँ पुराने समय की परंपराएँ और आधुनिक जीवन एक साथ दिखाई देते हैं। शहर की हर गली और हर इमारत अपने अंदर इतिहास की कोई न कोई कहानी छुपाए बैठी है।

सबसे पहले हम पहुँचते हैं आमेर किले में। अरावली की पहाड़ियों पर बना यह विशाल किला दूर से ही बहुत भव्य दिखाई देता है, जैसे किसी राजा का शानदार मुकुट हो। जैसे-जैसे हम इसकी सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, ऐसा लगता है जैसे हम आज के समय से निकलकर कई सौ साल पुराने दौर में पहुँच गए हों। किले के अंदर जाते ही राजाओं के समय की शान और सुंदरता साफ दिखाई देने लगती है। यहाँ का प्रसिद्ध शीश महल अपनी खूबसूरती के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। कहा जाता है कि पहले के समय में एक दीपक की रोशनी से ही पूरा महल हजारों तारों की तरह चमक उठता था। किले के बड़े-बड़े आँगन, सुंदर नक्काशी, राजसी कमरे और मजबूत दीवारें उस समय के राजाओं की कला, वैभव और शानदार सोच को दिखाती हैं।

इसके बाद हम पहुँचते हैं जयपुर के प्रसिद्ध हवा महल में। गुलाबी पत्थरों से बना यह पाँच मंज़िला महल अपनी 953 खिड़कियों के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। इन छोटी-छोटी खिड़कियों से राजघराने की महिलाएँ बिना किसी की नज़र में आए शहर के त्योहारों, जुलूसों और खास मौकों को देखा करती थीं। इन झरोखों की खास बनावट के कारण महल के अंदर हवा का अच्छा प्रवाह बना रहता था, जिससे गर्मी के मौसम में भी यहाँ ठंडक महसूस होती थी। यह उस समय के लोगों की शानदार वास्तुकला और समझदारी का बेहतरीन उदाहरण है।

जयपुर की यात्रा जंतर-मंतर देखे बिना पूरी नहीं मानी जाती। यहाँ बने बड़े-बड़े खगोलीय यंत्र बताते हैं कि सदियों पहले भी भारत के वैज्ञानिकों और खगोलविदों को आकाश, ग्रहों और तारों के बारे में बहुत गहरा ज्ञान था। इन यंत्रों की मदद से समय और ग्रहों की स्थिति की गणना की जाती थी।

आमेर किले की शाही भव्यता, हवा महल की अनोखी सुंदरता और जंतर-मंतर की वैज्ञानिक सोच मिलकर जयपुर को एक खास पहचान देते हैं। जयपुर सिर्फ राजस्थान की राजधानी नहीं, बल्कि इतिहास, कला, संस्कृति और विज्ञान का ऐसा संगम है, जहाँ हर कदम पर हमें अपने गौरवशाली अतीत की झलक दिखाई देती है।

दूसरा पड़ाव – चित्तौड़गढ़, जहाँ स्वाभिमान आज भी जीवित है

अब हमारी यात्रा पहुँचती है राजस्थान के सबसे प्रसिद्ध और गौरवशाली स्थलों में से एक-चित्तौड़गढ़ दुर्ग। जैसे ही हम इसके विशाल प्रवेश द्वार से अंदर कदम रखते हैं, एक अलग ही एहसास होने लगता है। ऐसा लगता है जैसे इस किले की दीवारों में आज भी वीर योद्धाओं की तलवारों की आवाज़ और पुराने समय की वीरता की कहानियाँ छुपी हुई हैं। करीब सात सौ एकड़ में फैला यह विशाल

किला सिर्फ पत्थरों से बनी एक इमारत नहीं है, बल्कि मेवाड़ के गौरव, साहस और बलिदान की पहचान है।

चित्तौड़गढ़ का इतिहास वीरता और संघर्ष की कई कहानियों से भरा हुआ है। रानी पद्मिनी की कथा, जौहर की परंपरा और मेवाड़ के वीर योद्धाओं के बलिदान ने इस दुर्ग को इतिहास में एक खास स्थान दिया है। यहाँ की हर दीवार, हर महल और हर मंदिर ऐसा लगता है जैसे वह बीते समय की कोई कहानी सुना रहा हो। यह वही भूमि है जहाँ लोगों ने अपने सम्मान और मातृभूमि की रक्षा के लिए बड़े-बड़े त्याग किए।

किले के अंदर स्थित विजय स्तंभ इसकी सबसे खास पहचान है। अपनी शानदार बनावट और ऐतिहासिक महत्व के कारण यह पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यह केवल किसी जीत की याद में बनाया गया स्मारक नहीं है, बल्कि साहस, आत्मसम्मान और हिम्मत का प्रतीक भी है। जब हम इसकी ऊँचाई से पूरे चित्तौड़गढ़ को देखते हैं, तो ऐसा महसूस होता है जैसे इतिहास आज भी हमारे सामने जीवित हो।

चित्तौड़गढ़ की यात्रा हमें यह सीख देती है कि साहस, सम्मान और अपने मूल्यों के लिए किया गया त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाता। यही कारण है कि यह दुर्ग आज भी हर आने वाले व्यक्ति के मन में गर्व और प्रेरणा की भावना पैदा करता है।

तीसरा पड़ाव – कुंभलगढ़, जहाँ दीवारें भी इतिहास सुनाती हैं

अब हमारी यात्रा अरावली की ऊँची-ऊँची पहाड़ियों की ओर बढ़ती है और हम पहुँचते हैं शानदार कुंभलगढ़ दुर्ग में। हरे-भरे जंगलों और ऊँचे पहाड़ों के बीच बना यह किला अपनी मजबूती और खूबसूरत बनावट के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है। दूर से ही इसकी विशाल दीवारें और ऊँची प्राचीरें इसकी भव्यता का एहसास करा देती हैं। इस किले की सबसे बड़ी खासियत इसकी लगभग 36 किलोमीटर लंबी दीवार है, जो दुनिया की सबसे लंबी किलेबंदी वाली दीवारों में गिनी जाती है। पहाड़ों के बीच दूर तक फैली यह दीवार आज भी ऐसा लगता है जैसे राजस्थान की पुरानी विरासत की रक्षा करने वाला एक मजबूत प्रहरी हो। कुंभलगढ़ की एक और खास बात यह है कि यही वह स्थान है जहाँ मेवाड़ के महान योद्धा महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था। किले की ऊँची दीवारों पर खड़े होकर जब हम चारों ओर फैली अरावली की पहाड़ियों, घने जंगलों और सुंदर घाटियों को देखते हैं, तो आसानी से समझ सकते हैं कि पुराने समय में यह दुर्ग दुश्मनों के लिए जीतना इतना मुश्किल क्यों था। पहाड़ों के बीच इसकी स्थिति और मजबूत सुरक्षा व्यवस्था इसे एक बेहद सुरक्षित किला बनाती थी। कुंभलगढ़ सिर्फ एक ऐतिहासिक किला नहीं है, बल्कि यह मेवाड़ की वीरता, साहस और शानदार स्थापत्य कला की पहचान है। यहाँ आकर ऐसा महसूस होता है जैसे हम इतिहास के उस दौर में पहुँच गए हों, जहाँ हर पत्थर अपने अंदर वीरता और गौरव की कहानी समेटे हुए है।

चौथा पड़ाव – हल्दीघाटी, जहाँ वीरता अमर हो गई

अब हम पहुँचते हैं हल्दीघाटी, जिसकी मिट्टी का रंग हल्दी जैसा पीला दिखाई देता है। अरावली की पहाड़ियों के बीच बसा यह स्थान केवल अपनी खूबसूरती के लिए ही नहीं, बल्कि वीरता और साहस की यादों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहीं सन् 1576 में महाराणा प्रताप और मुगल सेना के बीच ऐतिहासिक हल्दीघाटी का युद्ध हुआ था। यह युद्ध केवल दो सेनाओं के बीच की लड़ाई नहीं थी, बल्कि मेवाड़ के सम्मान, स्वाभिमान और अपनी स्वतंत्र पहचान को बनाए रखने के संघर्ष के रूप में भी याद किया जाता है।

हल्दीघाटी की धरती पर पहुँचते ही ऐसा महसूस होता है जैसे इतिहास आज भी यहाँ की हवाओं में मौजूद हो। यहाँ की हर जगह उस समय की वीरता और संघर्ष की कहानी सुनाती हुई लगती है। यहाँ स्थित चेतक स्मारक हर आने वाले व्यक्ति को भावुक कर देता है। महाराणा प्रताप के प्रिय घोड़े चेतक ने अपने स्वामी की रक्षा के लिए जिस वफादारी, साहस और निष्ठा का परिचय दिया, वह आज भी लोगों के दिलों मं बसी हुई है।कहा जाता है कि युद्ध के दौरान घायल होने के बाद भी चेतक ने महाराणा प्रताप को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया और अपनी जान कुर्बान कर दी। उसकी स्वामिभक्ति और साहस की कहानी आज भी हमें कर्तव्य, विश्वास और त्याग का महत्व समझाती है। हल्दीघाटी की यह ऐतिहासिक भूमि हमें याद दिलाती है कि वीरता और आत्मसम्मान की कहानियाँ समय बीतने के बाद भी हमेशा लोगों को प्रेरणा देती रहती हैं।

पाँचवाँ पड़ाव – स्वर्ण नगरी जैसलमेर

अब हमारी यात्रा थार के विशाल रेगिस्तान की ओर बढ़ती है। दूर-दूर तक फैली सुनहरी रेत के बीच अचानक हमें एक शानदार स्वर्णिम किला दिखाई देता है-जैसलमेर का सोनार किला। पीले बलुआ पत्थर से बना यह किला सूरज की

पहली किरण पड़ते ही सोने की तरह चमकने लगता है। इसी वजह से इसे सोनार किला या स्वर्ण किला कहा जाता है। लगभग नौ सौ साल पुराना यह किला आज भी पूरी तरह जीवंत है। इसकी दीवारों के अंदर आज भी लोग रहते हैं, मंदिरों में पूजा होती है और पुराने समय के बाजार अपनी रौनक के साथ दिखाई देते हैं। जैसे ही हम किले की सँकरी और घुमावदार गलियों में घूमना शुरू करते हैं, ऐसा लगता है जैसे हम कई सौ साल पीछे चले गए हों। गलियों के दोनों ओर लगी रंग-बिरंगी दुकानों में राजस्थानी कपड़े, सुंदर हस्तशिल्प की चीजें, चमड़े की कलाकृतियाँ, चाँदी के गहने और स्थानीय कलाकारों की बनाई हुई कई अनोखी वस्तुएँ देखने को मिलती हैं। यहाँ का माहौल राजस्थान की लोक संस्कृति की खूबसूरत झलक दिखाता है। गलियों में सुनाई देता लोकसंगीत, ऊँटों की घंटियों की आवाज़ और मसालों की खुशबू इस जगह को और भी खास बना देती है।

जैसलमेर की प्रसिद्ध पटवों की हवेली भी अपनी खूबसूरत कारीगरी के लिए जानी जाती है। पीले पत्थर पर की गई बारीक नक्काशी, सुंदर झरोखे, कलात्मक बालकनियाँ और जालियों का काम देखकर हैरानी होती है कि इतनी शानदार कला उस समय बिना किसी आधुनिक मशीन के केवल हाथों से बनाई गई होगी। हवेली का हर हिस्सा पुराने समय के कारीगरों की मेहनत, हुनर और रचनात्मकता की कहानी कहता है।

जैसलमेर की यह स्वर्णिम विरासत हमें बताती है कि राजस्थान का इतिहास सिर्फ युद्धों और वीर योद्धाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यहाँ कला, व्यापार, वास्तुकला और संस्कृति की भी एक बेहद समृद्ध परंपरा रही है। यही खासियत जैसलमेर को राजस्थान की सबसे अनोखी और यादगार जगहों में से एक बनाती है।

यात्रा का समापन

हमारी यह ऐतिहासिक यात्रा यहीं समाप्त होती है, लेकिन राजस्थान की कहानियाँ कभी खत्म नहीं होतीं। यहाँ का हर किला, हर महल, हर मंदिर और हर बावड़ी अपने अंदर इतिहास की कोई न कोई अनमोल कहानी छुपाए हुए है। ये धरोहरें हमें याद दिलाती हैं कि किसी भी देश की सबसे बड़ी पहचान उसकी संस्कृति, परंपराएँ और गौरवशाली इतिहास होते हैं।

राजस्थान केवल घूमने की जगह नहीं है, बल्कि यह वीरता, स्वाभिमान, त्याग, कला और परंपराओं की एक जीवंत कहानी है। यहाँ की यात्रा हमें सिर्फ खूबसूरत नज़ारे नहीं दिखाती, बल्कि हमें अपने पुराने समय, अपने पूर्वजों की सोच और अपनी समृद्ध विरासत से जुड़ने का मौका भी देती है। यहाँ की हवाओं में वीरों की गाथाएँ हैं, किलों की दीवारों में इतिहास की यादें हैं और लोक संस्कृति में सदियों पुरानी परंपराओं की झलक दिखाई देती है। राजस्थान की यात्रा करने वाला हर व्यक्ति अपने साथ केवल यादें ही नहीं, बल्कि इस गौरवशाली भूमि की एक खास अनुभूति भी लेकर जाता है।

तो अगली बार जब कोई आपसे पूछे कि इतिहास कहाँ आज भी जीवित है, तो मुस्कुराकर कहिए- ''आइए, आपको राजस्थान की सैर कराते हैं।''

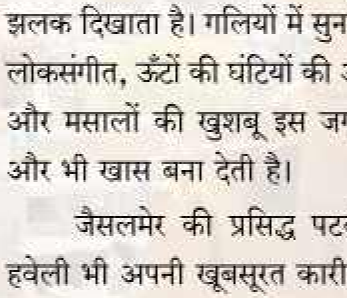
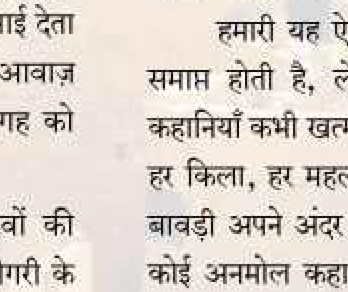
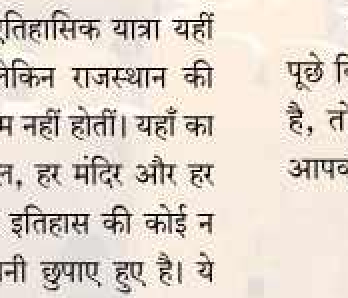
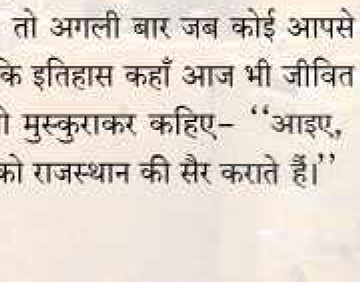

सामान्य कार्यालयीन टिप्पणियाँ (अंग्रेजी-हिन्दी)

Common Office Notings (English-Hindi)

अंग्रेजी टिप्पणी / **English Noting**	हिन्दी समतुल्य / **Hindi Equivalent**
Above mentioned	उपर्युक्त/ऊपर कहा गया
Action as at 'A' above	ऊपर 'A' के अनुसार कार्यवाही की जाए।
Action is required to be taken early	कार्यवाही शीघ्र अपेक्षित है।
Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्यवाही की जाए।
Action as proposed may be taken	यथाप्रस्तावित कार्यवाही की जाए।
The appeal has been rejected	अपील खारिज कर दी गई है।
The appeal is time-barred	अपील समय-सीमा से बाहर है।
A matter of extreme urgency	अत्यंत आवश्यक मामला।
Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान किया जाए।
Approved as proposed	यथाप्रस्तावित अनुमोदित।
As laid down in the rules	जैसाकि नियमों में निर्धारित है।
Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा कीजिए
Bring to notice	ध्यान में लाना।
Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है।
Copy enclosed for ready reference	सुलभ संदर्भ हेतु प्रति संलग्न है।
Case is put up for orders	मामला आदेशार्थ प्रस्तुत है।
Discuss with papers	संबंधित कागजात सहित विचार करें।
Do the needful	आवश्यक कार्यवाही करें।
Duly sanctioned	विधि वत्स्वीकृत।
Draft as amended is put up	संशोधित मसौदा प्रस्तुत है।
Draw attention	ध्यान आकर्षित करना।
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
For approval	अनुमोदनार्थ।
For necessary action	आवश्यक कार्यवाही हेतु।
Facts of the case in brief are as follows	संक्षेप में मामले के तथ्य इस प्रकार हैं।

अंग्रेजी टिप्पणी / **English Noting**	हिन्दी समतुल्य / **Hindi Equivalent**
Give top priority to this work	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।
In exercise of	का प्रयोग करते हुए
Kindly acknowledge	कृपया पावती भेजिए
Matter has been examined	मामले की जांच कर ली गई है।
Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है।
May be sanctioned	स्वीकृत किया जा सकता है।
May be treated as urgent	इसे अत्यावश्यक माना जाए।
May please furnish the requisite information	कृपया अपेक्षित सूचना दें ।
Necessary report is still awaited	अपेक्षित रिपोर्ट अभी भी प्रतीक्षित।
Please examine and put up	कृपया परीक्षण करके प्रस्तुत करें।
Please see preceding notes	कृपया पिछली टिप्पणियाँ देखें ।
Please inform accordingly	कृपया तदनुसार सूचित किया जाए ।
Refer the matter to the Boardfor order	मामला बोर्ड को आदेश के लिए भेजा जाए।
Sanction of the competent authority may be obtained	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी ली जाए ।
Self explanatory	स्वतः स्पष्ट।
This may please be approved	कृपया इसे अनुमोदित किया जाए।

चित्रकारी

श्री नीरज दुबे
आयुक्त (in-situ)
सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु.-जयपुर

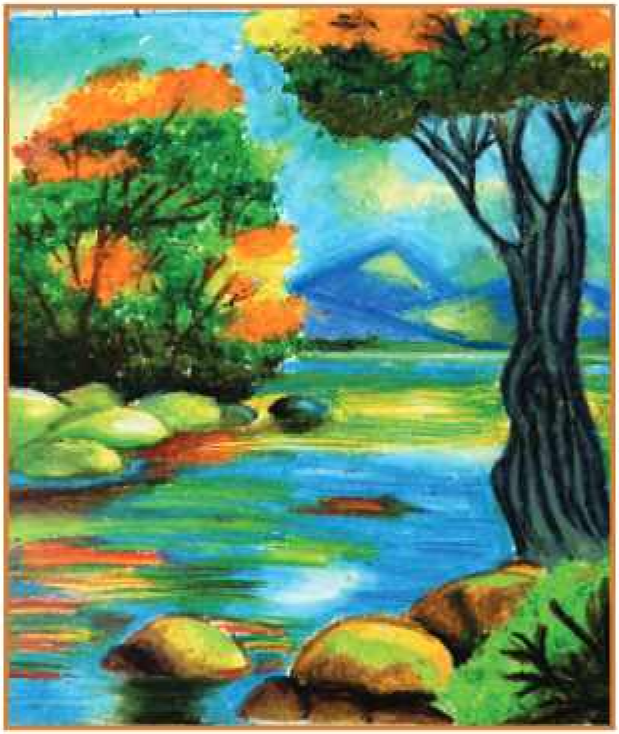

सुश्री चैतन्या देवल
पुत्री श्री दिनेश सिंह देवल
अपर आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
जयपुर

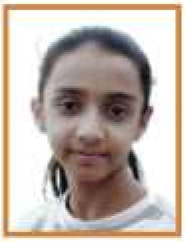

सुश्री अविका जैन
पुत्री श्री मनोज जैन
निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर
आयुक्तालय, उदयपुर

श्रीमती चारू सक्सेना
पत्नी श्री प्रकाश सक्सेना
अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर,
जयपुर-ज़ोन, जयपुर

सुश्री जिनाया जैन
पुत्री श्री मनोज जैन
निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर
आयुक्तालय, उदयपुर

सुश्री अन्विका
सुश्री शशि बाला पूनिया,
अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर
जयपुर-ज़ोन, जयपुर

उभरती प्रतिभा

निशानेबाज़ी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ :

सीपिका सक्सेना पुत्री श्री प्रकाश सक्सेना, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर

सीपिका सक्सेना ने निशानेबाज़ी के क्षेत्र में निरंतर अभ्यास, अनुशासन और समर्पण के बल पर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। कम आयु में विभिन्न आयु वर्गों में उनके निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन ने उन्हें एक उभरती हुई प्रतिभा के रूप में स्थापित किया है।

वर्ष 2022 में आयोजित 21वीं राजस्थान राज्य ओपन शूटिंग चैंपियनशिप में उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए यूथ वर्ग में स्वर्ण पदक, जूनियर वर्ग में रजत पदक तथा सीनियर वर्ग में रजत पदक प्राप्त किए। इसी वर्ष चतुर्थ महावीर टॉप शॉट शूटिंग चैंपियनशिप में उन्होंने स्वर्ण पदक के साथ 'चैम्पियन ऑफ चैम्पियंस' का खिताब भी जीता।

वर्ष 2024 में आयोजित सातवीं एकलव्य स्पोर्ट्स शूटिंग चैंपियनशिप में उन्होंने पुनः स्वर्ण पदक एवं 'चैम्पियन ऑफ चैम्पियंस' का सम्मान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 67वीं एसजीएफआई जिला स्तरीय राइफल शूटिंग प्रतियोगिता में अंडर-19 वर्ग का स्वर्ण पदक तथा सीबीएसई वेस्ट ज़ोन शूटिंग चैंपियनशिप में रजत पदक अर्जित किया। खेल क्षेत्र में उनके प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें 'यूथ एक्सीलेंस अवार्ड-2024' से भी सम्मानित किया गया।

वर्ष 2026 में उन्होंने खेलो मध्यप्रदेश यूथ गेम्स की व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया। इसके पश्चात प्रथम स्टार शूटिंग लीग में स्वर्ण पदक जीतते हुए पुनः 'चैम्पियन ऑफ चैम्पियंस' का खिताब अपने नाम किया। इसी वर्ष आयोजित 29वीं मध्यप्रदेश राज्य शूटिंग चैंपियनशिप में उन्होंने 50 मीटर राइफल प्रोन महिला टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक, 50 मीटर राइफल थ्री पोज़िशन महिला व्यक्तिगत स्पर्धा तथा जूनियर महिला व्यक्तिगत स्पर्धा में कांस्य पदक अर्जित किए।

सीपिका की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि नियमित अभ्यास, धैर्य और लक्ष्य के प्रति समर्पण से उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। आशा है कि वे भविष्य में भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए देश का गौरव बढ़ाती रहेंगी। केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर विभाग, जयपुर इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

विभागीय प्रतिभा

जगदीश तँवर

अधीक्षक

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर व सीमा शुल्क विभाग, जयपुर (राजस्थान)

अंतरराष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी एवं भारतीय टीम कप्तान

प्रमुख सम्मान एवं पुरस्कार

- महाराणा प्रताप अवार्ड: (राजस्थान का सर्वोच्च खेल सम्मान) राज्य पुरस्कार: (विशिष्ट प्रशंसनीय सेवा हेतु)
- रोम, इटली 2026 में सीनियर विश्व टेनिस प्रतियोगिता (50+) भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व कप्तान के रूप में किया।
- अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियाँ (2017 – 2026)(45+ एवं 50+ आयु वर्ग में विश्व सीनियर टेनिस प्रतियोगिताओं में भारतीय टीम के कप्तान) मेक्सिको - 2024
- रजत पदक (टीम स्पर्धा): विश्व स्तर पर भारत का पहला ऐतिहासिक टीम पदक।
- कांस्य पदक: पुरुष युगल (Doubles)
- अमेरिका 2019 : रजत पदक
- क्रोशिया 2021: कांस्य पदक
- ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज प्रतियोगिता गांधीनगर, गुजरात (2025)
- स्वर्ण पदक: 45+ युगल स्पर्धा
- रजत पदक: मेन्स ओपन (Men's Open)
- अखिल भारतीय सिविल सेवा प्रतियोगिताएँ (1995 – 2025): टीम स्पर्धा: 14 स्वर्ण, 2 रजत एवं 3 कांस्य पदक। एकल एवं युगल (Single & Doubles): लगभग 45 स्वर्ण एवं रजत पदक।

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 31 वें अंक का विमोचन

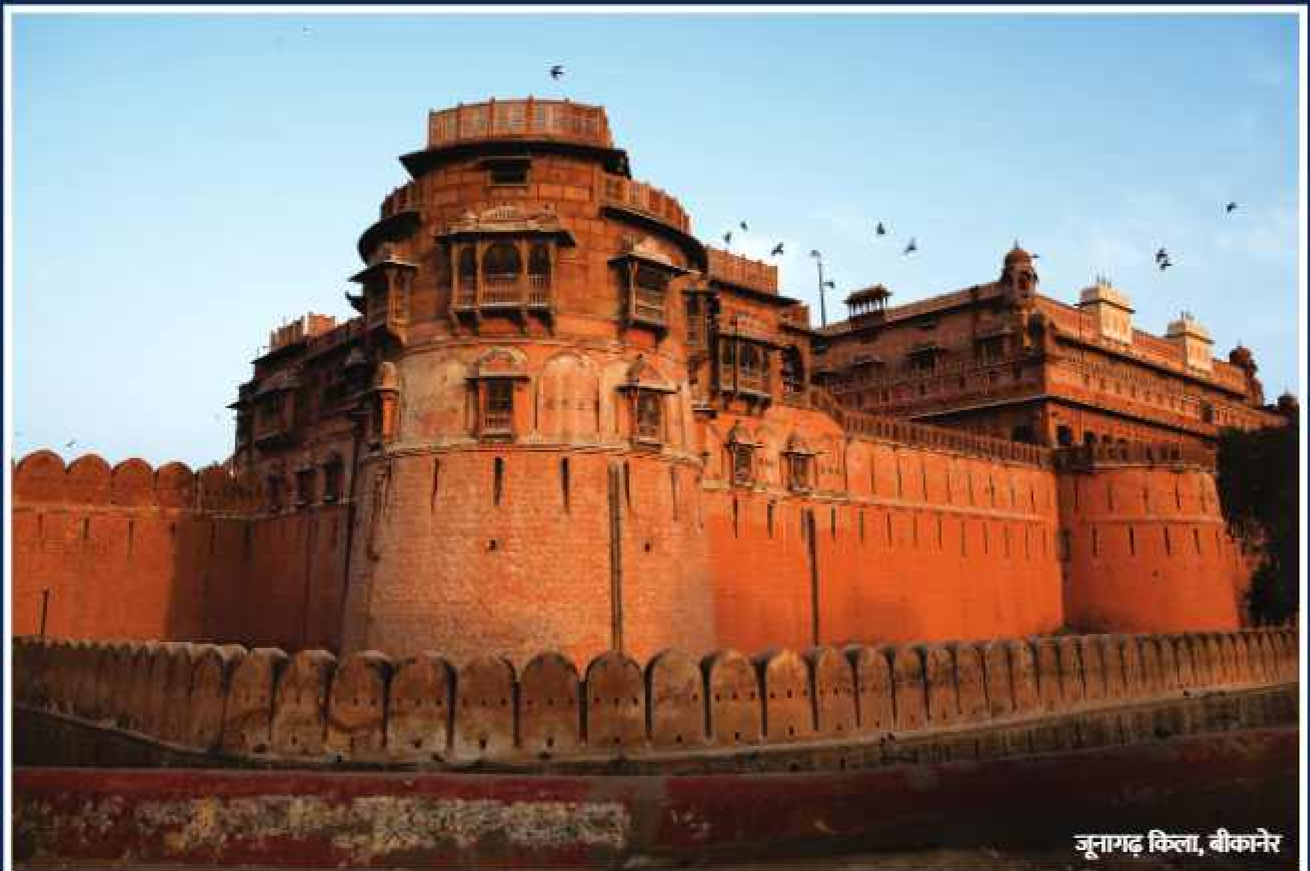

जूनागढ़ किला, बीकानेर

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर